श्रीनवद्वीपधाम परिक्रमा
एवं
श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख
गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह
শ্রীধাম নবদ্বীপ পরিক্রমা
শ্রীগৌড়ীয় বেদান্ত সমিতি (নবদ্বীপ)
श्रीगौडीय वेदान्त समिति

श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा
एवं
श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति एवं तदन्तर्गत भारतव्यापी
श्रीगौड़ीय मठोंके प्रतिष्ठाता, श्रीकृष्णचैतन्याम्नाय
दशमाधस्तनवर श्रीगौड़ीयाचार्य केशरी
ॐविष्णुपाद १०८
श्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामीचरणके
अनुगृहीत
त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण महाराज
द्वारा लिखित एवं संपादित

सर्वाधिकार सुरक्षित

JAYASRI DAMODAR GOUDIYA MATHA
C.T. Road, Puri-752002, ORISSA, INDIA
PH: (06752) 229695 / 97
FAX - (06752) 227317

प्रकाशक

श्रीमान् अनंगमोहन ब्रह्मचारी
श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा ।

प्रथम संस्करण

श्रीगौर-आविर्भाव तिथि (गौरपूर्णिमा), श्रीगौराब्द ५०६,
१८ मार्च, १६६२, (सम्वत् २०४८)

प्राप्ति स्थान

(१) श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा (उ० प्र०)
(२) श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, नवद्वीप नदीया (पं० बंगाल)
(३) श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ चुँचुड़ा, हुगली (पं० बंगाल)
(४) श्रीरूप-सनातन गौड़ीय मठ, वृन्दावन, मथुरा (उ० प्र०)
(५) श्रीविनोद बिहारी गौड़ीय मठ, २८ हलदार बागानलेन, कलकत्ता-४
(६) श्रीनीलाचल गौड़ीय मठ, स्वर्गद्वार, पुरी (उड़ीसा)
(७) श्रीकेशव गोस्वामी गौड़ीय मठ, शिलीगुड़ी, दार्जिलिंग, (पं० बंगाल)
(८) श्रीमेघालय गौड़ीय मठ, तुरा (मेघालय)
(६) श्रीगोलोक गंज गौड़ीय मठ, गोलोक गंज, ग्वालपाड़ा (आसाम)
(१०) श्रीभक्ति वेदान्त गौड़ीय मठ, संन्यास रोड, हरिद्वार

मुद्रक

लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा

प्रस्तावना

ब्रजेन्द्रनन्दन श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण परमतत्त्वकी शेष सीमा हैं । वे सर्वकारणकारण, सबके आदि, स्वयं अनादि, सच्चिदानन्द-विग्रह, स्वयं-भगवान् हैं । वे सर्वशक्तिमान, परमकरुण, रस-स्वरूप एवं रसिक भी हैं । माधुर्यलील श्रीकृष्ण ही प्रेम प्रदानात्मक औदार्य लीलामें श्रीगौरसुन्दर हैं । इसलिए श्रीकृष्ण एवं श्रीगौर-सुन्दर अभिन्न तत्त्व हैं। इसीप्रकार श्रीकृष्ण-धाम 'श्रीवृन्दावन' और श्रीगौर-धाम 'श्रीनवद्वीप धाम' भी सब प्रकारसे अभिन्न हैं । श्रीवृन्दावनकी परिधि जिस प्रकार सोलह कोस है, उसी प्रकार नवद्वीप धामकी परिधि भी सोलह कोस है । शास्त्रोंके अनुसार ब्रज-लीलाका परिशिष्ट ही श्रीगौरलीला है।

ब्रजमें श्रीकृष्ण प्रेमरसका स्वयं आस्वादन करते हैं तथा श्रीगौड़-धाममें उसी ब्रजप्रेमका वितरण करते हैं । ब्रजरसका साधक श्रीनवद्वीप धाममें श्रीगौरसुन्दर और उनके प्रिय परिकरोंका आश्रय ग्रहण कर सहज ही ब्रज प्रेममें प्रवेश कर सकता है । इस धाममें अपराध आदिका विचार नहीं है । श्रीनवद्वीप धामका अनन्य रूपमें आश्रय करनेसे ब्रजप्रेमकी सिद्धि होती है । अतएव दोनों धामोंकी महिमा वर्णनातीत है । देवर्षि नारद और श्रीउद्धव आदि परम-प्रेमी महात्मागण भी जिस दुर्लभ ब्रज प्रेमको पानेके लिए लालायित रहते हैं, श्रीगौर-धाम अपने आश्रय करनेवाले साधकोंको उसे सहजही प्रदान कर देते हैं । अतः श्रीनवद्वीप धाम गौर-सुन्दरकी भाँति ही महावदान्य हैं ।

सोलह कोस नवद्वीप धाममें नौ द्वीपें हैं– अन्तर्द्वीप, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, जह्नुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप और रुद्रद्वीप । नवद्वीप धाम नवधा भक्तिका पीठ-स्वरूप है, जिसमें अन्तर्द्वीप--आत्मनिवेदनका, सीमन्तद्वीप--श्रवणका, गोद्रुमद्वीप--कीर्त्तनका,

मध्यद्वीप–स्मरणका, कोलद्वीप–पादसेवनका, ऋतुद्वीप–अर्चनका, जह्नुद्वीप –वन्दनका, मोद्द्रुम–दास्यका और रुद्रद्वीप–सख्य भक्तिका क्षेत्र है। समग्र नवद्वीप धाम श्रीगौरसुन्दर और उसके अन्तरंग पार्षदोंका लीला-केन्द्र है। गौड़मण्डलके विभिन्न स्थानोंमें श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके परिकरोंकी आविर्भाव-स्थलियाँ, साधन-स्थलियाँ एवं लीला-स्थलियाँ है। आज भी कथित स्थानोंमें उनकी लीला-स्मृतियाँ उद्दीप्त हैं।

अद्यापिह सेइ लीला करे गौरराय।
कोन-कोन भाग्यवान् देखिवारे पाय॥

अर्थात् आज भी श्रीगौर-सुन्दर यहाँ पर अपने परिकरोंके साथमें वही लीलाएँ कर रहे हैं, किन्तु कोई-कोई सौभाग्यवान् जीव ही उन लीलाओंका दर्शन करते हैं।

इस औदार्य लीलापीठ श्रीनवद्वीप धामकी परिक्रमा करनेसे जीव कृतार्थ हो जाता है। उस पर भी शुद्धभक्तोंके साथ संकीर्त्तन करते हुए हरिकथाके माध्यमसे परिक्रमा करनेका माहात्म्य अनन्त हैं। जन-साधारणको इसका सुयोग प्रदान करनेके लिए ही आधुनिक युगमें अस्मदीय परम-गुरुदेव ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर श्रील प्रभुपादने श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके लिखित 'नवद्वीप धाम परिक्रमा' की पद्धतिके अनुसार सहस्र यात्रियोंके साथ श्रीनवद्वीप धामकी परिक्रमाका प्रवर्तन किया। उनके पथका अनुसरण करते हुए, जगद्गुरु नित्यलीला प्रविष्ट अष्टोत्त-रशतश्री श्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज 'श्रीगुरुचरण' और तत्पश्चात् उनके आश्रित जन श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके आश्रयमें प्रतिवर्ष परिक्रमा करते आ रहे हैं।

श्रीमन्महाप्रभुकी अप्रकटलीलाके कुछ दिन बाद ही श्रील जीव-गोस्वामी बाल्यकालमें ही संसार त्यागकर नवद्वीप धामके अन्तर्गत श्रीधाम मायापुरमें उपस्थित हुए थे। वहाँ श्रीमन्महाप्रभुके भवनमें श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभुजीका दर्शन किया। श्रीनित्यानन्द प्रभुने उनपर

प्रचुर कृपा की। उनको साथ लेकर १६ कोस नवद्वीप धामकी परिक्रमा कराई तथा उन स्थानों पर श्रीमन्महाप्रभुने कौनसी लीलायें कीं, उसका वर्णन भी किया था। श्रीभक्ति विनोद ठाकुरजीने अपने स्वरचित ग्रन्थ 'श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य' परिक्रमा खण्डमें इसका बड़ा ही मर्मस्पर्शी वर्णन किया है। इसके पश्चात् श्रीमन्महाप्रभुके परिकर श्रीईशान ठाकुरने श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तमठाकुर और श्री रामचन्द्र कविराजको श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा करायी थी। इसका रोचक वर्णन श्रील नरहरि चक्रवर्ती ठाकुरने 'भक्ति-रत्नाकर' नामक ग्रन्थमें किया है। श्रीभक्ति विनोद ठाकुरने अपने ग्रन्थ 'श्रीनवद्वीप भाव तरंग' में भी धाम परिक्रमाका संक्षिप्त किन्तु हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।

यह दीन-हीन तुच्छ सेवक भी पिछले ४५ वर्षोंसे अपने श्रीगुरुपाद पद्म नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामीके साथ एवं उनकी अप्रकट लीलाके पश्चात् उनके द्वारा स्थापित श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके आनुगत्यमें प्रतिवर्ष श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा करनेका सुयोग लाभ करता आ रहा है। उन परिक्रमाओंमें परमाराध्य श्रीश्रील गुरुदेवके श्रीमुखारविन्द से बहुतसी लीला-कथाओं एवं तत्त्वोंको सुननेका अवसर मिला है। जिसका प्रस्तुत ग्रन्थमें समावेश किया है, साथ ही इसे 'श्रीभक्ति रत्नाकर', विशेषतः श्रील भक्ति विनोद ठाकुर द्वारा लिखित 'श्रीन-वद्वीप धाम माहात्म्य' (परिक्रमा खण्ड), और श्रीनवद्वीप भावतरंग' के आधार पर प्रस्तुत किया है।

विश्वमें सर्वत्र ही श्रीचैतन्य महाप्रभुके प्रेमधर्मका व्यापक रूपसे प्रचार-प्रसार हो रहा है। जिससे भारतके विभिन्न प्रदेशों और विदेशोंसे बहुतसे भक्तजन श्रीमन्महाप्रभुकी आविर्भाव स्थली 'श्रीधाम मायापुर', उनकी लीला-स्थलियों नवद्वीप धामके स्थान समूह तथा

श्रीमन्महाप्रभुके परिकरोंकी आविर्भाव एवं लीला-स्थलियोंके दर्शनोंके लिए आते हैं । आशा करता हूँ कि यह ग्रन्थ सभी जिज्ञासु भक्तोंके लिए विशेष सहायक होगा ।

श्रीगौड़ीयसम्प्रदायैक संरक्षक, श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति तथा समितिके अन्तर्गत भारतव्यापी श्रीगौड़ीय मठोंके प्रतिष्ठाता आचार्य मदीय परमाराध्य श्रीगुरुदेव, परमहंस कुलचूड़ामणि ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामीचरणने श्रीमन्महाप्रभु के आचरित एवं प्रचारित प्रेमधर्मका हिन्दी भाषा-भाषियोंमें प्रचार-प्रसार करनेके लिए श्रीमथुराधाममें श्रीकेशवजी गौड़ीय मठकी स्थापना की । उनकी अहैतुकी कृपा एवं प्रेरणासे बंगला भाषाके बहुतसे भक्ति-ग्रन्थोंके हिन्दी-संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और हो रहे हैं । आज उन्हीं श्रीगुरु-पाद-पद्मकी असीम कृपा और प्रेरणासे यह 'श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा एवं श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख-गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह' नामक ग्रन्थ पाठकोंके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अति आनन्दानुभूति हो रही है ।

अन्तमें मैं यह उल्लेख करना आवश्यक समझता हूँ कि श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके वर्तमान सभापति एवं आचार्य मेरे सतीर्थ-वर परिव्राजकाचार्य श्रीश्रीमद् भक्ति वेदान्त वामन महाराजजीके उत्साह-दान, उनकी उदारता एवं स्नेहपूर्ण सहानुभूतिसे ही यह ग्रन्थ इतना शीघ्र प्रकाशित हुआ है, लेखक उनका आभारी है । ये अस्मदीय परमाराध्य श्रीश्रीगुरुदेवके कर-कमलोंमें इस ग्रन्थको समर्पित कर उनका प्रीति विधान करें-- यही उनके श्रीचरणोंमें प्रार्थना है।

इस ग्रन्थकी प्रतिलिपि प्रस्तुत करने, प्रुफ-संशोधन आदि विविध सेवाकार्योंके लिए श्रीओमप्रकाश ब्रजवासी, एम०ए०,साहित्यरत्न; डा०केदार दत्त तत्राड़ी, पी०एच०डी०; श्रीमान् नवीनकृष्ण ब्रह्मचारी ; श्रीमान् अनंगमोहन ब्रह्मचारी तथा आर्थिक सेवाके लिए श्रीमान् जगन्नाथ दासाधिकारी आदिकी सेवा-प्रचेष्टा सराहनीय एवं विशेष

उल्लेखनीय है । श्रीश्रीगुरु-गौरांग-गान्धार्विका-गिरिधारी इन सब पर प्रचुर कृपा आशीर्वाद वर्षण करें-- यहीं उनके श्रीचरणोंमें प्रार्थना है ।

इस ग्रन्थके मुद्रण कार्यमें अत्यन्त शीघ्रताके कारण कुछ मुद्राकर प्रमादादि त्रुटि-विच्युतियोंका रहना सम्भव है । सुधी-पाठकवृन्द उनका संशोधन-पूर्वक पाठ करनेसे हमलोग आनन्दित होंगे ।

श्रीश्रीहरि-गुरु-वैष्णव-कृपालेश-प्रार्थी

श्रीभक्तिवेदान्त नारायण

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ,

मथुरा (उ० प्र०)

विषय-सूची

श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह

ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा

श्रीनवद्वीप धाम-माहात्म्य

मैं उस परम सुखद, मनोहर, चिदानन्दमय श्रीनवद्वीप धामकी वन्दना करता हूँ, जिसको छान्दोग्य उपनिषद्में ब्रह्मपुर, स्मृतियोंमें श्वेतद्वीप और रसिक विद्वत् जनोंने व्रज कहा है ।

"अन्तः कृष्ण बहिर्गौर," राधाभाव-द्युति-सुवलित कृष्ण-स्वरूप-रसराज महाभाव स्वरूप शचीनन्दन श्रीगौरहरिकी विहार-भूमि श्री नवद्वीप धामकी महिमा अनन्त एवं अपार है । जिस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभुका अवतार परम-निगूढ़ और रहस्यमय है, ठीक उसी प्रकार उनका धाम भी रहस्यमय और निगूढ़ है । धाम नित्य और सनातन है, किन्तु बद्ध और विमुख जीव महामाया द्वारा आच्छादित उस धामका दर्शन नहीं कर पाते हैं । योगमाया देवीकी कृपा होने पर महामाया अपने मायिक आच्छादनको दूर कर देती है, तब योगमाया देवीकी कृपासे जीव भगवत्-धामका पूर्णरूपसे दर्शन कर सकता है ।

माया कृपा करि जाल उठाय जखन ।
आंखि देखे सुविशाल चिन्मय भवन ॥

वृन्दावन धाम और नवद्वीप धाम अभिन्न हैं, इसी प्रकार कृष्ण लीला और गौरलीला भी अभिन्न हैं । श्रीकृष्ण लीलाका परिशिष्ट श्रीगौर लीला हैं। परम-करुण, रसिक-शेखर ब्रजेन्द्रनन्दनने द्वापर युगके अन्तमें सम्पूर्ण ब्रज और ब्रज-परिकरों सहित इस धरा-धाममें आविर्भूत होकर जीवोंको अपना प्रेम दान करनेके लिए विभिन्न प्रकारकी लीलायें की हैं। श्रीकृष्ण-नाम और कृष्ण-धामका भी अपार

माहात्म्य है, फिर भी जीवोंको कृष्ण प्रेमकी प्राप्ति नहीं होती । इसका प्रधान कारण है जीवोंका ढेर-सारा अपराध । अपराध-रहित नाम नहीं होने पर प्रेमकी प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं है, किन्तु यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि गौरनाम, गौरधाम और गौरभक्तिमें अपराधका उतना महत्व नहीं है । श्रीनवद्वीप धाममें अपराधी जीव भी यदि श्रीगौर नित्यानन्द प्रभुका नाम उच्चारण करता है तो परम दुर्लभ कृष्णप्रेम सहज ही उसके हृदयमें प्रकट हो जाता है, अपराधी जगाई-माधाई इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं ।

श्रीनवद्वीप धामका यह भी एक विशेष माहात्म्य है कि यहाँ पर श्रीगौरसुन्दरका शान्त और दास्य भावसे भजन करने पर साधकको सहज ही कृष्णके प्रति सख्य, वात्सल्य और मधुर रसकी प्राप्ति हो जाती है । श्रील भक्तिविनोद ठाकुरजी कहते हैं कि श्रीमन्महाप्रभुजीका भजन दास्य रससे ही होना चाहिए । जब उनके प्रति दास्य भाव परिपक्व हो जाता है, तभी श्रीश्रीराधाकृष्णके प्रति उन्नतोज्ज्वल रसकी स्फूर्ति होती है और भजनीय श्रीमन्महाप्रभु ही उनको श्रीराधाकृष्ण रूपमें दीख पड़ते हैं ।

नवद्वीप धामकी महिमा अपार एवं अनन्त है । लोकपिता ब्रह्मा, देव-देव महादेव एवं सहस्र मुख वाले अनन्त देव भी नवद्वीप धामकी पूर्ण महिमा वर्णन नहीं कर सकते । इसके स्थान-स्थान पर देव-देवियाँ, रुद्रगण तथा सिद्धगण स्थित होकर अनेक युगोंसे श्री गौर-धाम एवं श्रीगौरचन्द्रकी कृपा प्राप्तिके लिए आराधना कर रहे हैं । श्रुति, स्मृति, तन्त्र एवं पुराणादि शास्त्रोंमें श्रीनवद्वीप धामकी महिमाका वर्णन है, किन्तु बड़े निगूढ़ रूपमें है । भक्त एवं भगवान्की कृपासे ही उसे समझा जा सकता है ।

कलियुगमें श्रीनवद्वीप धामका प्रभाव, अत्यन्त प्रबल रहता है, किन्तु अन्य तीर्थोंका प्रभाव क्षीण हो जाता है, भगवद् इच्छासे सत्ययुग, त्रेतायुग तथा द्वापरयुगमें श्रीनवद्वीपधामकी महिमा आच्छा-

दित रहती है । कलियुगमें जब कलिके प्रभावसे अन्य तीर्थोंका प्रभाव निस्तेज हो जाता है, उस समय भगवद् इच्छासे इस धामकी महिमा अत्यधिक प्रकाशित होती है । स्वयं भगवान् ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण नाम-प्रेम वितरणके द्वारा जीवोंके कल्याणके लिए तथा श्रीराधा-भावका स्वयं आस्वादन करनेके लिए श्रीगौरसुन्दरके रूपमें अवतरित होते है, उस समय उनका सर्वोत्तम प्रिय धाम श्रीवृन्दावन जो अब तक प्रच्छन्न रूपमें विद्यमान थे, अब महाप्रभावशाली प्रेमाभक्ति प्रदान करने वाले श्रीनवद्वीप धामके रूपमें प्रकट होते हैं। जो प्रेमा-भक्ति श्रीनारदादि प्रेष्ठ भक्तोंके लिए भी सुदुर्लभ है, वह गौड़-भूमिमें श्रीगौरचन्द्रका आश्रय करनेपर सहज ही सुलभ हो जाती है । श्रीगौड़-भूमि श्रीगौर-नित्यानन्दकी भाँति जीवोंके अपराधों पर अधिक विचार न कर केवल श्रद्धा लेकर नवद्वीप-भूमिमें वास करने पर अथवा धाम परिक्रमा करने पर प्रेमा-भक्ति, ब्रजके उन्नतोज्ज्वल रसको भी प्रदान कर देती है ।

धामका स्वरूप एवं परिमाण

श्रीनवद्वीप धाम श्रीगौड़ मण्डलके अन्तर्गत भगवती-भागीरथीके दोनों किनारों पर स्थित नौ द्वीपोंका समूह है । यहाँ पर भगवती गंगा ऐसे टेढ़े-मेढ़े रूपमें बहती हैं कि मानो इस धामको छोड़कर जाना ही नहीं चाहती हों । अपने अंकमें श्रीमन्महाप्रभुकी इस क्रीड़ा-भूमिको सदैव लपेटे रखना चाहती हैं । श्रीगौड़मण्डल इक्कीस योजन अर्थात् चौरासी कोसमें विस्तृत हैं । बीचमें श्रीगंगा देवी प्रवाहित हैं । इसका मध्यभाग श्रीनवद्वीप-धाम है । श्रीनवद्वीप धामका भी मध्यबिन्दु श्रीनन्महाप्रभुजीकी आविर्भाव-स्थली योगपीठ मायापुर है । गौड़मण्डल चिन्तामणि स्वरूप है । यहाँका जल, भूमि और वृक्ष इत्यादि सबकुछ चिन्मय हैं, यहाँ गंगा-यमुना, सरस्वती, सप्तपुरियाँ आदि सभी तीर्थ विराजमान हैं । श्रीमन्नित्यानन्द प्रभुकी

कृपासे ही जीव इस अपूर्व श्रीनवद्वीप धामका दर्शन कर सकते हैं। श्रीनवद्वीप एक वृहद् अष्टदल कमलकी भाँति है, जिसका मध्यबिन्दु अन्तर्द्वीप मायापुर है । सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, रुद्रद्वीप, जह्नुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप और ऋतुद्वीप इसके अष्टदल हैं । श्रीगौड़मण्डलका मध्य भाग श्रीनवद्वीप धाम सोलह कोसकी परिधिमें है, जो कमलके मध्यभागमें कर्णिकाकी भाँति स्थित है । शास्त्रोंके अनुसार यह श्रीमहाप्रभुकी आविर्भाव-स्थली 'अन्तर्द्वीप-मायापुर' गंगाके पूर्वी किनारे पर स्थित है । गंगाके पूर्वी किनारे पर अन्तर्द्वीप, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप और मध्यद्वीप नामके चार तथा पश्चिमी किनारे पर कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, रुद्रद्वीप जह्नुद्वीप और मोदद्रुमद्वीप नामके पाँच द्वीप स्थित हैं । पाँचसौ वर्ष पूर्वके प्राचीन सरकारी नक्शे तथा तत्कालीन साहित्योंको देखनेसे यह स्पष्ट रूपसे प्रतीत होता है कि श्रीमहाप्रभुजीका आविर्भाव-स्थल 'मायापुर' गंगाके पूर्वी तट पर ही स्थित था । श्रीचैतन्य-भागवत और श्रीचैतन्य-चरितामृत आदि प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थोंसे यह विदित होता है कि श्रीधाम मायापुर चाँदकाजीकी समाधि, वल्लालसेनका किला, बल्लालदीघी' श्रीधर-आँगन आदि स्थान गंगाके पूर्वी तट पर पास-पास थे । वर्तमान नये रूपसे बसा श्रीनवद्वीप-शहर गंगाके पश्चिमी तट पर है, यह प्राचीन कोल-द्वीप है । गंगाकी धारामों प्राचीन नवद्वीप कटने पर वहाँके निवासी गंगाके पश्चिमी किनारेकी उच्च-भूमि पर बस गये । ऐसी उलट-फेर कई बार हुई है । आज पुनः गंगाके पूर्वी किनारे पर बहुत ही मनोरम अनेक गगनचुम्बी मन्दिरोंसे यह पुरी सुसज्जित हो रही है ।

श्रीनवद्वीप-धाम-परिक्रमा अन्तर्द्वीप मायापुरसे आरम्भ होती है। वहाँसे क्रमशः सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप होते हुए गंगाको पार करके कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप और रुद्रद्वीप होकर अन्तर्द्वीपमें जाकर समाप्त होती है । पहले रुद्रद्वीप गंगाके पश्चिमी

तट पर था, किन्तु अब गंगाके पूर्वी तट पर है। परिक्रमा प्रतिवर्ष फाल्गुन महीनेकी शुक्ला अष्टमी अथवा नवमीसे प्रारम्भ कर पूर्णिमाको समाप्त करना श्रेयस्कर है। अर्थात् प्रतिदिन एक-एक द्वीप दर्शन कर महाप्रभुजीकी आविर्भाव-तिथि पूर्णिमाके दिन श्रीधाम मायापुरका दर्शन करें।

श्रीभक्तिविनोद ठाकुरजीने बंगला पयारोंमें श्रीनवद्वीप-धाम-परिक्रमाका बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। इस पुस्तकका नाम 'श्रीनवद्वीप धाम-माहात्म्य' है। इन्होंने 'श्रीनवद्वीप-भावतरंग' में भी संक्षेपमें इसका वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त 'भक्तिरत्नाकर' में श्रीनरहरि चक्रवर्ती ठाकुरने भी नवद्वीप धामकी परिक्रमाका वर्णन किया है। सर्वप्रथम श्रीनित्यानन्द प्रभुजीने श्रीजीव गोस्वामीको साथ लेकर परिक्रमा करवाई थी। इसके पश्चात् महाप्रभुजीके (मायापुरमें रहनेवाले) सेवक श्रीईशान ठाकुरने श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तम ठाकुर और श्रीरामचन्द्र कविराजको श्रीनवद्वीप-धाम-परिक्रमा करायी थी। इसके पश्चात् श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने सभी द्वीपोंकी परिक्रमा कर दर्शनीय स्थलोंका पुस्तिकाके रूपमें वर्णन प्रस्तुत किया है। उनके बाद श्रील सरस्वती ठाकुरने प्रतिवर्ष परिक्रमा आरम्भ की, जिसे उनके प्रधान-प्रधान शिष्यगण आज भी प्रतिवर्ष करते हैं। इनमें जगद्गुरु श्रीलभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी एवं उनके शिष्यवर्ग प्रमुख हैं।

नवद्वीपके नौ द्वीप 'श्रीमद्भागवत्' में वर्णित नवधा-भक्तिके नौ पीठ-स्वरूप हैं। गोद्रुमद्वीप कीर्त्तनाख्या भक्तिका पीठ है, मध्यद्वीप स्मरण भक्तिका, कोलद्वीप पादसेवनका, ऋतुद्वीप अर्चन भक्तिका जह्नुद्वीप वन्दन भक्तिका, मोदद्रुमद्वीप दास्य भक्तिका, रुद्रद्वीप सख्य भक्तिका, सीमन्तद्वीप श्रवण भक्तिका और अन्तर्द्वीप आत्मनिवेदन भक्तिका पीठ है। नौ द्वीपोंमें गुप्त रूपसे बारहों वन वर्तमान हैं, किन्तु वृन्दावनमें जिस क्रमसे ये द्वादश वन स्थित हैं, नवद्वीप धाममें ये द्वादशवन कुछ-कुछ व्यतिक्रमसे स्थित हैं।

अन्तर्द्वीप ही गोकुल-महावन है, जहाँ पृथुकुण्ड या बल्लालदीघी है। इसके उत्तरमें मधुवन और मथुरा नगरी विराजमान है। मधुवन के मध्यभागमें श्रीधरकुटीके पास विश्रामघाट है, यहाँ काजीको शोधनकर महाप्रभुजीने विश्राम किया था। गोद्रुमद्वीप नन्दग्राम है, यहाँ असंख्य गोपोंका निवास था। यहाँ श्रीमहाप्रभुजी, श्रीनित्यानन्द प्रभु और गोपोंके साथमें गोचारणकी लीलाका स्मरण कर भावाविष्ट हो जाते थे। मध्यद्वीप काम्यवनका एक भाग है, यहाँ पुष्कर और नैमिषारण्य भी विद्यमान हैं। कोलद्वीप बहुला वन है। चाँपाहाटी खदिर वन है। ऋतुद्वीप राधाकुण्ड है, जो वृन्दावनका एक भाग है। पास ही में कोलद्वीपका कुलिया पहाड़ वाला भाग गोवर्धन है। जह्नुद्वीप भद्रवन है। गोद्रुमद्वीप भाण्डीरवन है। मोदद्रुमद्वीपका महत्पुर काम्यवन है। रुद्रद्वीप श्रीवेलवन है, इस रुद्रद्वीपके निकट स्थित सीमन्तद्वीप भी वेलवनका एक भाग है। इस प्रकार श्रीनवद्वीप धामके नौ द्वीपोंमें श्रीधाम वृन्दावनके द्वादश वन गुप्त रूपसे स्थित हैं।

❋❋❋❋

श्रीअन्तर्द्वीप

(१) आतोपुर ग्राम

यह ब्रह्माजीकी तपस्या-स्थली है । कृष्णलीलामें चतुर्मुख ब्रह्माजीने ग्वाल-बाल और बछड़ोंका अपहरण कर जो अपराध किया, उसके लिए वे बड़े अनुतप्त हुए । उन्होंने भावी गौरलीला और श्रीमन्महाप्रभुजीकी महावदान्यताका स्मरण कर अपने अपराधोंको क्षमा करानेके लिए श्रीगौर-सुन्दरकी आराधना की थी । श्रीगौरलीला नित्य है, इसका केवल आविर्भाव और तिरोभाव होता है । इसलिए गौरलीलाका आविर्भाव होनेसे पूर्व ही श्रीगौर-आराधनाकी बात सिद्धान्त-विरुद्ध नहीं है । इनकी आराधनासे सन्तुष्ट होकर श्रीगौरसुन्दरने इनको दर्शन दिया था । ब्रह्माजीने अपने अपराधोंकी क्षमा याचना करते हुए यह वर माँगा कि मैं आपकी प्रकट लीलाके समय किसी नीच कुलमें जन्म ग्रहण कर अत्यन्त दीन-हीन भावसे आपकी मनोऽभीष्ट सेवा कर सकूँ । श्रीमन्महाप्रभुजीने उन्हें वर दिया कि तुम यवन कुलमें उत्पन्न होकर उच्च हरिनाम संकीर्तनके आचार और प्रचारके द्वारा मेरी सेवा करोगे । मैं अपनी तीन विशेष आन्तरिक अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिए अपनी प्रियतमा श्रीराधाजीका भाव एवं कान्तिको अंगीकार कर गौरांग रूपमें प्रकटित होऊँगा । हरिनामके माध्यमसे विश्वभरके जीवोंको नचाकर उन्हें देव-दुर्लभ अपना उन्नतोज्ज्वल प्रेम देकर उन्मत्त बनाऊँगा । तुम भी मेरी उस नाम-प्रेम दान लीलामें अन्तर्निहित मनोऽभीष्ट सेवामें सहायता करोगे। यहाँ ब्रह्मासे अपने इस अन्तरंग भावको व्यक्त करनेके कारण इस द्वीपका नाम अन्तर्द्वीप हुआ । महाप्रभुकी लीलामें वह ब्रह्माजी ही नामाचार्य हरिदास ठाकुर हैं । इस अन्तर्द्वीपका नामान्तर ही आतोपुर है । अन्तर्द्वीपका मध्यबिन्दु महायोगपीठ आविर्भाव-स्थली है, जो मायापुरके नामसे प्रसिद्ध है । यह अन्तर्द्वीप बल्लालदीघी, वामन-

पुकुरका कुछ अंश, श्रीनाथपुर, गंगानगर प्रभृति स्थानों तक व्याप्त हैं । वर्तमान वामन-पुकुरके अन्तर्गत ही श्रीजगन्नाथ मिश्रका भवन था । यहाँ श्रीमन्महाप्रभुजीकी लीला नित्यकाल होती रहती है । कोई-कोई भाग्यवान् जीव ही इसका दर्शन कर पाते हैं ।

मायापुरमें श्रीमन्दिर (योगपीठ) की भित्ति खोदते समय यहीं एक छोटी सी चतुर्भुज-मूर्ति पायी गयी, जो श्रीजगन्नाथ मिश्र द्वारा सेवित थीं । जहाँ आज विशाल मन्दिर खड़ा है, वहीं श्रीजगन्नाथ मिश्रका ठाकुर-मन्दिर था, पास ही एक विशाल वृक्षके नीचे श्रीशची-देवीके गर्भ-सिन्धुसे निमाईका जन्म हुआ था, श्रीशचीदेवीके पिता श्रीनीलाम्बर चक्रवर्ती उस समयके ज्योतिष न्याय आदिके सुप्रसिद्ध विद्वान् थे । श्रीशचीदेवी बड़ी पतिव्रता, धर्मनिष्ठ और कृपाकी मूर्ति थी । श्रीशचीदेवीकी क्रमशः आठ कन्याओंके मरने पर विश्वरूप नामक एक पुत्र हुआ । श्रीविश्वरूप असाधारण, शास्त्रज्ञानी, शान्त-स्वभाव, उपकारी, सर्वज्ञ एवं अपूर्व प्रतिभा-सम्पन्न, किन्तु विषय-वैराग्यपूर्ण परम रूपवान् बालक था । इसके बाद ही बालक निमाईका जन्म हुआ । यह बालक और कोई नहीं, स्वयं ब्रजेन्द्रनन्दन ही राधा-भाव-द्युति ग्रहण कर गौरांग रूपमें आविर्भूत हुए थे ।

इन श्रीगौरांग महाप्रभुके आविर्भावके बहुतसे कारणोंमेंसे चार प्रमुख हैं ।

१- युगधर्म श्रीनामसंकीर्तनका प्रचार,

२- अनर्पित चिरात् उन्नत-उज्ज्वल प्रेमका दान,

३- जगत्की तात्कालिक घोर अधार्मिक दुरावस्थासे विचलित होकर श्रीअद्वैताचार्यकी गंगाजल और तुलसी-पत्र द्वारा श्रीकृष्णकी आराधना,

४- परमकरुण एवं रसिक-कृष्ण अपनी तीन वाञ्छाएं (१) श्रीराधिकाजीकी प्रणय-महिमा कैसी है ? (२) अपने स्वरूपकी

निखिल माधुरीका स्वयं आस्वादन करनेकी अभिलाषा, जिसका श्रीमती राधिकाजी आस्वादन करती हैं। (३) अपनी मधुरिमाओंका आस्वादन कर श्रीमती राधिकाजीको कैसा सुख आस्वादन होता है, पूर्ण करनेके लिए राधाजीका भाव और कान्ति लेकर श्रीगौरांग रूपमें आविर्भूत हुए।

श्रीचैतन्य महाप्रभुजीका जन्म तेइस फाल्गुन चौदह सौ सात शकाब्द (२८ फरवरी १४८६ ई०) को संध्याके समय हुआ, उस दिन पूर्णिमा थी। चन्द्रग्रहणके समय चारों तरफ लाखों लोग हरि-ध्वनि कर रहे थे, ऐसे सुन्दर-सुहावने, संकीर्तनमय वातावरणमें श्रीशचीदेवीके गर्भसे वे प्रकट हुए। घरकी स्त्रियाँ भी हरिबोल-हरिबोल कह उठी। नीमके पेड़के नीचे जन्म ग्रहण करनेसे बालकका नाम निमाई और अत्यन्त गौरवर्ण होनेके कारण इनका नाम गौरांग हुआ। घरका वातावरण सब समय हरिनामसे गुञ्जित रहता।

बचपनमें श्रीकृष्णकी भाँति ही श्रीमहाप्रभुजी भी बड़ी चञ्चल प्रकृतिके थे। इसी जगन्नाथ भवनमें वे कभी सर्पको पकड़कर खेलते, कभी किसी चोरके कन्धों पर चढ़कर नगर भ्रमण करते, कभी एकादशीके दिन किसी भक्तके घरमें ठाकुरजीको भोग लगाये गये नैवेद्यको माँगते, तो कभी सब समय रोते रहते और हरिनाम करने पर ही किलकारियाँ मारकर हँसने लगते। कभी पाठशालासे लौटकर गंगामें छोटे बच्चोंके साथ नाना प्रकारकी क्रीड़ायें करते, किन्तु विश्वरूपके संन्यासके पश्चात् बड़े शान्त होकर श्रीगंगादासजी की पाठशालामें श्रीगदाधर, श्रीदामोदर, श्रीजगदानन्द, और श्रीमुकुन्द आदिके साथ अध्ययन करते थे। अपने घर पर ही संस्कृत टोलकी (पाठशालाकी) स्थापना कर व्याकरण पढ़ाने लगे। यहीं गंगाघाट पर दिग्विजयी केशव काश्मीरीका पाण्डित्य चूर्ण कर उन्हें हरिभजन करनेका उपदेश दिया। यहीं पर उन्होंने दो विवाह किये– प्रथम श्रीलक्ष्मीदेवी और इनकी गोलोक प्राप्तिके बाद द्वितीय विवाह

श्रीविष्णुप्रियादेवीके साथ किया। यहींसे गया यात्रामें श्रीईश्वरपुरीसे कृष्णनामकी दीक्षा लेकर निमाई पण्डितके बदले परम भावुक बनकर लौटे। अन्तमें वृद्धामाता और विष्णुप्रियाको छोड़ निर्मोही बन, गंगाको पार कर कटवामें संन्यास ग्रहण किया और शान्तिपुरमें माताका निर्देश पाकर श्रीवृन्दावनके बदले श्रीपुरीधाम पधारे। वहाँसे दक्षिण भारतमें भ्रमण करते हुए श्रीगोदावरीके तट पर इनका श्रीरायरामानन्दजीसे भक्ति-तत्त्वके सम्बन्धमें वार्तालाप हुआ। पुरीमें चौबीस वर्ष रहे। जिसमें छः वर्ष वृन्दावन तथा दक्षिण भारत आदिका भ्रमण करनेमें व्यतीत हुए। शेष अठारह वर्ष स्थायी रूपसे पुरी धाममें रहकर दिन-रात कृष्ण विरहमें छटपटाते रहे। स्वरूप दामोदर, राय रामानन्द आदि श्रीमदभागवतके श्लोकों, चण्डी-दास विद्यापति और गीत-गोविन्द आदिके पदोंसे भावानुरूप इनको सान्त्वना देते थे। गृहस्थ धर्ममें रहते हुए आदर्श गृहस्थका जीवन बिताया तथा गृह त्यागके बाद निष्किंचन होकर आदर्श त्यागमय भजन-जीवनकी शिक्षा दी।

श्रीनिमाईके संन्यासके बाद श्रीशचीमाता और श्रीविष्णुप्रिया देवीका जीवन बहुत विरहमय हो गया, ईशान ठाकुर और बंशी-वदनानन्द जी इनकी देखभाल करते थे। श्रीविष्णुप्रिया देवी महाप्र-भुजीके विरहमें अत्यन्त जर्जरित हो गयीं। खाना-पीना और देह-दैहिक, सबकुछ भूल गयीं। सवेरेसे दोपहर तक महामन्त्रका एक बार उच्चारण कर एक चावलका दाना रख लेती, इस प्रकार दोपहर तक जितनी महामन्त्रकी संख्या होती उतने ही चावलके दानोंको एकत्रित कर उसकी रसोई बनातीं, ठाकुरजी (श्रीमन्महाप्रभुजी की श्रीमूर्ति एवं श्रीश्रीराधाकृष्ण) को भोग लगातीं, उस प्रसादको शचीदेवीको परोस देतीं। माँ शचीदेवी थोड़ा सा ग्रहण कर अवशेष (मुट्ठी भर) विष्णुप्रिया देवीके लिए रख देतीं। दिन रात रोते-रोते आकुल प्राणोंके साथ हरिनाम करती और श्रीचैतन्य महाप्रभुजीका स्मरण करती रहतीं। श्रद्धालु भक्तगण बहुत अधिक आग्रह करने

पर केवल उनके श्रीचरण मात्रका दर्शन कर पाते थे । धीरे-धीरे श्रीनित्यानन्द प्रभु, श्रीअद्वैताचार्य, श्रीवास पण्डित और अन्यान्य वैष्णवगण महाप्रभुजीके विरहको सहन न कर सकनेके कारण अन्यत्र चले गये । कुछ दिनोंके पश्चात् गंगाकी बाढ़में नवद्वीपका बहुत सा अंश कटनेसे वहाँके निवासी भी गंगाके पश्चिमी तट पर जिसे कुलिया-पहाड़पुर कहते हैं, जाकर बस गये ।

(२) महाप्रभुजीका सूतिका-गृह

यहीं पर एक नीमके वृक्षके नीचे शचीमाताके गर्भसे बालक निमाईका जन्म हुआ । प्राचीन मूल वृक्ष अप्रकट हो जाने पर यहाँ अब भी उसी स्थल पर नया वृक्ष देखा जाता है ।

(३) क्षेत्रपाल शिव या गोपीश्वर महादेव

योगपीठमें धाम रक्षकके रूपमें क्षेत्रपाल शिव या धाम-सेवा-प्रदाता श्रीगोपीश्वर शिव नित्य पूजित होते हैं । शुद्ध भक्तगण श्रीरूपानुग पद्धतिसे क्षेत्रपाल शिवको गोपीश्वर शिवके रूपमें प्रणाम कर श्रीराधाकृष्ण मिलित तनु रसराज-महाभावकी मूर्तिमान विग्रह श्रीगौरसुन्दरकी निरुपाधिक नित्य सेवाकी प्रार्थना करते हैं । उनका प्रणाम मन्त्र है —

वृन्दावनावनिपते ! जयसोम ! सोममौले !
सनक-सनन्दन सनातन-नारदेड्य ।
गोपीश्वर ! व्रजविलासि युगांघ्रिपद्मे
प्रेम प्रयच्छ निरुपाधि नमो-नमस्ते ॥

(४) श्रीनृसिंह देवका मन्दिर

क्षेत्रपाल शिवके समीप भक्ति विघ्न-विनाशक श्रीनृसिंह देव और श्रीगौर-गदाधर श्रीविग्रह विराजमान हैं ।

(५) श्रीगौरकुण्ड

व्रजमण्डलमें जिस प्रकार श्रीराधाकुण्ड और श्रीश्यामकुण्डकी महिमा है, उसी प्रकार अभिन्न व्रजमण्डल गौरमण्डलके मायापुर धाममें

श्रीगौर कुण्डकी अपूर्व महिमा है । श्रीगौरभक्तगण इस कुण्डमें स्नान व आचमन कर श्रीराधाकृष्णकी कृपा-माधुरीका आस्वादन करते हैं। बहुतसे भजनानन्दी महापुरुष अपनी भजन-कुटी बनाकर, यहाँ भजन करते हैं ।

(६) वृद्धशिव या शिव डोवा

योगपीठसे दस गज दूर गंगाके किनारे दक्षिणकी ओर वृद्धशिव या शिव डोवा स्थित है । श्रीमन्महाप्रभुजीके समयमें वहाँ वृद्ध शिवका मन्दिर था, गंगाकी धारामें वह स्थान लुप्त हो गया है । अब उसे शिव डोवा कहते हैं । यहाँ श्रीनित्यानन्द प्रभुजीने श्रीजीव गोस्वामीको वृद्धशिवका दर्शन कराया था ।

(७) श्रीमन्महाप्रभुजीका घाट

योगपीठके निकट ही पश्चिमकी ओर यह घाट स्थित है । यहाँ बालक निमाई या पण्डित निमाई गंगामें स्नान करते हुए जल-क्रीड़ा करते थे । गंगाको यमुनाकी भाँति अपनी क्रीड़ाका रसास्वादन करानेका सौभाग्य प्रदान किया था । वृद्धशिव घाटसे छह गज उत्तरकी ओर यह घाट अवस्थित है ।

(८) जगाई-माधाई घाट

जगाई और माधाई नवद्वीपके एक प्रसिद्ध ब्राह्मण वंशमें उत्पन्न हुए थे । इनका नाम जगदानन्द और माधवानन्द बन्धोपाध्याय था। दुःसंगके कारण ये बड़े दुराचारी, मद्यप, पापी, और भ्रष्ट चरित्र हो गये थे। इसी घाटके पास ही दोनों भाई इतना ऊधम मचाते थे कि इनके डरसे सज्जन, सम्भ्रांत पुरुष और महिलाओंका वहाँसे निकलना भी बड़ा कठिन था । श्रीचैतन्य महाप्रभुने नित्यानन्द प्रभु और हरिदास ठाकुरको नगरमें नाम-प्रेम दान और प्रचारके लिए नियुक्त किया था । इन दोनों महापुरुषोंने जगाई-माधाईको नाम-प्रेमका सर्वोत्तम उपयुक्त पात्र समझकर इनको हरिनाम उच्चारण (कीर्तन)

करनेके लिए कहा था । उस समय ये दोनों मदिरा पानमें बड़े उन्मत्त हो रहे थे । माधाईने मदिराके टूटे हुए मृद-भाण्डका टुकड़ा उठाकर नित्यानन्द प्रभुजीके सिरमें दे मारा । नित्यानन्द प्रभुके सिरसे रक्त प्रवाहित होने लगा । हरिदास ठाकुरजीने श्रीमन्महाप्रभुजीको इस दुर्घटनाका संवाद दिया । महाप्रभुजी अपने समस्त परिकरोंको लेकर घटना-स्थल पर उपस्थित हुए और हाथ उठाते हुए आवेशमें भरकर चक्र ! चक्र ! पुकारने लगे । जगाई-माधाई उनके हाथमें चक्र देखकर भयभीत हो कांपने लगे । परम दयालु श्रीनित्यानन्द प्रभुजीका हृदय द्रवित हो उठा, उन्होंने महाप्रभुजीका हाथ पकड़ लिया और बोले, 'प्रेमदानके इस अवतारमें किसीकी हत्या करना उचित नहीं । इसका हृदय संशोधित कर प्रेमदान करना ही उचित है । जगाईने माधाईको मुझे मारनेसे निषेध किया था, आप इस पर कृपा करें ।' इस पर महाप्रभुजीने जगाइके सिर पर अपने श्रीचरण रख दिये और वह 'कृष्ण''कृष्ण' कहकर रोने लग गया। ऐसा देख कर माधाई भी नित्यानन्द प्रभुके चरणोंमें गिरकर क्षमा याचना करने लगा । महाप्रभुजीने उसे भी प्रेम प्रदान किया । माधाईने महाप्रभुजीसे पूर्वकृत जीव हिंसाके पापोंसे विमुक्त होनेका उपाय पूछा । नित्यानन्दजीने माधाईको प्रतिदिन गंगाके उस घाटको साफ करनेका आदेश दिया । गंगाजीकी सेवासे अपराध दूर होते हैं । नित्यानन्द प्रभुजीके आदेशानुसार माधाई जीवन-भर इस घाटकी सेवा करता हुआ वैष्णवोंकी चरण-धूलि लेता रहा । वह अपने हाथोंसे सीढ़ियोंका निर्माण करता और उनको साफ रखता था । इसीलिए लोग इसे जगाई-माधाई घाट कहने लगे । यह महाप्रभुजीके घाटसे तीस गज उत्तरमें अवस्थित है ।

(६) बारकोना घाट

यहीं पर श्रीमन्महाप्रभुजी अध्ययनके पश्चात् छात्रोंके साथ शास्त्रादि अनुशीलन करते थे । किशोरावस्थामें जिस समय निमाई

पण्डित छात्रोंको अपनी पाठशालामें संस्कृत व्याकरण पढ़ाया करते थे, उस समय कश्मीर प्रदेशका रहनेवाला एक सुप्रसिद्ध दिग्विजयी पण्डित केशव काश्मीरी भारतवर्षके प्रकाण्ड पण्डितोंको पराजित करता हुआ, अपने सैकड़ों शिष्योंके साथ यहाँ उपस्थित हुआ । उस समय नवद्वीप पूर्वी भारतमें संस्कृत विद्याध्ययनका एक विशेष केन्द्र था । वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण और षड्दर्शनोंका विशेष कर नव्यन्यायके अध्ययन और अध्यापनाका महत्वपूर्ण केन्द्र माना जाता था । दूर-दूरसे लोग विद्याध्ययनके लिए यहाँ आया करते थे । केशव काश्मीरी श्रीसरस्वती देवीका वरद-पुत्र था । क्षणमात्रमें धारा प्रवाह, विविध अलंकारोंसे अलंकृत सैकड़ों नवीन श्लोक रचना करनेकी क्षमता रखता था । वह अत्यन्त तर्क-पटुता तथा विभिन्न प्रकारकी प्रतिभाओंसे सम्पन्न अपनी वाक्-पटुतासे बड़े-बड़े विद्वानों को पराजित कर देता था । नवद्वीपमें आते ही उसने सगर्व घोषणा कर दी कि यहाँका कोई भी पण्डित उससे शास्त्रार्थ कर ले अन्यथा उसे जय-पत्र लिख दे, किन्तु नवद्वीपका कोई भी पण्डित शास्त्रार्थके लिए उपस्थित नहीं हुआ । वे निमाई पण्डितसे ईर्ष्या करते थे । इसलिए चालाकीके साथ उन्होंने केशव-काश्मीरीसे कहा कि निमाई पण्डित नवद्वीपके सबसे क्षुद्र पण्डित हैं तथा आयुमें अभी बालक हैं । आप पहले उनसे शास्त्रार्थ करनेके पश्चात् हमसे शास्त्रार्थ करना ।

संध्याका समय था । गंगाके किनारे प्रतिभा सम्पन्न श्रीनिमाई पण्डित छात्र-मण्डलीके बीचमें बैठकर उन्हें व्याकरण शास्त्र पढ़ा रहे थे । सूर्यदेव अस्ताचलकी ओर गंगाके गर्भमें प्रवेश करने जा रहे थे । उनकी लाल-लाल किरणें गंगाकी लहरोंको स्पर्श कर मानो खेल रही थी । आकाश भी लाल रंगमें रंगकर मानो अनुरागमय हो रहा था । वातावरण भी शान्त किन्तु बड़ा ही मनोहर लग रहा था । केशव काश्मीरी गर्वसे झूमता हुआ बाल-टोलीको देखकर

उसके सन्निकट आया । उनकी मधुर वाणीमें व्याकरण और नव्य-न्यायकी सुन्दर-सुन्दर न्याय-फक्किकाओंको श्रवण कर मुग्ध होकर वह भी उनके बीचमें बैठ गया । इनको देखकर कुछ बच्चे सहमसे गये। केशव काश्मीरीने निमाई पण्डितकी असामान्य प्रतिभाको देख किसी बालकसे पूछा ''इस छात्रका नाम क्या है?'' बच्चेने उत्तर दिया यही तो हमारे निमाई पण्डित हैं । निमाई पण्डितका नाम सुनते ही न जाने क्यों, वह भयभीत हो गया । किसी बच्चेने निमाई पण्डितको कानों ही कान बतला दिया कि ये ही केशव काश्मीरी है । निमाई पण्डितने केशव काश्मीरीकी ओर मुड़कर सम्मान पूर्वक कहा, 'आज हमारे सौभाग्यसे आप हम लोगों के बीचमें पधारे हैं। हमने आपकी बड़ी महिमा सुनी है, आप हमें कुछ सुनायें ।'

केशव काश्मीरीने पूछा 'आप क्या सुनना चाहते हैं ?' निमाई ने उत्तर दिया, 'आपके मुखसे हम श्रीभगवती-भागीरथीकी महिमा सुनना चाहते हैं ।' इतना कहना था कि केशव काश्मीरीने कुछ ही क्षणोंमें अनुप्रासादि अलंकारोंके अलंकृत बिल्कुल नये श्लोकोंकी झड़ी लगा दी । ऐसा देख छात्र-मण्डली विस्मित हो गयी । निमाई पण्डितने इनमेंसे किसी एक श्लोकके गुण-दोषोंका वर्णन करनेके लिए कहा । केशव काश्मीरीने कहा 'कौनसे श्लोकका गुण-दोष सुनना चाहते हो ?' निमाई पण्डितने झटसे बीचका एक श्लोक सुना दिया । केशव-काश्मीरी निमाईकी श्रुति-धरिता (श्रवण विद्वता) देख आश्चर्य चकित हो गया और मन ही मन डर भी गया, फिरभी गर्वके साथ उत्तर दिया, 'केशव काश्मीरीकी रचनामें कभी कोई दोष नहीं होता ।' ऐसा कहकर उसने श्लोकके अनुप्रासादि अलंकार सम्बन्धी पांच गुणोंको बतलाया । इस पर निमाई पण्डितने बड़ी नम्रतासे, किन्तु गम्भीर होकर उक्त गुणोंके अतिरिक्त और भी पाँच गुणों और पाँच दोषोंको दिखलाकर सबको और भी विस्मित कर दिया ।

केशव काश्मीरी कुछ भी उत्तर नहीं दे सका । उसका गर्व नष्ट हो गया और पराजित होकर अपने डेरेमें लौट आया । रात को माँ सरस्वतीने सान्त्वना देते हुए कहा 'ये मेरे पति स्वयं भगवान्-कृष्ण हैं । तुम्हारा बड़ा सौभाग्य है कि तुमने उनके दर्शन पाये । तुम उनके चरणोंमें गिरकर क्षमा माँगना ।' वह दूसरे दिन प्रातः श्रीनिमाई पण्डितसे मिले और उनके चरणोंमें गिरकर क्षमा माँगी । निमाई पण्डितने इनको उपदेश दिया, 'पाण्डित्यका तात्पर्य दिग्विजय करना नहीं, बल्कि कृष्णका भजन करना है । तुम व्रजमें जाकर सरल चित्तसे श्रीकृष्णका भजन करो ।' वह निमाई पण्डितको प्रणाम कर चला गया ।

(१०) नागरिया घाट

बारकोना घाटसे दस गज उत्तरमें पास ही गंगानगरमें स्थित श्रीगंगा दास पण्डितका संस्कृत टोल था । जिसमें बालक निमाई पढ़ते थे । काजीदलनके दिन महाप्रभुजी विराट नगर-संकीर्तनके साथ इस घाट पर पधारे थे और कुछ देर तक यहाँ कीर्तन कर लोगोंके एक विराट समूहके साथ जलती हुई मशालोंको लेकर मृदंग-करतालोंसे कीर्तन करते करते सिमुलिया ग्राम होते हुए चाँदकाजीके पास पहुँचे थे ।

बचपनमें निमाई अन्य बालकोंके साथ गंगादासके टोलसे पढ़कर घर लौटते समय मार्गमें इसी घाट पर छोटी-छोटी बालिकाओंसे अपनी पूजा करनेके लिए कहते । जो बालिकाएँ इनके चरणोंकी पूजा करतीं उन्हें सुन्दर, सुकान्त, धनीमानी वर प्राप्तिका वरदान देते और जो ऐसा नहीं करतीं उनको लंगड़ा-लूला, निर्धन वर प्राप्तिका भय दिखलाते । कभी गंगाके जलमें स्नान कर सूर्यको जल देते हुए, मन्त्र जपते हुऐ ब्राह्मणों पर वे जलके छींटे मारते और उनके डाँटने-डपटने पर उन पर कुल्ला कर देते । फिर पिता श्रीजगन्नाथमिश्रके आनेसे पहले ही अपने अंगों पर धूल और स्याही

लगाकर (स्नानका चिह्न दूर कर) दूसरे रास्तेसे घर पहुँच जाते। इधर ब्राह्मण और बालिकाओंसे उलाहना सुनकर मिश्र हाथमें लठिया लेकर गर्जन-तर्जन करते हुए घाट पर पहुँचते और वहाँ निमाईको न पाकर घर लौटते थे। घर लौटने पर निमाईके ऊपर धूल व स्याही आदि देखकर चुप हो जाते। उस समय बालक निमाईका भोला-भाला चेहरा देखते ही बनता था। मानो वह सम्पूर्ण रूपसे निर्दोष है। बालकोंसे भी निमाई अपने सीधे घर आनेकी बात कहलवा देते। इसी घाट पर श्रीशचीमाताने श्रीलक्ष्मीप्रियाको देखकर अपने पुत्र निमाईके लिए दुल्हनके रूपमें चयन किया था।

(११) गंगानगर

आजकल यह स्थान गंगाजीके गर्भमें है। यहीं पर नवद्वीपके प्रसिद्ध श्रीगंगादास पण्डितकी पाठशाला थी। यहीं पर बालक निमाईने व्याकरणकी पूरी शिक्षा ग्रहण कर अपने घर पर ही पाठशाला खोल दी थी। गंगादासजी बालक निमाईका बहुत ही सम्मान करते थे। ये गंगादासजी पूर्व लीलामें सान्दिपनी मुनि थे। गयासे लौटने पर कृष्ण-प्रेममें विभोर अध्यापक-निमाई अब भक्त-निमाई बन गये और अध्यापनका कार्य बन्द कर दिया। इनके छात्रोंने पण्डित गंगादाससे शिकायत की। गंगादासजीने इन छात्रों पर कृपा कर भावुक-निमाईके समक्ष बहुत सी युक्तियोंकी अवतारणा कर पुनः अध्यापनका कार्य प्रारम्भ करनेका आदेश दिया। गुरु आज्ञा मानकर निमाई पण्डित छात्रोंको पुनः पढ़ाने बैठ गये, किन्तु अब उन्हें व्याकरणका प्रत्येक अक्षर और प्रत्येक सूत्र भुवन-मोहन श्यामसुन्दरके रूपमें दीखने लगा। वे छात्रोंके समक्ष आवेशमें भरकर केवल कृष्णलीलाओंका कीर्तन करने लगे। अन्तमें बाह्य दशा उपस्थित होने पर फुट-फुट कर रोने लगे, वाणी गद्-गद् हो गयी और कुछ भी न बोल सके। केवल इतना ही कहा 'अब मैं कृष्ण-भक्ति रहित केवल व्याकरण इत्यादि शास्त्रोंका अध्यापन कार्य

नहीं कर सकता।' ऐसा कहते कहते हरि-कीर्तनमें विभोर हो गये, छात्र भी पढ़ना-लिखना छोड़कर महाप्रभुजीके साथ हरिनाम-संकीर्तन करने लगे।

(१२) खोल भांगार डांगा अथवा श्रीवास अंगन

यह स्थान योगपीठसे उत्तरकी ओर लगभग दो सौ गजकी दूरी पर स्थित है। यहीं श्रीवास पण्डितके घर पर विस्तृत-आंगनमें महाप्रभुजी अपने परिकरोंके साथ हरिनाम-संकीर्तन करते थे। श्रीवास भी अपने चारों-भाइयोंके सहित मृदंग-करताल बजाते हुए रातभर कीर्तन किया करते थे। आसपासके नास्तिक हिन्दुओंने नवद्वीपके शासनकर्ता मौलाना सिराजुद्दीन चाँदकाजीके समक्ष नालिश कर दी। इन्होंने हिन्दुओंके लिए यह फरमान जारी किया कि कोई भी हिन्दु जोरसे हरिनामका उच्चारण या कीर्तन नहीं करेगा अन्यथा दण्डका भागी होगा और उसे तुरन्त जातिसे भ्रष्ट कर दिया जायेगा। फिर भी श्रीवास आँगनमें कीर्त्तन बन्द नहीं हुआ, तब स्वयं उसने संकीर्त्तनके समय उपस्थित होकर मृदंग तोड़ दिया। इसीलिए यह स्थान 'खोलभांगार डांगा' नामसे प्रसिद्ध हुआ। यहीं श्रीचैतन्य महाप्रभुजीकी संकीर्तन रासस्थली 'श्रीवास अंगन' है।

श्रीवास पण्डित श्रीमन्महाप्रभुकी गृहस्थ लीलाके प्रधान पृष्ठ पोषक थे।

(क) गयासे लौटने पर महाप्रभुजीने भक्त-प्रवर श्रीवासके भवनमें ही श्रीविष्णु सिंहासन पर विराजमान होकर राज राजेश्वर ऐश्वर्यका प्रकाश किया था।

(ख) भक्तोंने यहीं पर महाप्रभुजीका अभिषेक किया था।

(ग) महाप्रभुजीने अपने समस्त भक्तोंको यहीं पर प्रेमदान किया था। माता श्रीशचीदेवीको भी श्रीअद्वैताचार्यसे क्षमा माँगने पर प्रेम दान किया था।

(घ) श्रीनित्यानन्द प्रभुजीके द्वारा यहीं पर व्यास पूजा हुई थी।

(ङ) महाप्रभुजीने नित्यानन्द प्रभुजीको अपने हाथोंमें धनुष-वाण, बंशी और दण्ड-कमण्डलुसे युक्त षट्भुज रूपके दर्शन कराये थे।

(च) यहीं पर महाप्रभुजीने सात-प्रहरिया भावके दर्शन कराये थे।

(छ) एक वर्ष तक द्वार अवरुद्ध कर सारी रात कीर्तन होता था।

(ज) महाप्रभुजीने श्रीवास पण्डितको अपने नृसिंह रूपका दर्शन कराया था।

(झ) श्रीवासके पुत्रका उस समय परलोक गमन होने पर महाप्रभुजीने कीर्तन बन्द कर मृत-शिशुकी आत्माको पुनः बुला लिया और पूछा—तुम यहाँ श्रीवास पण्डितको छोड़कर कहाँ जा रहे हो? बच्चेने उत्तर दिया, कोई किसीका पुत्र, भाई, बन्धु, माता-पिता नहीं है, यह सब सम्बन्ध झूठे और दुःखदायक हैं, भगवान् ही जीवोंके एकमात्र परम-पिता हैं। जीव अपने प्रारब्ध कर्मोंको भोगता हुआ महामायाके प्रभावसे ऊँची-नीची चौरासी लाख योनियोंमें भटक रहा है। भगवान् एवं भक्तोंकी कृपासे ही भगवद्-भजन करता हुआ मायासे मुक्त होकर भगवानूकी अप्राकृत सेवा प्राप्त करता है। प्रारब्धके अनुसार मेरा इस घरमें जन्म हुआ था। अब इस घरमें रहनेका प्रारब्ध समाप्त हो गया है। महाप्रभुजीने उसको विदा कर दिया। ऐसा देख-सुनकर परिवारके लोगोंको दिव्यज्ञान हुआ, वे भी भगवद् भजनमें तत्पर हो गये।

(ञ) यहीं पर श्रीवासकी भतीजी नारायणीको महाप्रभुजीने अपना उच्छिष्ट प्रसाद दिया था। इन्हींके गर्भसे श्रीचैतन्य लीलाके वेद-व्यास श्रीचैतन्य भागवत्के रचयिता श्रीवृन्दावन दास ठाकुरका

आविर्भाव हुआ था।

श्रीवास पण्डित

ये श्रीचैतन्य महाप्रभुजीकी शाखामें है तथा पंचतत्त्वोंमें से एक हैं। पूर्वावतारके ये श्रीनारद हैं। इनका जन्म श्रीहट्टमें हुआ था। बादमें श्रीवास नवद्वीपमें महाप्रभुजके भवनके पास ही निवास करते थे। महाप्रभुजीके संन्यास लेकर पुरी चले जाने पर इनको नवद्वीप सूना लगने लगा। अतः ये कुमारहट्टमें जाकर बस गये। श्रीचैतन्य महाप्रभुजी इनके अंगनमें अपने परिकरों सहित कीर्तन विलास करते थे। चापाल-गोपाल नामक एक ईर्ष्या परायण ब्राह्मण इससे असंतुष्ट होकर इनके घरके प्रवेश द्वार पर अपवित्र वस्तुओंको रख देता था। इस अपराधसे उसको कुष्ठ रोग हो गया, बादमें रोरोकर क्षमा मांगने पर श्रीवासजीने उसे क्षमा कर दिया। एक बार श्रीवासकी सास छिपकर श्रीवास-अंगनमें कीर्तन सुन रही थी। श्रीवास पण्डितने उनको वहिरंग समझकर कीर्तनसे बाहर निकाल दिया। ये महाप्रभुके कीर्तनमें नृत्य और कीर्तन दोनोंके ही संगी थे। ये रथ-यात्राके समय जगन्नाथपुरीमें श्रीचैतन्य महाप्रभुके साथ रहते थे।

(१३) श्रीअद्वैत भवन

श्रीवास अंगनसे बीस गज उत्तरकी ओर यह स्थित है। श्री-हट्टमें श्रीअद्वैताचार्यका जन्म-स्थान है। बादमें यह स्थान छोड़कर ये शान्तिपुरमें रहने लगे। इनका एक स्थान नवद्वीपमें भी था। ये छात्रोंको गीता-भागवतकी भक्ति तात्पर्यमूलक शिक्षा देते थे। इन्हींकी पाठशालामें श्रीविश्वरूप आदि अनेकों छात्र अध्ययन करते थे। बालक निमाई माताजीके कहनेसे अपने विश्वरूप भैयाको यहींसे बुलाकर अपने घर ले जाते थे।

उस समय गम्भीर-प्रकृतिके अद्वैताचार्य उनकी भाव-भंगिमा और तोतली बोलीसे आश्चर्य चकित और मुग्ध हो जाते थे। बालक निमाई भी उनकी तरफ देखता हुआ मुस्कराने लगता था, मानो कह रहा हो, तुमने मुझे बुलाया है और तुम ही मुझको पहिचान नहीं रहे, समय आने पर अवश्य ही पहिचानोगे। इस अद्भुत बालकसे श्रीअद्वैताचार्य बड़े प्रभावित होते थे।

इसी स्थान पर श्रीअद्वैताचार्यजीने जल-तुलसीके द्वारा पाञ्चरात्रिक विधानानुसार कृष्णकी आराधना की थी तथा जीवोंके दुःखोंको दूर करनेके लिए उनको हुंकार पूर्वक पुकारा था। इसी पुकारको सुनकर श्रीकृष्ण ही गौरांग रूपमें आविर्भूत हुए थे। इन्हींके भवनमें श्रीविश्वरूप, हरिदास ठाकुर, श्रीवास, गंगादास, शुक्लाम्बर, चन्द्रशेखर और मुरारीगुप्त आदि वैष्णवगण सम्मिलित होकर कृष्ण-कथा, रसमें निमग्न रहते थे। महाप्रभुजीके संन्यासके बाद ये शान्तिपुरमें रहने लगे। ये भी प्रतिवर्ष रथ-यात्राके अवसर पर जगन्नाथ पुरीमें श्रीमन्महाप्रभुजीके साथ मिलित होते थे।

(१४) श्रीगदाधर अंगन

वहाँसे दस गज पूर्वकी ओर गदाधर अंगन स्थित है। यहीं पर श्रीगदाधर पण्डितका वास-भवन था। इनके पिताजीका नाम श्रीमाधव मिश्र था। गदाधर पण्डित महाप्रभुजीके सहपाठी व प्रियबन्धु थे। महाप्रभुजी बचपनमें इनसे न्यायके विषयमें तर्क–वितर्क कर इनको तंग किया करते थे। महाप्रभुजी संन्यास लेनेके पश्चात् इनको संग लेकर श्रीजगन्नाथ पुरी गये। ये सदैव महाप्रभुजीके साथ पुरीमें ही रहे। इसीलिए इन्होंने क्षेत्र संन्यास लिया था। ये उच्चकोटिके विद्वान्, भागवत्के रसिक और सुमधुर वक्ता थे। श्रीमन्महाप्रभुजी इनके मुखसे श्रीमद्भागवतकी कथा सुनकर भावविभोर हो जाते। जगन्नाथपुरीमें श्रीगोपीनाथ टोटामें रहकर श्रीगोपीनाथजीकी सेवा करते और महाप्रभुजी इन्हींके पास आकर भागवतकी

कथा श्रवण करते थे। श्रीचैतन्य महाप्रभुजी अन्तमें इन्हींके सेवित श्रीगोपीनाथजीके श्रीमन्दिरमें प्रवेश कर श्रीविग्रहमें मिल गये। कुछ दिनोंके बाद ये भी अप्रकट लीलामें प्रवेश कर गये।

कहा जाता है कि इनको खड़े होकर श्रीगोपीनाथजीको पुष्पमाला पहिनाने व श्रृंगार करनेमें कष्ट होता था। इसलिए ठाकुरजी इनका कष्ट देखकर बैठ गये थे। तबसे वे बैठी हुई मुद्रामें ही विराजमान हैं। सर्वत्र ही श्रीराधाकृष्णके श्रीविग्रह खड़ी हुई मुद्रामें ही देखे जाते हैं। केवल यहीं पर बैठी हुई मुद्रामें हैं।

(१५) श्रीस्वरूप दामोदर

इनका पूर्वनाम श्रीपुरुषोत्तम आचार्य था। ये ब्रजलीलामें ललिता सखी थे। इनके पिताका नाम श्रीपद्मगर्भाचार्य एवं मातामह (नाना) का नाम श्रीजयराज चक्रवर्ती था। इनका आदि निवास भिटादियामें था। जयराज चक्रवर्ती श्रीधाम नवद्वीपवासी थे। इन्होंने अपनी कन्याका श्रीपद्मगर्भाचार्यके साथ विवाह कर उनको भी श्रीनवद्वीपमें वास कराया था। श्रीनवद्वीपमें ही पुरुषोत्तमका जन्म हुआ था। कुछ दिनोंके बाद पत्नी और पुत्रोंको नवद्वीपमें रखकर श्रीपद्मगर्भाचार्य वेदान्तका अध्ययन करनेके लिए मिथिला और काशी चले गये। काशीमें श्रीमाधवेन्द्र पुरीके गुरुदेव श्रीलक्ष्मीपतिसे वैष्णवी दीक्षा ग्रहण कर पुनः भिटादियामें लौटे। इन्होंने वहाँ दूसरा विवाह किया। इधर पुरुषोत्तम (स्वरूप दामोदर) श्रीनवद्वीप धाममें अपने नानाके घर पालित-पोषित होने लगे। ये श्रीमन्महाप्रभुके सहपाठी थे। श्रीमन्महाप्रभु संन्यास लेनेके पश्चात् श्रीपुरीधामको चले गये। ये भी काशी जाकर संन्यासी हो गये। इनका नाम स्वरूप दामोदर हुआ। इन्होंने काशीमें रहकर वेद-वेदान्तादि शास्त्रोंका अध्ययन किया, किन्तु शंकराचार्य द्वारा प्रचारित अद्वैत-वेदान्तका भाष्य इनको रुचिकर नहीं लगा। शीघ्र श्रीपुरी धाममें श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके चरणोंमें उपस्थित हुए। ये श्रीमन्महाप्रभुजीके साढ़े तीन जन अन्तरंग

भक्तोंमें भी सबसे प्रधान थे। समस्त शास्त्रोंके ज्ञाता, महाकवि, सरस-गायक, भागवतके रसिक और भावुक वक्ता, मर्मज्ञ, महासिद्धान्तविद्, श्रीमन्महाप्रभुके कीर्तन संगी एवं पुण्डरीक विद्यानिधि के पूर्व-सखा थे। इन्होंने कड़चा (स्वकृतसंस्कृत श्लोकों) में श्रीमन्महाप्रभुकी लीलाओंकी माला गूँथ रखी थी, जिसे श्रीरघुनाथदास गोस्वामीने श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामीको श्रवण कराया था। इसीके मूल-आधार पर श्रीचैतन्य-चरितामृत ग्रन्थकी रचना हुई है। कोई भी पद या रचना पहले स्वरूपदामोदर गोस्वामीको दिखलाकर बादमें श्रीमन्महाप्रभुजीको दिखलायी जाती थी। क्योंकि महाप्रभुजीको भक्ति-सिद्धान्त-विरुद्ध, रस-विरुद्ध या रसाभास सुनने पर बड़ा कष्ट होता था। ये विद्यापति, चण्डीदास और गीतगोविन्दके मधुर पदोंको श्रीमन्महाप्रभुजीको उनके भावानुरूप सुनाया करते थे। संगीतमें गंधर्वके और शास्त्रोंमें वृहस्पतिके समान थे। ये नित्यानन्द प्रभु एवं श्रीअद्वैताचार्यके अत्याधिक प्रिय थे। श्रीवासादि भक्तवृन्दके प्राणोंके समान थे। श्रीमन्महाप्रभुजीने रघुनाथदास गोस्वामीको इनके हाथोंमें समर्पित कर दिया था।

(१६) श्रीजगदानन्द पण्डित

ये श्रीमन्महाप्रभुके अन्तरंग भक्त, कीर्तनियां-संगी थे और श्रीमन्महाप्रभुके सिवाय कुछ भी नहीं जानते थे। पूर्वलीलामें ये श्रीकृष्ण पटरानी श्रीसत्यभामा देवी थे। ये पुरी-धाममें श्रीमन्महाप्रभुकी सेवा करते थे।

एक समय पण्डितजी गौड़ देशमें जाकर श्रीशिवानन्द सेनसे सुगन्धित चन्दन आदिका ठण्डा तेल संग्रह कर उसे एक कलशमें भरकर पुरीधाम ले गये। उस कलशको महाप्रभुजीके सेवक गोविन्दको देकर कहा 'इसे थोड़ा-थोड़ा प्रभुके सिरमें लगाना। इससे उनका पित्त और वायुका प्रकोप शान्त हो जायेगा।' किन्तु महाप्रभुजीने तेलका व्यवहार करनेसे मना कर दिया। जगदानन्दजीने

एक दिन पुनः तेलका व्यवहार करनेके लिए प्रार्थना की। इस पर महाप्रभु जी क्रोधित होकर बोले, "तेल ही क्यों ? एक मर्दनियाँकी भी व्यवस्था करो। वह मुझे प्रतिदिन तेल मर्दन करेगा। क्या इन्हीं सुखोंके लिए मैं संन्यासी हुआ हूँ ? इससे तुम्हारा क्या बिगड़ेगा, मेरा तो सर्वनाश होगा। लोग मुझे दारी (साथमें स्त्री रखनेवाला) संन्यासी कहेंगे और तुम लोग भी मेरी हंसी उड़ाओगे। तुम बड़े परिश्रमसे गौड़ देशसे इस तेलको लेकर आये हो। श्री जगन्नाथजीके मन्दिरमें प्रदीप जलानेके लिए इसे दे आओ। मैं संन्यासी हूँ इसे ग्रहण नहीं कर सकता।" ऐसा सुनकर जगदानन्दके धैर्यका बाँध टूट गया। उन्होंने तेल भरे कलशको मिट्टीमें पटक दिया, कलश फूट गया और तेल चारों ओर बिखर गया। जगदानन्दजीने अपनी भजन कुटीमें जाकर भीतरसे किवाड़ लगा लिये। तीन दिन तक कुछ भी खाया पिया नहीं, केवल रोते रहे। महाप्रभु अत्यन्त गम्भीर होने पर भी स्थिर नहीं रह सके। वे चौथे दिन प्रातःकाल इनकी भजन-कुटी पर पहुँचे और बोले 'मैं समुद्र-स्नान करने जा रहा हूँ, बडी भूखलगी है, जल्दीसे रसोई बनाओ, मैं अभी लौटकर आ रहा हूँ।' श्रीजगदानन्द समस्त अभिमानको भूल, स्नान कर रंधन कार्य(रसोई) में जुट गये। थोड़ी ही देरमें रसोई तैयार हो गयी। महाप्रभु भी स्नान कर लौट आये। पण्डितजीने सुन्दर आसन लगाकर महाप्रसाद परोस दिया। महाप्रभुजीने कहा, 'आज हम दोनों एक साथ महाप्रसाद सेवन करेंगे। ऐसा कहकर चुपचाप बैठ गये। पण्डितजीने दूसरी ओर मुख करके कहा, 'आप पहले ग्रहण करें मैं बादमें ग्रहण करुँगा। प्रभुने कहा 'देखो ! तुम्हारी बात झूठी नहीं होने पाय। इन्होंने उत्तरमें कहा, "कदापि झूठी नहीं होगी। मैं आपके आदेशका कभी भी उल्लंघन नहीं कर सकता।" प्रभुने पेट भरकर परम-तृप्तिके साथ प्रसाद सेवा की और गोविन्दसे बोले, "जगदानन्दके प्रसाद

सेवा करने पर मुझे संवाद देना ।"

जगदानन्दजीको प्रभुका कठोर वैराग्य अच्छा नहीं लगता था। महाप्रभु भूमिमें केवल अपना उत्तरीय-वस्त्र बिछाकर विश्राम करते थे । जगदानन्दने गेरुआ वस्त्रमें हल्की सी रुई भरवाकर महाप्रभुजीके विश्रामके स्थान पर रख दिया । प्रभुजीने पूछा, "यह बिछौना किसने किया ?" गोविन्दने बताया, "जगदानन्दजीने ।" जगदानन्द का नाम सुनकर प्रभु कुछ बोले तो नहीं, किन्तु उस शैय्याको बाहर फैंक दिया । स्वरूप-दामोदरने जगदानन्दके व्यवहारका समर्थन किया, इस पर प्रभुने कहा 'एक सुन्दर पलंग भी ले आओ । तुम सभी मुझे विषय-भोग कराना चाहते हो । मैं संन्यासी हूँ । संन्यासीको भोगोंसे दूर रहना ही उचित है ।'

इस बार प्रेम-कलह तो नहीं हुआ, किन्तु पण्डितजीने कहा, 'मैं वृन्दावन जा रहा हूँ ।' प्रभुजीने उत्तर दिया, "तुम मुझ पर क्रोधित होकर वृन्दावन जा रहे हो ।" मुझ पर दोषारोपण कर भिखारी बनने जा रहे हो । इधर स्वरूप-दामोदर ने कदली-वृक्षके छिलकेको चीर-चीरकर पुराने बहिर्वासमें भरकर प्रभुजीसे व्यवहार करनेके लिए स्वीकृति ले ली थी । इसके पश्चात् जगदानन्दजीका अभिमान दूर होने पर वृन्दावन जानेकी उन्हें अनुमती दी थी ।

जगदानन्दजी वृन्दावनमें श्रीसनातन गोस्वामीके पास ठहरे । एकदिन ये खिचड़ी पका रहे थे । उसी समय सनातन गोस्वामी अपने मस्तक पर लाल कपड़ा बाँधकर उपस्थित हुए । जगदानन्द पण्डितने सोचा कि यह वस्त्र श्रीमहाप्रभुजीका प्रसाद होगा । इसलिए इन्होंने सनातन गोस्वामीसे पूछा, "यह वस्त्र कहाँसे मिला, क्या प्रभुजीने यह दिया है?" सनातन गोस्वामीने उत्तर दिया, "मुकुन्द सरस्वतीने मुझे इसे उपहारमें दिया है ।" अद्वैतवादी संन्यासीका यह वस्त्र है, ऐसा सुनकर जगदानन्दजी क्रोधसे जल उठे, उनको होश नहीं रहा तथा वे गर्म खिचड़ी की हाड़ीको उठाकर सनातन

गोस्वामीको मारने दौड़े और बोले,"आप महाप्रभुजीके प्रधान पार्षद और परम प्रिय हैं । फिर भी अन्य मायावादी संन्यासीका वस्त्र अपने सिर पर धारण कर रखा है, मैं इसे सहन नहीं कर सकता। सनातन गोस्वामी बुद्धिमान, सहिष्णु एवं परम भागवत थे । श्री-महाप्रभुजीके प्रति उनकी ऐसी दृढ़-निष्ठा देखकर बड़े प्रसन्न हुए और बोले, "तुम्हारे सौभाग्यकी सीमा नहीं । प्रभु तुम्हें आन्तरिक स्नेह करते हैं । तुमको प्रेम-कलहके माध्यमसे अमृत पान कराते हैं, किन्तु मुझको प्रतिष्ठा देनेके बहाने नीम-रसका पान कराते हैं ।"

एक समय जगन्नाथ पुरीमें श्रीसनातन गोस्वामी रथयात्राके समय महाप्रभुजीके दर्शनके लिए पधारे । वे झाड़-खण्डके गम्भीर वनसे होकर गये थे । मार्गमें मच्छरोंके डंसने तथा नदी-नालोंके पानी-पीनेसे उनके शरीर पर फुन्सियां हो गयीं थीं और उनमें से रस (पीप) निकलता था । महाप्रभुजी देखते ही बड़े प्रेमसे इनको आलिंगन किया करते थे । सनातन गोस्वामी बड़े दुःखी होते और इसके लिए महाप्रभुजीको निषेध करते, किन्तु महाप्रभुजी मानते नहीं थे। सनातन गोस्वामीने एक दिन बहुत दुःखी होकर श्रीजगदानन्दजीसे पूछा, "मेरा कर्त्तव्य क्या है ?" पण्डितजीने बताया, "आपका यहाँ रहना उचित नहीं जान पड़ता । रथ-यात्राके पश्चात् वृन्दावन लौट जाना ही श्रेयस्कर है ।" किसी प्रकार महाप्रभुजीको इस बातका पता लगने पर अत्यन्त दुःख हुआ और सनातनसे बोले, "जगा कलका पढ़ुआ (छात्र) इतना अहंकारी हो गया है कि तुम जैसे गुरु तुल्य मेरे उपदेशक तुमको भी वह उपदेश देने लग गया है ।" सनातन ऐसा सुनकर बोले,"जगदानन्द आपका कितना प्रिय है ? आज मैं समझा ।" महाप्रभुजीने कहा, "मैं मर्यादाका लंघन सहन नहीं कर सकता । वैष्णवोंका शरीर कभी-भी प्राकृत नहीं होता । मेरी परीक्षाके लिए ही आज श्रीकृष्णने तुम्हारे श्रीअंगमें यह खुजलीका रोग दिया है । यदि मैं तुम्हारे शरीरको आलिंगन

नहीं करता तो मेरा वैष्णव-अपराध होता । तुम्हारे शरीरसे मुझे मलय-चन्दनकी अपेक्षा भी अधिक सुगन्ध आती है ।"

श्रीस्वरूप दामोदर एवं जगदानन्दके वास-स्थानका कुछ निर्दिष्ट-चिह्न नहीं पाया जाता है, किन्तु श्रीमन्महाप्रभुके वास-स्थानके समीप ही इनका वास स्थान था ।

(१७) श्रीचन्द्रशेखर भवन

श्रीचन्द्रशेखर आचार्य श्रीमन्महाप्रभुके अत्यन्त आत्मीय थे । ये बड़े विद्वत् पुरुष 'आचार्य रत्न' के नामसे भी प्रसिद्ध थे । इनका वास स्थान 'व्रजपत्तन' के नामसे प्रसिद्ध है । श्रीमन्महाप्रभुजीने यहीं पर रुक्मिणीके भावसे नृत्य किया था । महाप्रभुजीका वह अभिनय वंगदेशके इतिहासमें रंगमंच पर प्रथम अभिनय है । यहीं पर जगद्-गुरु श्रील भक्ति-सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरने उन्नीससौ अठारह ई० में श्रीचैतन्य मठकी स्थापना की थी । यहींसे समग्र-विश्वमें गौड़ीय मठोंकी शाखा-प्रशाखाओंकी स्थापना की । आज विश्वभरमें जो गौरनाम एवं कृष्णनामका प्रचार-प्रसार हो रहा इसका मूल आकर स्थान यह चैतन्य मठ ही है । श्रील भक्तिविनोद ठाकुर एवं श्रील सरस्वती ठाकुरके प्रयाससे आज विश्वभरमें गौड़ीय वैष्णवोंकी विचार-धारा प्रवाहित हो रही है । महाप्रभुजीकी वाणी-

पृथिवी पर्यन्त यत आछे देशग्राम ।
सर्वत्र सञ्चार हइवे मोर नाम ॥

पूर्णरूपसे सार्थक हुई है ।

(१८) श्रील भक्ति-सिद्धान्त-सरस्वती गोस्वामी ठाकुरका समाधि-मन्दिर

विश्व-विख्यात् जगद्गुरू श्रीलभक्ति-सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरकी यहाँ समाधि है । छह फरवरी सन् १८७४ ई० में माघी कृष्ण पञ्चमी तिथिको पुरीधाममें इस महापुरुषका आविर्भाव हुआ था ।

पिताका नाम श्रील भक्तिविनोद ठाकुर तथा माताका नाम श्रीभगवती देवी था । बचनपमें ही इनमें महापुरुषके समस्त लक्षण दृष्टिगोचर होते थे । श्रील भक्तिविनोद ठाकुरने बाल्यकालमें ही इनको हरिनाम एवं नृसिंह मन्त्रराज प्रदान किया था । आठ-नौ वर्षकी आयुमें श्रीभक्तिविनोद ठाकुरने बालक विमला प्रसादको कूर्मदेवकी पूजाके मन्त्र एवं अर्चन विधिकी शिक्षा देकर घरकी दीवारसे प्रकटित भगवान् श्रीकूर्मदेवकी पूजामें नियुक्त किया । कुछ ही दिनोंमें इनकी पाण्डित्य-प्रतिभाको देखकर विद्वत् मण्डलीने इन्हें श्रीसिद्धान्त सरस्वती की उपाधिसे विभूषित किया । सन् १९०० ई० में श्रीगोद्रुम-द्वीपके अन्तर्गत स्वानन्द-सुखद् कुञ्जमें परम-अकिंचन हरिनाम-परायण श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराजसे इन्होंने भागवती-दीक्षा प्राप्त की। १९१८ ई० में त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण कर श्रीगौर-जन्मोत्सवके समय श्रीचैतन्य मठकी स्थापना कर श्रीश्रीगुरु-गौरांग-राधागोविन्द विग्रहकी प्रतिष्ठा की । यहींसे भारतवर्ष एवं विश्वके विभिन्न भागोंमें श्रीचैतन्य महाप्रभुके आचरित एवं प्रचारित श्रीकृष्णनाम और प्रेमका प्रचार करना प्रारम्भ किया । उन्होंने श्रीनवद्वीप-धाम-परिक्रमा, सुयोग्य शिष्यों को संन्यास दान, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, तेलगू, तामिल, असमिया और अँग्रेजी आदि विविध भाषाओंमें मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक गौड़ीय पत्र-पत्रिकाओंका प्रकाशन, भक्ति-ग्रन्थोंका प्रकाशन, योग्य प्रचारकोंको ग्राम-ग्राममें भेजकर थोड़े दिनोंमें ही शुद्धा-भक्तिका अभूतपूर्व प्रचार किया । प्रमुख-प्रमुख स्थानोंमें गौड़ीय मठोंकी स्थापना की । श्रीगौर-जन्म-स्थान 'योगपीठ' में एक वृहत् श्रीमन्दिरका निर्माण कराया । अन्तमें इन्होंने १ जनवरी १९३७ ई० में श्रीराधाकृष्णकी निशान्त लीलामें प्रवेश कर अप्रकट लीलाका आविष्कार किया ।

(१९) श्रीलगौरकिशोर दास बाबाजी महाराजकी समाधि

श्रीलगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज श्रील भक्ति-सिद्धान्त-सरस्वती ठाकुरके दीक्षा-गुरू थे । इन्होंने पहले व्रजके श्रीवृन्दावन,

श्रीगोवर्धन, श्रीराधाकुण्ड, श्रीश्यामकुण्ड, श्रीसूर्यकुण्ड एवं नन्दग्राम आदि कृष्णलीला-स्थलियोंमें रहकर, कठोर वैराग्यका अवलम्वन करते हुए भजन किया । बादमें श्रीनवद्वीप धाममें पधारकर वहाँ महा-विप्रलम्भ भावसे भजन करते थे । विषयी लोगोंके संगसे बचनेके लिए नवद्वीप म्युनिसिपैलिटी (नगर पालिका) द्वारा निर्मित शौचालयमें गुप्त रूपसे रहकर भजन करते थे । उसका किवाड़ जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षकके आने पर भी नहीं खोलते थे, किन्तु हमलोगोंके परमाराध्य जगद्गुरु श्रीश्रील भक्ति-प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज (उससमय श्रीविनोदबिहारी ब्रह्मचारी) के आगमन पर तथा अपनेको श्रीलसरस्वती ठाकुरके कृपा-पात्रके रूपमें परिचय देने पर बड़े प्रेमसे दरवाजा खोलकर दर्शन दिये और शुद्धरूपसे भजन करनेका आदेश दिया । ये एक सिद्ध महापुरुष थे । तीव्र वैराग्यके कारण ये अन्धे हो गये थे । फिर भी प्रतिदिन उच्च स्वरसे हरिनाम करते हुए गंगापार गोद्रुम स्थित स्वानन्द-सुखद् कुञ्जमें श्रीभक्ति-विनोद ठाकुरजीके यहाँ हरिकथा श्रवण करनेके लिए उपस्थित होते थे । ये १७ नवम्बर १६१५ ई० में उत्थान एकादशीके दिन अप्रकट हुए थे । श्रीलसरस्वती ठाकुरने 'संस्कार-दीपिका' के विधानानुसार अपने हाथोंसे प्राचीन कुलिया (वर्तमान नवद्वीप शहरमें) स्थित 'नूतन चड़ा' में अपने श्रीगुरुदेवको समाधि प्रदान की थी । कुछ दिनोंके बाद गंगाकी बाढ़में बह जानेका भय उत्पन्न होने पर श्रीलसरस्वती ठाकुरने उस समाधिको स्थानान्तरित कर यहीं पुनः राधाकुण्डके तटपर स्थापित कर दिया ।

(२०) श्रीराधाकुण्ड और श्रीश्यामकुण्ड

श्रील प्रभुपादने प्राचीन श्रीपृथुकुण्ड या बल्लाल दीघीके तट पर चन्द्रशेखर भवनके सन्निकट ही श्रीराधाकुण्ड और श्रीश्यामकुण्डका प्रकाश किया । वे इसीके तट पर बड़े विप्रलम्भ भावसे श्रीश्रीराधा कृष्ण और श्रीगौरसुन्दरका भजन करते थे । इन दोनों कुण्डोंको

देखते ही व्रज-स्थित श्रीश्यामकुण्ड और श्रीराधाकुण्डकी स्मृति हृदयमें उदित हो आती है । सन्निकट ही एक सघन कटहलका वृक्ष है । जिसके नीचे बैठकर श्रीविनोदबिहारी ब्रह्मचारी (अस्मदीय गुरुदेव) श्रीलसरस्वती प्रभुपादकी जमींदारीकी देखरेख करते तथा श्रीचैतन्य मठकी सब प्रकारकी व्यवस्था करते थे ।

(२१) पृथुकुण्ड या बल्लाल दीघी

गंगानगरके पूर्वमें एक सुन्दर सरोवर है, लोग इसे बल्लाल दीघी कहते हैं । सत्ययुगमें पृथु नामक एक महाप्रतापी सम्राट हुए थे । इन्होंने पृथ्वीके ऊबड़-खाबड़ भागोंको समतल कर लोगोंके रहने योग्य एवं उनकी जीविका-निर्वाहके लिए कृषि-योग्य बनाया था । जब इन्होंने यहाँ आकर इस स्थानको भी समतल करना चाहा, उस समय उन्होंने यहाँ चारों ओरसे उठती हुई एक महा-ज्योतिर्मयी आभाको देखा । पृथु महाराज भगवान्‌के शक्त्यावेश अवतार हैं । इस ज्योतिर्मयी आभाका रहस्य जाननेके लिए वे ध्यानाविष्ट हुए । उन्होंने ध्यानावस्थामें देखा कि यह स्थान वृन्दावनसे अभिन्न श्रीधाम नवद्वीप है । यहीं पर अगले कलियुगमें स्वयं भगवान् ब्रजेन्द्रनन्दन श्यामसुन्दर अपने किसी विशेष उद्देश्यकी पूर्तिके लिए अपनी प्रियतमा महाभाव-स्वरूपा श्रीमती राधिकाजीकी अंगकान्ति एवं उनके आन्तरिक भावोंको ग्रहणकर शचीनन्दन गौरहरिके रूपमें आविर्भूत होंगे । वे अपने परिकरोंके साथ विविध प्रकारकी प्रेममयी लीलाएँ करेंगे तथा विश्वभरमें कृष्णनामका प्रचार कर कृष्णप्रेमका दान करेंगे । इन्होंने श्रीमन्महाप्रभुजीका दर्शन किया । महाप्रभुजीने इन्हें इस स्थानका माहात्म्य अभी गुप्त रखनेका आदेश दिया तथा इस स्थान पर एक सुन्दर कुण्ड निर्माणका निर्देश भी दिया । पृथु महाराजजीने महाप्रभुजीके आदेशानुसार एक सुन्दर कुण्डका निर्माण करवाया, जो बादमें पृथु-कुण्डके नामसे विख्यात हुआ । इसका जल अत्यन्त निर्मल और सुमधुर था ।

तत्पश्चात् श्रीलक्ष्मणसेन यहाँके राजा हुए । उन्होंने इस कुण्डको और भी अधिक गहरा एवं बड़ा करवा दिया । अब इसका नाम बल्लाल दीघी हो गया है । पास ही महाराजा श्रीलक्ष्मण सेनके भवनका भग्नावशेष एक ऊँचे टीलेके रूपमें पड़ा हुआ है ।

(२२) श्रीमुरारी गुप्तका श्रीपाट

यह स्थान योगपीठ मन्दिरसे पूर्वकी ओर बल्लालदीघीके तटपर स्थित है । यहाँ श्रीरामसीता और मुरारीगुप्तका श्रीमन्दिर है । मुरारीगुप्तका यहाँ श्रीपाट है, अर्थात् यहीं पर इनका घर था । ये महाप्रभुजीके परिकर, सहपाठी, सर्वविद्या-विशारद, बड़े मधुर कीर्त्तनियाँ और नृत्य-विशारद् थे । ये श्रीचैतन्य-चरित्र ग्रन्थके लेखक हैं । ये श्रीहट्टमें प्रसिद्ध वैद्य-वंशमें आविर्भूत हुए थे । बादमें श्रीधाम नवद्वीपमें आकर बस गये । ये आयुमें महाप्रभुजीसे कुछ बड़े थे । यद्यपि ये महाप्रभुजीसे उच्च-श्रेणीमें अध्ययन करते थे और तीक्ष्ण, मेधावी छात्र थे, फिर भी बालक निमाई न्यायशास्त्रके कूट-तर्कोंसे इनको परास्त कर देते । कभी-कभी जिस तत्त्वकी ये प्रतिष्ठा करते, निमाई उसका खण्डन कर देते । पुनः निमाई जिस विषयकी स्थापना करते थे उसका खण्डन कर देते । इनके पराजित होने पर भी श्रीनिमाई इनकी तीक्ष्ण-बुद्धि और शास्त्र-ज्ञानकी प्रशंसा करते थे । गयासे लौटने पर ये महाप्रभुकी संकीर्त्तन-गोष्ठीमें सम्मिलित होकर श्रीवास आदिके घरमें नृत्य और कीर्त्तन किया करते थे । सुस्वरसे श्रीभागवतीय-श्लोकोंका गायन करने पर श्रीमन्महाप्रभुजी भाव-विभोर हो जाते और साथमें ये भी रोने लगते थे । इनके घर पर ही महाप्रभुजीने एकबार अपना श्रीवराह रूपका दर्शन कराया था । पूर्वलीलामें ये श्रीरामजीके अद्वितीय सेवक हनुमान हैं। इनकी रामजीमें ऐकान्तिक निष्ठा थी ।

एक बारकी बात है कि श्रीमन्महाप्रभुजीने इनकी ऐकान्तिकता की परीक्षा करनेके लिए इनके निकट श्रीव्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्णके

महत्व सर्वेश्वरेश्वरेश्वर तत्त्वका वर्णन किया, साथ ही श्रीकृष्णके असाधारण गुणों एवं चारों माधुरियोंका वर्णन किया, जो अन्य अवतारोंमें नहीं पायी जातीं । इसप्रकार इनको कृष्ण-भजन करनेके लिए उत्साहित किया । इन्होंने महाप्रभुजीके वचनोंसे प्रभावित होकर कृष्ण-भजन करनेकी सम्मति दे दी और अपने घर लौट गये । दूसरे दिन प्रातः काल ही रोते-रोते बड़े व्याकुल होकर श्रीमन्महाप्रभुके चरणोंमें गिर गये और बोले, "अब मुझे प्राण त्यागनेके सिवाय अन्य उपाय नहीं दीखता । कल मैंने आपको कृष्ण-भजन करनेकी स्वीकृति दी थी । आपका आदेश पालन करना मेरा परम कर्त्तव्य है । दूसरी ओर मैंने श्रीरामचन्द्रके चरणोंमें अपना सर्वस्व समर्पण कर रखा है । श्रीरामचन्द्रजीको त्याग करनेकी कल्पना-मात्रसे मेरा हृदय फटने लगा और रातभर मुझे चैन नहीं मिला । एक ओर मैं श्रीरामचन्द्रको छोड़ नहीं सकता, दूसरी ओर आपके आदेशका उल्लंघन भी नहीं कर सकता । ऐसी स्थितिमें मेरा मर जाना ही उचित है ।

श्रीमन्महाप्रभुजी रामके प्रति इनकी ऐसी ऐकान्तिकी भक्ति देखकर बहुत सन्तुष्ट हुए और इनको श्रीराम-भजनके लिए ही आदेश दिया ।

एक बार श्रीवास पण्डितके घर श्रीगौर-नित्यानन्द दोनों ही एक साथ बैठे हुए थे । मुरारीगुप्तने पहले गौरचन्द्र और बादमें श्रीनित्यानन्द प्रभुको प्रणाम किया । श्रीमन्महाप्रभु इनके इस व्यवहारसे असंतुष्ट हुए और बोले, 'तुमने वैष्णव-सदाचारका उल्लंघन किया है ।' पुनः रातको स्वप्नमें नित्यानन्द प्रभुजीकी महिमा बतलायी । श्रीनित्यानन्द प्रभु अखण्ड गुरु-तत्त्व हैं । पहले इनकी पूजा तत्पश्चात् भगवत्-पूजा होती है । इसका उल्लंघन करनेसे भगवान् भी उनकी पूजा ग्रहण नहीं करते । ऐसा स्वप्न देखकर दूसरे दिन प्रातः पहले नित्यानन्द प्रभु एवं बादमें महाप्रभुजीको प्रणाम किया । इससे

श्रीमन्महाप्रभुजी अत्यन्त संतुष्ट हुए। श्रीमुरारीगुप्त बड़े प्रसिद्ध वैद्य थे। बड़ी दूर-दूरसे लोग अपनी चिकित्साके लिए इनके पास आया करते थे, परन्तु यथार्थमें यह भवरोगके वैद्य थे। कभी भावावेशमें महाप्रभुजी चतुर्भुज नारायणके भावमें आविष्ट होकर गरुड़-भाव प्राप्त हुए मुरारी गुप्तके कन्धे पर चढ़ जाते थे। महाप्रभुजीके संन्यास ग्रहण कर पुरी चले जाने पर रथयात्राके समय ये प्रतिवर्ष पुरी जाया करते थे।

(२३) श्रीधर-अंगन

अन्तर्द्वीप श्रीधाम मायापुरकी शेष सीमामें उत्तर-पूर्वके कोनेमें यह स्थान स्थित है। यह चाँदकाजीकी समाधिके निकट उसके दक्षिण-पूर्वमें है। यहाँ कदली-काननके बीचमें श्रीगौर-नित्यानन्द प्रभुजी के परमप्रिय निष्किंचन भक्तराज श्रीधरजीका टूटा-फूटा घर था। भक्त श्रीधर कृष्णलीलाके कुसुमासव गोपाल सखा हैं। निमाई पण्डित प्रतिदिन नियमित रूपसे गंगाके तटपर इनसे मिलते थे। वहीं पर रास्तेके ऊपर श्रीधर केलेके पत्ते, मोचा (केलेके फूल), उसकी कोमल डण्डियाँ, केलेके कच्चे-पक्केफल, घरमें उत्पन्न लौकी-बैंगन इत्यादि थोड़ीसी सब्जियाँ लेकर बैठते थे। बिक्रीसे प्राप्त आधे पैसोंसे पुष्पादि खरीदकर गंगाजीकी पूजा करते और आधे-पैसोंसे जीवन-निर्वाह करते हुए दिनरात भजन करते थे। इनकी सब्जियाँ महाप्रभुजीको बड़ी प्रिय लगतीं थीं। ये प्रतिदिन कभी एक लौकी, कभी केलेका फूल, कभी पका हुआ एक केला उठा लेते थे। तब आपसमें छीना-झपटी होने लगती, बूढ़े और बालककी यह कलह बड़ी ही मधुर लगती थी। महाप्रभुजी बिना कोई स्थूल-मूल्य दिये ही उन्हें ले लिया करते थे। इधर श्रीधरजी बिगड़ कर उनका हाथ पकड़ लेते थे और कहते, "मैं गरीब ब्राह्मण दान करनेके लिए इतना सामान कहाँसे लाऊँ? मुझे गंगाजीकी पूजा भी तो करनी है।" महाप्रभुजी कहते, "मैं गंगाका पति हूँ। मेरी

सेवा करनेसे वे प्रसन्न हो जायेंगी।" श्रीधरजीने उत्तर दिया, "तुम्हें भगवान्‌का भी डर नहीं रहा। तुमको गंगाका पति कहनेका अपराध लगेगा।" महाप्रभुजी हँसकर कहते, "एक दिन मेरी इस बातको तुम स्वयं स्वीकार करोगे।" श्रीमन्महाप्रभुजीने श्रीवास अंगनमें अपने सात-प्रहरिया भाव प्रकट करने पर भक्त श्रीधरको बुलवाकर श्रीकृष्ण-प्रेम प्रदान किया था। ये कृष्णप्रेममें विभोर होकर हा कृष्ण! हा कृष्ण! कहकर मूर्च्छित हो गये।

काजीदलनके पश्चात् श्रीमन्महाप्रभुजी विराट नगर-संकीर्तनके साथ यहाँ पधारे थे और भक्त श्रीधरके फूटे हुए लौह जलपात्रसे स्वयं जलपान किया और तृप्त होकर श्रीधरकी महती प्रशंसा करने लग गये। गृहत्यागके दिन शामको ये श्रीधरजीसे मिले थे और इनसे उपहार स्वरूप प्राप्त एक लौकी, मैयाके हाथमें देकर 'लकलकी' (दूध और चीनीमें पकायी हुई लौकीकी खीर) प्रस्तुत करनेको कहा। प्रस्तुत होने पर उसका ठाकुरजीको भोग लगाकर श्रीमन्महाप्रभुजीने बड़ी तृप्तिके साथ महाप्रसाद पाया था।

(२४) श्रीचाँदकाजीकी समाधि

यह स्थान अन्तर्द्वीपकी शेष सीमासे लगा हुआ सीमन्तद्वीपमें स्थित है। पासमें ही मौलाना सिराजुद्दीन चाँदकाजीका राजभवन था। उसी मौहल्ले या ग्राममें शचीदेवीके पिता श्रीनीलाम्बर चक्रवर्ती निवास करते थे। चाँदकाजी बंगालके प्रधान शासक हुसैनशाह बादशाहका एक उच्च कर्मचारी था। उस समय नवद्वीपका प्रशासक एवं न्यायाधीश भी वही था। कुछ लोग उसे बादशाहाका गुरु भी मानते हैं। पहले यह हिन्दू-धर्मका कट्टर विरोधी था। उसने श्रीवास-अंगनमें कीर्त्तनके समय मृदंग (खोल) को तोड़ दिया था। तथा संकीर्त्तनके विरोधमें निषेधाज्ञा जारी की थी। महाप्रभुजी उस निषेधाज्ञाके विरुद्ध लाखों नवद्वीप वासियोंको शामके समय संग लेकर लाखों जलती हुई मशालोंके साथ बहुतसे मृदंगों और करतालोंसे

कीर्तन करते हुए चाँदकाजीके घर पहुँचे । चाँदकाजी भयभीत होकर घरके भीतर छिप गया । महाप्रभुजीने किसी प्रकार उसे घरसे बुलवाकर निर्भय होनेको कहा । श्रीमन्महाप्रभुजीने कहा, 'आप ग्रामके सम्बन्धसे मेरे मामा लगते हैं । मैं आपका स्नेह चाहता हूँ । आप क्यों छिप रहे हैं ?' चाँदकाजीने उत्तर दिया, "मृदंग तोड़नेके पश्चात् मैं घर लौटा । रातमें सो रहा था कि अचानक एक नृसिंह-मूर्ति मेरी छाती पर सवार हो गयी और अपने नाखूनोंको मेरी छातीमें घुसा दिया । फिर क्रोधित होकर, काँपते हुए बोले, 'आज मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ । याद रखना, भविष्यमें यदि तुमने फिर कभी संकीर्तनमें बाधा दी तो जानसे मार डालूँगा ।' यह भयानक दृश्य देखकर मेरी नींद खुल गयी । देखो, अभी भी मेरी छातीमें उनके नाखूनोंके चिह्न बने हुए हैं । मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजसे मैं और मेरे वंशका कोई व्यक्ति संकीर्तनमें बाधा नहीं डालेगा । यदि किसीने ऐसा किया तो मैं उसे तलाक दे दूँगा ।" श्रीमन्महाप्रभुजीने उससे पूछा, "आप यह तो बतलाइये कि आप गो वध क्यों करते हैं ? गाय तो हिन्दु और मुसलमान सभीकी माता है । हिन्दू और मुसलमान दोनोंको ही दूध पिलाती है ।" उन्होंने उत्तर दिया, "हमारे कुरानशरीफमें गो वधका कोई भी उल्लेख नहीं है । जो लोग ऐसा करते हैं, वे कुरानके विरुद्ध करते हैं ।" चाँदकाजी तभीसे भक्त हो गया । परलोक गमनके पश्चात् यहीं पर उनकी समाधि दी गयी । इसी समाधि-स्थल पर पाँचसौ वर्ष पुराना 'गोलोक चम्पक' का एक विशाल वृक्ष इस बातका साक्षी है । श्रीगौर-भक्त-वैष्णवगण आज भी चाँदकाजीकी समाधिकी श्रद्धासे परिक्रमा करते हैं । ऊपरमें इस वृक्षकी केवल छाल ही दिखायी देती है । भीतरमें कुछ भी सार अंश नहीं है । फिर भी यह फूलोंसे सदा भरा रहता है ।

(२५) श्रीईशोद्यान-श्रीनन्दनाचार्यजीका भवन

अन्तर्द्वीपके दक्षिण भागमें शेष सीमा पर गंगा एवं सरस्वती (खड़िया नदी) के संगम पर इन दोनोंके बीचमें ईशोद्यान अवस्थित है । यहाँ सुन्दर उपवन था । जिसमें हिरन, नीलगाय और छोटे-छोटे जंगली पक्षी विहार करते थे । श्रीनन्दनाचार्य यहीं पर रहकर भजन करते थे । श्रीनित्यानन्दप्रभु सर्वप्रथम यहाँ आकर छिप गये थे । उन्होंने सोचा सचमुच यदि हमारे छोटे भैया 'कन्हैया' गौरांग रूपमें यहाँ प्रकट हुए हैं, तो स्वयं ही निकट आ जायेंगे । श्रीमन्महाप्रभुजी उनकी अभिलाषाको जानकर कुछ परिकरोंको साथ लेकर यहाँ उपस्थित हुए थे । दोनों परस्पर मिलकर भावाविष्ट हो गये । पीछे उन्हें अपने साथ श्रीवास-अंगनमें ले गये, तबसे ये सदैव गौरचन्द्रके साथ ही रहे । ये दोनों प्रभु ईशोंके भी ईश हैं, इसलिए इनके मिलन स्थानको ईशोद्यान कहते हैं । अब यहाँ बहुतसे गौड़ीय मठोंकी स्थापना हो गयी है । यहाँ विशाल एवं गगनचुम्बी मन्दिर खड़े हैं ।

❋❋❋❋
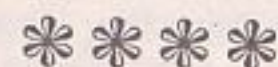
श्रीधाम मायापुर ईशोद्यानके अन्तर्गत गौड़ीय मठ समूह-एवं श्रीश्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर 'प्रभुपाद'

श्रीगंगाके पूर्वी तट पर आजकल श्रीमायापुर योगपीठसे आरम्भ कर दक्षिणमें श्रीगंगा और जालङ्गी (खड़िया नदी) के संगम स्थल तक गगन-चुम्बी श्रीगौड़ीय मठ मन्दिरोंकी एक सुसज्जित श्रृंखला विराजमान है । नित्यलीला प्रविष्ट जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद अष्टोतर- शतश्री श्रीश्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती 'प्रभुपाद' श्रीब्रह्म-माध्व- गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायके एक बड़े प्रतिभाशाली आचार्य हुए हैं । ये प्रकाण्ड-विद्वान्, बहुभाषाविद्, सहज-अप्राकृतकवि, अद्‌भुत महाले-खक, भक्तितत्त्वादिके गवेषक, निरपेक्ष सत्यके निर्भीक कुशलवक्ता भक्ति-विरोधी सहजिया और निर्विशेष अद्वैतवाद-मायावादके प्रखर विखण्डक, श्रीमद्भागवतके सुसिद्धान्तपूर्ण और सुरसिक व्याख्याता, श्रीमन्महाप्रभुके आचरित और प्रचारित श्रीहरिनाम संकीर्तन एवं प्रेम-धनके असमोर्द्ध प्रचारक आचार्य थे । इन्हीं महापुरुषकी कृपासे विश्वमें सर्वत्र ही महाप्रभुकी वाणीका प्रचार सम्भव हुआ है । सर्वत्र ही शुद्धाभक्तिके प्रचारकेन्द्र-मठ-मन्दिरोंकी और आश्रमोंकी स्थापना हुई है । विश्वकी प्रमुख भाषाओंमें श्रीमद्भागवत, श्रीमद्‌गीता, श्री चैतन्य-चरितामृत, श्रीभक्ति-रसामृत-सिन्धु, उज्ज्वलनीलमणि, जैवधर्म आदि भक्तिशास्त्रोंके संस्करण प्रकाशित हुए हैं । इन्होंने अपने अनेकों सुयोग्य शिष्योंके हृदयमें अलौकिक शक्तिका संचार कर उन्हें ब्रह्माण्डको तारने योग्य बनाकर प्रस्तुत किया । जिन्होंने अति-अल्प समयमें ही सम्पूर्ण विश्वमें शुद्धा-भक्तिका प्रचारकर अपने आराध्य श्रीगुरुदेवका अभीष्ट पूर्ण किया । उनके ऐसे शिष्योंमेंसे कुछ त्रिदण्डि आचार्योंके नाम निम्नलिखित हैं–

ॐविष्णुपाद श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव महाराज, श्रीमद्भक्ति प्रदीप तीर्थ महाराज, श्रीभक्ति-विलास तीर्थ मराहाज, श्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर महाराज, श्रीमद्भक्ति गौरव वैखानस महाराज, श्रीमद्भक्ति केवल औडुलोमी महाराज, श्रीमद्भक्ति प्रकाश अरण्य महाराज श्रीमद्भक्ति विज्ञान आश्रम महाराज, श्रीमद्भक्ति हृदय वन महाराज, श्रीमद्भक्ति सारंग गोस्वामी महाराज, श्रीमद्भक्ति सर्वस्व गिरि महाराज, श्रीमद्भक्ति सुधीर याचक महाराज, श्रीमद्भक्ति विलास गवस्तिनेमि महाराज, श्रीमद्भक्ति विवेक भारती महाराज, श्रीमद्भक्ति स्वरूप पर्वत महाराज, श्रीमद्भक्ति विचार यायावर महाराज, श्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराज, श्रीमद्भक्ति दयित माधव महाराज, श्रीमद्भक्ति कुसुम श्रवण महाराज, श्रीमद्भक्ति भक्त्यालोक परमहंस महाराज, श्रीमद्भक्ति सौरभ सार महाराज, श्रीमद्भक्ति प्रमोद पुरी महाराज, श्रीमद्भक्ति कमल मधुसूदन महाराज, श्रीभक्तिवेदान्त स्वामी महाराज आदि त्रिदण्डी संन्यासीगण श्रील सरस्वती ठाकुरके विख्यात शिष्य हुए हैं, जिन्होंने प्रभुपादकी अप्रकट लीलामें प्रवेशके बाद पृथक् रूपमें भिन्न-भिन्न भक्ति प्रचार केन्द्र श्रीगौड़ीय मठोंकी स्थापना कर विश्वमें शुद्धभक्तिके प्रचारमें श्रीलसरस्वती ठाकुर प्रभुपा-दकी मनोऽभीष्ट सेवा की है । इनमेंसे श्रीनवद्वीपधामके अन्तर्गत कोलद्वीपमें (अर्थात् वर्तमान नवद्वीप शहरमें) अस्मदीय परमाराध्य श्रीश्रीलभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजने विशाल श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, श्रीश्रीलभक्ति रक्षक श्रीधर महाराजजीने श्रीसारस्वत गौड़ीय मठ तथा श्रीश्रीलभक्ति विवेक भारती महाराज एवं श्रीमद्भक्ति श्रीरूप सिद्धान्ती महाराजद्वयने श्रीगौड़ीय-आसन् एवं मिशनकी स्थापना की है । श्रीमद्भक्ति केवल औडूलोमि महाराजने गोद्रुमके अन्तर्गत श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गौड़ीय मठकी स्थापना की है। गंगाके पूर्वीतट पर योगपीठ, मायापुरसे आरम्भकर, गंगा एवं खड़ियाके संगम तक श्रीगौड़ीय मठ-मन्दिरोंकी मनोहर श्रृंखला है । इनमें से प्रमुख मठ-मन्दिर निम्न लिखित हैं :–

(१) श्रीयोगपीठ मायापुर

श्रीयोगपीठ मायापुर श्रीवास-अंगन, श्रीअद्वैत-भवन, श्रीगौड़ीय-मठ (चन्द्रशेखर भवन) आदिकी सेवा जगद्गुरु श्रीलभक्ति-सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरके पश्चात् उनके शिष्य श्रीश्रीमद्भक्ति विलास तीर्थ महाराजजीकी देख-रेखमें सम्पन्न होती रही है । इन्होंने श्रील सरस्वती ठाकुरजीकी अप्रकट लीलामें प्रवेशके पश्चात् त्रिदण्डि स्वामी भक्ति-विज्ञान आश्रम महाराजसे संन्यास वेश ग्रहण किया था । इन्होंने युवावस्थामें ही श्रील प्रभुपादसे ही दीक्षा ग्रहण कर, अनेक कष्ट सहन कर उनकी प्रचुर सेवा की थी । श्रीलप्रभुपादके समय इनके द्वारा प्रतिष्ठित मठोंके व्यवस्थापक (Secretary) ये ही थे । श्रील प्रभुपादजीकी अप्रकट लीलामें प्रवेशके पश्चात् श्रीचैतन्यमठके आचार्य हुए । इनके अधीन भारत-वर्षमें बहुतसे गौड़ीय-मठोंका संचालन होता रहा है ।

(२)श्रीगौर-गदाधर आश्रम

त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद्भक्ति हृदय वन महाराजके शिष्य श्रीरसानन्द वन महाराजने इस आश्रमकी स्थापना की । श्रीभक्ति हृदय वन महाराज श्रीभक्ति-सिद्धान्त सरस्वती प्रभुपादके प्रमुख शिष्य थे। इन्होंने श्रीधाम वृन्दावनमें भजन-कुटीकी स्थापना की तथा पास ही रमणरेतीमें प्राच्य महाविद्यालयकी स्थापना की । श्रीलसरस्वती ठाकुर प्रभुपादने पाश्चात्य देशोंमें शुद्ध भक्तिका प्रचार करनेके लिए प्रचारकके रूपमें इनको भेजा था । इन्होंने इंग्लैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी एवं स्पेन आदि देशोंमें भक्ति-धर्म प्रचार किया ।

(३)श्रीगौड़ीय आश्रम

त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति स्वरूप पर्वत महाराजके किसी शिष्य ने इस आश्रमकी स्थापना की है । श्रीलभक्ति स्वरूप पर्वत महाराज श्रील प्रभुपादके शिष्य थे । ये उड़ीसाके उदला नामक स्थानमें

'उदाला गौड़ीय मठ' की स्थापना कर उस अंचलमें प्रचार करते हैं ।

(४)श्रीगौर-चन्द्रोदय मन्दिर

जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीलभक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरके दीक्षित, ॐ विष्णुपाद अष्टोतरशतश्री श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके संन्यास शिष्य, देश-विदेशोंमें प्रसिद्ध 'अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ' और उसके अधीन सैकड़ों मठ-मन्दिरोंके संस्थापक नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्ति वेदान्त स्वामी महाराजने एक अत्यन्त विशाल मन्दिरकी स्थापना की है ।

श्रीमद्भक्ति वेदान्त स्वामी महाराजजीका जन्म १८९६ ई० में कलकत्ता महानगरीमें हुआ था । ये बचपनसे ही बड़े धर्मनिष्ठ थे। १९३३ ई० में इन्होंने श्रीमद्भक्ति-सिद्धान्त सरस्वती प्रभुपादसे विधिवत् दीक्षा ग्रहण की । अपने श्रीगुरुपाद-पद्मके आदेशसे अंग्रेजी भाषामें प्रबन्ध लिखकर अपने श्रीगुरुजीकी पत्रिकाओंमें प्रकाशनार्थ भेजते थे । १९५९ ई० में घर-वार, स्त्री-पुत्र सबका त्यागकर मथुरास्थ श्रीकेशवजी गौड़ीय मठमें नित्यलीला प्रविष्ट ॐविष्णुपाद श्रीश्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजसे विधिवत् संन्यास ग्रहण किया । अंग्रेजी भाषामें श्रीमद् भागवत और गीताका अनुवाद किया । १९६५ ई० में अपने श्रीगुरुदेवकी मनोऽभीष्ट पूर्तिके लिए एवं शुद्ध-भक्तिके प्रचारके लिए संयुक्त-राज्य-अमेरिका गये । वहाँ धार्मिक ग्रन्थोंके प्रामाणिक अनुवाद, टीकायें और अन्यान्य लगभग साठ ग्रन्थोंकी रचनाएं की । १९६६ ई० में अन्तर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघकी स्थापना की । आज इनके हजारों शिष्य-प्रशिष्य विश्वमें सर्वत्र ही कृष्णनाम व शुद्धभक्तिका प्रचार कर रहे हैं ।

श्रीलभक्ति वेदान्त स्वामी महाराजने श्रीधाम मायापुर ईशोद्यानमें विशाल अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र स्थापित किया है । यहाँ पर एक विशाल मन्दिर और वैदिक शास्त्रोंके अध्ययनके लिए सुनियोजित संस्थानकी

एक योजना है। जिसके दस वर्षोंमें पूरा होनेकी सम्भावना है। यहाँ पाश्चात्य देशोंके भक्त हमारी वैदिक संस्कृतिका अध्ययन कर सकेंगे।

(५) श्रीगौर-नित्यानन्द मन्दिर

(श्रीनन्दनाचार्यका भवन)--जगद्गुरु श्रील सरस्वती ठाकुरके प्रधान शिष्य श्रीमद्भक्ति सारंग गोस्वामी महाराजने इस मठकी स्थापना की है। ये प्रभुपादके एकनिष्ठ-सेवक, प्रखर-वक्ता, सुलेखक आदि गुणोंसे विभूषित थे। ये प्रभुपादके द्वारा स्थापित साप्ताहिक गौड़ीयके सम्पादक और संघपति भी थे, श्रीलप्रभुपादजीने इनको पाश्चात्य देशोंमें गौरवाणी और शुद्धाभक्तिका प्रचार करनेके लिए भेजा था। श्रीलप्रभुपादजीकी अप्रकट लीलाके बाद इन्होंने श्रीधाम वृन्दावन, देहली, जगन्नाथपुरी एवं मायापुर आदि स्थानों पर भक्ति प्रचार केन्द्रोंकी स्थापना की है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुके प्रकट कालमें यहाँ बड़ा ही सुन्दर उपवन था। इसी उपवनमें गृह निर्माण कर श्रीनन्दनाचार्यजी भजन करते थे। भारतके तीर्थोंमें भ्रमण करनेके पश्चात् श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु इन्हींके घरमें छिपे रहे। उनका उद्देश्य यह था कि यदि निमाई पण्डित सचमुचमें ही श्रीनन्दनन्दन हैं तो सर्वज्ञ होनेसे अवश्य ही मेरे आगमनको जानकर, वे स्वयं ही यहाँ आकर मुझसे अवश्य मिलेंगे। सचमुचमें संध्याके समय निमाई पण्डित कुछ प्रमुख परिकरोंको साथ लेकर श्रीपाद नित्यानन्द प्रभुजीसे मिले। इस लीलामें यही उनका प्रथम मिलन था। ये दोनों पूर्वलीलाके कृष्ण और बलरामके भावोंमें आविष्ट होकर मूर्च्छित हो गये, तत्पश्चात् श्रीनिमाई पण्डित इन्हें लेकर श्रीवास-अंगनमें पहुँचे। सभी भक्त इनसे मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। श्रीवासकी पत्नी श्रीमालिनी-देवी सब प्रकारसे उनको अपना पुत्र मानकर उसी रूपमें उनका पालन-पोषण करतीं थीं।

(६) श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ

त्रिदण्डि स्वामी श्रीश्रीमद्भक्ति दयित माधव महाराजजी इस

मठके प्रतिष्ठाता हैं। ये श्रीश्रील सरस्वती ठाकुरके प्रमुख शिष्योंमें से एक थे। इनका पूर्वनाम श्रीहयग्रीव ब्रह्मचारी था। श्रील प्रभुपादजीके अप्रकट लीलामें प्रवेश करनेके पश्चात् इन्होंने परिव्राजकाचार्य श्री श्रीमद्भक्ति गौरव वैखानस महाराजसे संन्यास ग्रहण किया था। इन्होंने बंगाल, आसाम, आन्ध्रप्रदेश, पंजाब और उत्तर प्रदेश आदि भारतके विभिन्न स्थानोंमें शुद्ध-भक्ति प्रचारकेन्द्र स्थापित कर वहाँ श्रीचैतन्य-वाणीका प्रचार-प्रसार किया है। श्रीवृन्दावन धाम, श्रीपुरी-धाम और श्रीनवद्वीपधाममें भी इन्होंने भक्ति केन्द्रोंकी स्थापना की है। इन्होंने चैतन्य-वाणी नामक बंगला मासिक पारमार्थिक पत्र एवं अनेक प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थोंका प्रकाशन भी कराया। ये एक प्रभावशाली आचार्य थे। इनकी समाधि भी यहीं पर है।

(७) श्रीचैतन्य-भागवत मठ

इसके संस्थापक परिव्राजकाचार्य श्रीश्रीमद्भक्ति विचार यायावर महाराज थे। ये श्रील सरस्वती ठाकुरके अन्तिम संन्यासी शिष्य थे। ये बड़े मधुर गायक थे, इनका मधुर संकीर्त्तन सुनकर लोग बहुत प्रभावित होते थे। इन्होंने मेदिनीपुर, काँथि, चन्द्रकोना टाउन और मायापुरमें भक्ति प्रचार केन्द्रोंकी स्थापना की है। ये स्वभावतः एक सरल वैष्णव थे। यहीं पर इनकी भजन-स्थली व समाधि भी है।

(८) श्रीकृष्ण चैतन्य मठ

इस मठके संस्थापक परिव्राजकाचार्य श्रीमद्भक्ति कमल मधुसूदन महाराज जी हैं। ये श्रील सरस्वती ठाकुरके शिष्य थे। पूर्व जीवनमें ये कलकत्ताके प्रसिद्ध दैनिक 'अमृत-बाजार' के सहकारी सम्पादक थे। इनका आविर्भाव बंगलादेश (पूर्वबंगला) हरीपुर जिलेके मदारीपुर सबडिवीजनके वाजितपुर ग्राममें १८६६ ई०में हुआ था। इनके पिताका नाम श्रीपार्वतीनाथ सन्याल एवं माताका नाम

स्वर्णमयी देवी था। प्राथमिक शिक्षा वाजितपुरमें ही हुई थी। कलकत्तेमें कुछ शिक्षा प्राप्त की थी। अमृतबाजार ऑफिसमें कार्यरत रहते हुए भी श्रीबागबाजार गौड़ीय मठमें श्रीलभक्ति सिद्धान्त-सरस्वती प्रभुपादजीसे प्रायः हरिकथा श्रवण करने आते थे। अन्तमें हरिकथासे ऐसे प्रभावित हुए कि घर-वार, नौकरी-चाकरी, सबकुछ छोड़कर प्रभुपादजीके चरणाश्रित हो गये। प्रभुपादजीके समय बहुतसे मठोंके संचालनका दायित्व ग्रहण किया। प्रभुपादकी अप्रकट-लीलामें प्रवेश करनेके बाद वे श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिमें अस्मदीय गुरु-पाद-पद्म श्रीश्रीलभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके साथ रहे। ये समितिके मुख्य पत्र श्रीगौड़ीय-पत्रिकाके सम्पादक भी रहे तथा भारतके विभिन्न अंचलोंमें भक्ति-धर्मका प्रचार करते रहे। तदनन्तर वर्धमान शहर एवं मायापुरके अन्तर्गत ईशोद्यानमें भक्ति प्रचार केन्द्रोंकी स्थापना की। ये श्रीमद्भागवत्के बड़े प्रभावशाली वक्ता एवं व्याख्याता थे। लोग इनके व्याख्यानोंसे बड़े ही प्रभावित होते थे। १९९१ ई०में गौर-दशमी तिथिको ये अप्रकट लीलामें प्रविष्ट हो गये। इनकी श्रीसमाधि यहीं पर विराजमान है।

(९) श्रीगोपीनाथ गौड़ीय मठ

परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति प्रमोद पुरी महाराजजीने इस मठकी स्थापना की है। ये श्रीलप्रभुपादके समयमें दैनिक 'नदिया प्रकाश' साप्ताहिक और मासिक आदि पारमार्थिक पत्रोंमें प्रबन्ध लिखते थे। ये भक्ति धर्मके प्रचारक भी थे। इनका संन्याससे पूर्वका नाम श्रीप्रणवानन्द ब्रह्मचारी था। श्रीलप्रभुपादके अप्रकट होने पर ये बहुत दिनों तक श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिमें असदीय गुरु-पाद-पद्म श्रीभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके साथ भी रहे थे। बादमें अम्बिका-कालनामें श्रीवासुदेव गौड़ीय मठकी प्रतिष्ठाकर वहींसे भारतके विभिन्न स्थानोंमें शुद्धाभक्तिका प्रचार करते हैं। यह अधिकतर श्रीचैतन्य गौड़ीय मठके आचार्य श्रीमद्भक्ति

दयित माधव महाराजके साथ रहे तथा उनके द्वारा प्रकाशित 'चैतन्य-वाणी'के सम्पादक-संघके सभापति हैं। ये श्रीमद्भागवतके प्रभावशाली व्याख्याता एवं सुलेखक भी हैं।

(१०) श्रीगौरांग गौड़ीय मठ

इसके संस्थापक श्रीलभक्ति- सौरभ सार महाराज हैं। ये श्रीलप्रभुपादके शिष्य हैं। इन्होंने श्रीलप्रभुपादकी अप्रकट लीलाके पश्चात् श्रीगौड़ीय संघके संस्थापक परिव्राजकाचार्य श्रीमद्भक्ति सारंग गोस्वामी महाराजसे संन्यास ग्रहण किया तथा उनके अप्रकट लीलामें प्रवेश करने पर कुछ समयके लिए श्रीगौड़ीय संघके आचार्य भी रहे हैं। ये बहुत विनम्र, भक्ति-सिद्धान्त पारंगत, सुलेखक एवं सुवक्ता हैं।

(११) श्रीपरमहंस गौड़ीय मठ

परिव्राजकाचार्य भक्त्यालोक परमहंस महाराजके शिष्यों द्वारा यह मठ स्थापित हुआ है। श्रीमद् परमहंस महाराजजी श्रील सरस्वती ठाकुरके शिष्य थे। उनके समयमें वे कृष्णनगरके गौड़ीय प्रिन्टिंग प्रेसके व्यवस्थापक थे। इसमें 'नदीया-प्रकाश' आदिका प्रकाशन होता था। इन्होंने कुछ दिनों तक श्रीमायापुरमें जमींदारीकी देख-रेख भी की थी। श्रील प्रभुपादके अप्रकट होने पर ये अस्मदीय गुरुपाद पद्म श्रीलभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीके साथ श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिमें रहे, तदनन्तर ये कलकत्तेमें भक्तिकेन्द्र मठकी स्थापना कर उसमें रहते थे। इन्हींके नाम पर इस मठकी स्थापना हुई है। ये बड़े ही सरल वैष्णव थे और सर्वदा हरिनाम करते रहते थे।

(१२) श्रीसारस्वत गौड़ीय मठ

यह परिव्राजकाचार्य श्रीश्रीमद्भक्ति शरण सान्त महाराज द्वारा स्थापित है।

इसके अतिरिक्त और भी कई मठ स्थापित हुए और हो रहे हैं।

❋❋❋❋
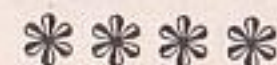
प्राचीन नवद्वीपकी अवस्थिति

प्राचीन नवद्वीप नगर भगवती भागीरथीके पूर्वी तट पर अवस्थित था। उर्द्धाम्नाय महातंत्र, श्रीचैतन्य-चरितामृत, भक्तिरत्नाकर आदि प्राचीन ग्रन्थोंको पढ़नेसे यह स्पष्ट हो जाता है। उर्द्धाम्नाय महातन्त्रमें ऐसा उल्लेख है-

"वर्त्ततेह नवद्वीपे नित्यधाम्नि महेश्वरि।
भागीरथी तटेपूर्वे मायापुरन्तु गोकुलम् ॥"

श्रीचैतन्यचरितामृतमें

"गौड़देशे पूर्वशैले करिल उदय।"

(चै० च० आ० १।८६)

"नदिया-उदय गिरि, पूर्णचन्द्र गौरहरि
कृपाकरि हइल उदय।"

(चै० च० आ० १३।६७)

श्रीभक्तिरत्नाकरमें-

श्रीसुरधुनीर पूर्वतीरे अन्तर्द्वीपादिक चतुष्टय शोभाकरे।
जाह्ववीर पश्चिकुलेते कोलद्वीपादिक पञ्च विख्यात जगते ॥

सर विलियम हन्टरने वृटिशकालके १६ वीं शताब्दीमें भारतवर्षकि विशेषकर बंगालके प्रसिद्ध स्थानोंका एक प्रामाणिक ऐतिहासिक और भौगोलिक रिकर्ड प्रस्तुत किया था। उसमें इन्होंने नवद्वीप नगरकी भौगोलिक स्थितिका इस प्रकार वर्णन किया है।

"It was on the east of the Bhagirathi and on the west of Jalangi." (Hunter's statistical account -page 142)

अर्थात् नवद्वीप नगर भागीरथी नदीके पूर्व तटपर और जालन्गी नदीके पश्चिममें अवस्थित था।

नदीया गजेटियरके विवरणसे भी ऐसा अवगत हुआ जाता है कि उस समय सेन वंशीय राजाओंकी राजधानी नवद्वीपमें ही थी।

"Nabadwip is very ancient city and is reported to have been founded in 1063 A. D. by one of the Sen kings of Bengal. In the Aini Akbari it is noted that in the time of Lakhan Sen, Nadia was the Capital of Bengal."

(-- Nadia Gazetteer)

अर्थात् नवद्वीप एक प्राचीन नगर है। ऐसा कहा जाता है कि किसी सेन वंशीय नृपतिने १०६३ ई० में इसको वसाया था। आइन अकबरीमें भी ऐसा उल्लेख है कि "महाराज श्रीलक्ष्मणसेनके समय नदीया बंग देशकी राजधानी थी।

श्रीविलियम हन्टरने भी ऐसा उल्लेख किया है कि महाराज लक्ष्मणसेनने १०६३ ई० में नदीया नगरको वसाया था–

Nadia was founded by Lakshman Sen in 1063

(-- Hunter's statistical Account-- Page No -142)

कलकत्ता रिवीयू १८४६ ई० पेज ३६८ में ऐसा उल्लेख है–

"The eartiest that we know of Nadia is that in 1203 it was the capital of Bengal."

(Calcutta Review (1846)--Page. 398)

अर्थात् नदीया नगरके सम्बन्धमें हम सर्वप्रथम जो विवरण पाते हैं, उससे यह पता चलता है कि यह नगरी १२०३ ई० में वंगदेश की राजधानी थी। इस प्रकार इस तथ्यके लिए बहुतसे प्रमाण विद्यमान हैं कि प्राचीन नदीया नगर अर्थात् प्राचीन नवद्वीप ही

सेन वंशीय राजाओंकी राजधानी थी, जो गंगाके पूर्व तटपर अवस्थित थी।

नदिया District Gazetteer से यह स्थिति और भी स्पष्ट हो जाती है–"Nature of Mahammadi Baktier's conquest (A.D. 1203) appears to have been exaggerated the expedition to Nadia was only on in road, a dash for securing booty. The troopers looted the city with the palace and went away. They did not take possession of the part. It seems probable that the hold of Mohommedans upon the part of Bengal in which Nadia District lies was very slight for the two centuries which succeeded the seck of Navadwip by Baktier Khan. It appears, however, that by the middle of the fifteenth century the independent Mahommedan Kings of Bengal had established their authority"

अर्थात् बक्तियार खानके नवद्वीप-विजय (१२०३ ई०) का विवरण अतिरंजित प्रतीत होता है। बक्तियार खानकी नदीया पर चढ़ाई केवल धन लूटनेके उद्देश्यसे एक आकस्मिक आक्रमण मात्र था। अश्वारोही सैनिकोंका दल राजप्रसाद और नवद्वीप नगरको लूटकर चला गया था। उन्होंने उस स्थान पर कोई आधिपत्य स्थापित नहीं किया। ऐसा सम्भव है कि बंग देशके जिस भागमें नदीया जिला अवस्थित है, वहाँ बक्तियार खानके नवद्वीप आक्रमणके पश्चात् दो शताब्दी तक उनका आधिपत्य नाममात्र रहा हो। पंचदश शताब्दीके मध्य भागमें बंगदेशके स्वाधीन मुसलमान राजाओंने वहाँ आधिपत्य स्थापन किया था।

नदीया Gazetteer और Hunter's Statistical Account - ग्रन्थसे (page 142)यह स्पष्ट प्रामाणित होता है कि वर्तमान मायापुरकी समीपवर्ती उच्चभूमि ही बल्लालसेन राजाके राजप्रसादका भग्नावशेष है तथा वह नदीया नगरी ही बल्लालसेन राजाकी राजधानी थी। पास ही बल्लाल दीघी भी विद्यमान है।

बीच-बीचमें गंगा नदीकी धारा बदलनेसे प्राचीन नवद्वीप नगर कटकर धीरे-धीरे गंगाके पश्चिमी तट पर बस गया तथा प्राचीन नवद्वीप या नदीया नगर अब ब्राह्मण पुकुर, बेलपुकुर, श्रीमायापुर, बल्लालदीघी, श्रीनाथपुर, भारुई डांगा, टोटा आदि विभिन्न नामोंसे पुकारे जाने लगा। जिस स्थान पर श्रीजगन्नाथ मिश्रका भवन, श्रीवास-अंगन, श्रीअद्वैत-भवन, मुरारीगुप्त-भवन आदि अवस्थित थे, आज वह स्थान श्रीधाम मायापुरके नामसे प्रसिद्ध है। महाप्रभुके समसामयिक कुलियाग्राम या पहाड़पुरमें ही आधुनिक नवद्वीप शहर बसा है और वहीं वर्तमान नवद्वीप म्युनिसिपैलिटी स्थापित हुई है। प्राचीन नक्शोंसे यही तथ्य प्रामाणित होता है।

'भक्तिरत्नाकर' एक प्राचीन एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसके लेखक प्रसिद्ध श्रीनरहरि चक्रवर्ती ठाकुरजी हैं। भक्तिरत्नाकरमें वर्णित नवद्वीप धाम परिक्रमाके विवरणसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अन्तर्द्वीप मायापुर गंगाके पूर्वी तट पर अवस्थित था। वहीं पर प्राचीन नदीया या नवद्वीप नगर था। आज भी चाँदकाजीकी समाधि, श्रीधर-भवन आदि स्थान-समूह पूर्वी तट पर ही अवस्थित हैं। श्रीनिवास, श्रीनरोत्तम ठाकुर ईशान ठाकुरके साथ परिक्रमा करते समय जगन्नाथ-भवनसे पास ही संलग्न बारकोना घाट, गंगानगर आदि होते हुए, गंगाको पार किये बिना ही चाँदकाजीकी समाधि, श्रीधर-अंगन और सिमुलिया आदि गये थे।

सन् १६८४ ई० में इष्ट इण्डिया कम्पनीके एजेण्ट विलियम हैजकी डायरीमें लिखित रिचार्ड टेम्पिलके प्राचीन नक्शेमें भी नवद्वीप नगरको भागीरथीके पूर्वी तट पर दिखलाया गया है । १५७२ ई० में कवि कर्णपूर द्वारा लिखित 'श्रीचैतन्य चन्द्रोदय' नाटकके भौगोलिक वर्णनसे भी ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राचीन नदीया नगर या नवद्वीप नगर गंगाके पूर्वी तट पर बसा हुआ था तथा गंगा नदीके पश्चिमी तट पर कुलियाग्राम अवस्थित था । श्रीचैतन्य महाप्रभुकी अप्रकट लीलाके कुछ वर्षोंके पश्चात् ही वृन्दावनदास ठाकुरके द्वारा रचित 'श्रीचैतन्य भागवत' के वर्णनसे नवद्वीप और उसके संलग्न स्थानोंकी भौगोलिक स्थितिका पता चलता है । श्रीचैतन्य-महाप्रभुके समसामयिक चाँदकाजीकी समाधि वामनपुकुरमें अवस्थित है, इसे सभी स्वीकार करते हैं । चैतन्य भागवतके अनुसार काजी-दलनके दिन श्रीमन्महाप्रभुजी विशाल नगर कीर्त्तनके साथ जिस पथसे चाँदकाजीके भवनमें गये थे, उसमें कहीं भी गंगा पार करनेका उल्लेख नहीं है ।

अतः उपरोक्त प्रमाणोंसे यह सिद्ध होता है, श्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराज और श्रील भक्ति विनोद ठाकुर द्वारा निर्दिष्ट श्रीमायापुर धाम ही श्रीचैतन्य महाप्रभुकी आविर्भाव-स्थली है । विशेष रूपसे इस विषयमें जाननेके लिए श्रीसरदिन्दु नारायण राय द्वारा संकलित "चित्रे-नवद्वीप" नामक पुस्तक द्रष्टव्य है । कुछ लोग गंगा नदीके पश्चिमी तट पर अवस्थित रामचन्द्रपुर या केकड़ा माँठको श्रीचैतन्य महाप्रभुकी आविर्भाव-स्थली प्राचीन मायापुर बतलाते हैं । परन्तु उनका यह अनुमान सम्पूर्ण अमूलक एवं उक्त प्रमाणोंके सर्वथा विपरीत है । संक्षेपमें कुछ कारण नीचे दिये जा रहे हैं ।

(१) रामचन्द्रपुर या केकड़ाका माँठ नामक स्थान और चाँद-काजीका भवन कभी भी भागीरथीके एक तटपर अवस्थित नहीं थे । ऐसा कभी सम्भव नहीं । ऐसी स्थितिमें काजीदलनके दिन श्रीचैतन्य महाप्रभु यदि रामचन्द्रपुरसे कीर्त्तनके साथ काजीके भवनमें जाते तो उन्हें भगवती गंगाको अवश्य ही पार करना होता, किन्तु श्रीचैतन्य-भागवतमें महाप्रभु द्वारा गंगा पार करनेका कोई भी उल्लेख नहीं है ।

(२) केकड़ा माँठसे काजी-भवन लगभग ४-५ मील दूर है । उस स्थानसे गंगा नगर होकर ब्राह्मण पुकुर (चाँदकाजीकी समाधि ब्राह्मण पुकुरमें ही है ।) आनेके लिए रुद्र-पाड़ासे होकर ही आया जा सकता है और दूसरा कोई भी मार्ग नहीं है । (नक्शा द्रष्टव्य है।) नगर-संकीर्त्तनके मार्गसे गंगाके किनारे-किनारे कुछ घाटोंसे होते हुए ही श्रीमन्महाप्रभुजी गंगानगर पहुँचकर, गंगा नगर होते हुए वामन पुकुर स्थित काजीके भवनमें उपस्थित हुए थे । यदि केकड़ा माँठ या रामचन्द्रपुरसे नगर-संकीर्त्तन आरम्भ हुआ होता तो समग्र कीर्त्तन पथ २५-२६ मील दीर्घ हो जाता, जो अत्यन्त अस्वाभाविक है ।

(३) श्रीनिवासाचार्यके भ्रमण वृतान्तमें ऐसा पाते हैं । कि अन्तर्द्वीपसे ही श्रीनिवासाचार्य सिमुलिया (सीमन्तद्वीप) गये थे । आज भी वर्तमान मायापुर (अन्तर्द्वीप) से सिमुलिया अर्थात् सीमन्तद्वीप जानेके मार्गमें ही काजीका गृह और उनकी समाधि अवस्थित है। किन्तु यदि हम केकड़ा माँठको ही अन्तर्द्वीप मायापुर मानते हैं, तो वहाँसे सिमुलिया अर्थात् सीमन्तद्वीप पहुँचनेमें बीचमें रुद्रपाड़ा या रुद्रद्वीप अवश्य ही पार करना होगा, किन्तु श्रीनिवासाचार्य जान्नगर (जह्नुद्वीप) तत्पश्चात् मामगाछि (मोदद्रुमद्वीप) एवं महत्पुर (मातापुर)

आदि होकर सबसे अन्तमें रुद्रद्वीपमें गये थे । यदि श्रीनिवासाचार्य प्रभु केकड़ा मॉँठसे नवद्वीप धामकी परिक्रमा आरम्भ किये होते, तो वे किस प्रकार सबसे पहले सिमुलिया (सीमन्तद्वीप), उसके बाद गादीगाछा (गोद्रुमद्वीप), उसके बाद मजीदा (मध्यद्वीप), फिर गंगा पारकर कुलिया (कोलद्वीप), तत्पश्चात् रातुद्वीप रातुपुर (ऋतुद्वीप), तत्पश्चात् जान्नगर (जह्नुद्वीप), तत्पश्चात् मामगाछि (मोदद्रुम द्वीप), वहाँसे रुद्रपाड़ा (रुद्रद्वीप) पहुँचे । अतः वर्तमान अन्तर्द्वीप मायापुरसे ही (गंगाके पूर्वी तट पर अवस्थित) उन्होंने परिक्रमा आरम्भ की थी । यही भक्ति-रत्नाकरमें वर्णित तथ्यके तथा प्राचीन नक्शोंके अनुकूल है ।

(४) भक्तिरत्नाकरमें ऐसा उल्लेख है कि अन्तर्द्वीपसे सुवर्ण-विहार दिखायी पड़ता है । आजकल भी वर्तमान मायापुरसे सुवर्ण-विहार देखा जाता है । किन्तु यदि रामचन्द्रपुर या केकड़ामाँठको अन्तर्द्वीप मानते हैं तो वहाँसे ५-६ मील दूर सुवर्ण-विहार कभी भी दिखायी नहीं पड़ सकता ।

(५) केकड़ा माँठ या रामचन्द्रपुरमें यदि महाप्रभुका जन्मस्थान होता और गंगा गोविन्द सिंहने उस स्थानको श्रीमन्महाप्रभुजीका जन्म-स्थान मानकर वहाँ मन्दिरका निर्माण कराया होता, तो उक्त मन्दिरमें श्रीरामसीताका विग्रह क्यों स्थापित करते ? उसमें श्रीमन्महाप्रभुका विग्रह क्यों स्थापित नहीं किया ? तथा उस स्थानका नाम मायापुर क्यों नहीं रखा ? अथवा प्राचीन सरकारी नक्शोंमें भी उसे रामचन्द्रपुर या केकड़ामाँठ ही क्यों लिखा गया ?

(६) यह प्रसिद्ध है कि रामचन्द्रपुरमें श्रीश्रीसीतारामजीका महोत्सव बड़े समारोहके साथ मनाया जाता है । यह रामचन्द्रपुर

श्रीरामचन्द्र एवं सीताजीकी लीला-स्थली मोदद्रुम द्वीपके ही अन्तर्गत है । अतः किसी प्रकार भी यह स्थान अन्तर्द्वीप मायापुरके रूपमें कल्पित नहीं हो सकता ।

इन समस्त कारणोंसे एवं दूसरे अनेक कारणोंसे जिन्हें हम ग्रन्थ विस्तारके भयसे यहाँ उद्धृत नहीं कर सके हैं, यह स्पष्ट है कि रामचन्द्रपुर या केकड़ा माँठ श्रीमन्महाप्रभुका जन्म-स्थान कदापि नहीं हो सकता ।

श्रील भक्ति विनोद ठाकुर एवं अन्तर्द्वीप मायापुर

श्रीसच्चिदानन्द भक्ति विनोद ठाकुर श्रीचैतन्य महाप्रभुके नित्य अन्तरंग परिकर हैं । वे आधुनिक कालमें भक्ति-भागीरथीकी रुद्ध-धारा को जगतीतलमें पुनःप्रवाहित करने वाले सप्तम गोस्वामीके रूपमें प्रसिद्ध हैं । यही नहीं उन्होंने आविर्भूत होकर श्रीगौरनाम श्रीगौरकाम और श्रीगौरधामका प्रकाश किया है । वे श्रीरूप-सनातनकी भाँति ब्रजमें रहकर ही भजन करना चाहते थे । जिस समय वे ब्रजमण्डल जा रहे थे, रास्तेमें कलकत्तेसे कुछ दूर-स्थित प्रसिद्ध श्रीताड़केश्वर नामक श्रीमहादेवजीके स्थान पर उपस्थित हुए । रातमें श्रीदेव-देव महादेवने उन्हें स्वप्नमें श्रीमन्महाप्रभुकी आविर्भाव-स्थलीको प्रकाश करनेके लिए अनुरोध किया । साथ ही उन्हें गौड़ मण्डलमें रहकर ही भजन करनेका निर्देश दिया । श्रीभक्ति विनोद ठाकुर श्रीताड़केश्वर नाथजीका यह आदेश शिरोधार्य कर वहींसे लौटकर श्रीधाम नवद्वीपके अन्तर्गत श्रीगोद्रुममें एक छोटी सी कुटी निर्माण कर, वहीं भजन करने लगे । वे महाप्रभुकी आविर्भाव-स्थलीका पता लगानेके लिए बड़े व्याकुल हो गये । उन्होंने अपनी आत्मकथामें इस प्रकार लिखा है–

"मैं श्रीमन्महाप्रभुकी जन्मभूमि कहाँ हैं, इसको जाननेके लिए बड़ा ही व्याकुल था। मैंने नवद्वीप (आधुनिक नवद्वीप शहर) में जाकर महाप्रभुकी लीलास्थलीका अन्वेषण करनेके लिए बहुत ही प्रयास किया, किन्तु वहाँ मुझे उसका कोई चिह्न अथवा पता नहीं लगा। मैं बहुत ही दुःखी हुआ। इस समय नवद्वीपवासी केवल अपने-अपने पेट भरनेमें लगे हैं। श्रीमन्महाप्रभुके लीलास्थानके सम्बन्धमें न तो कुछ जानते हैं और न जानने की चेष्टा करते हैं। एक दिन संन्ध्याके बाद, मैं, कमल और एक किरानी एक मकानकी छत पर खड़े होकर चारों ओर देख रहे थे। रातके दस बजे थे। घोर अन्धकार छाया हुआ था। चारों ओर बादल छा रहे थे। गंगाके उसपार उत्तरकी ओर एक ज्योतिर्मय अट्टालिका दिखायी पड़ी। मैंने कमलसे पूछा, 'तुमने कुछ देखा ?' उसने उत्तर दिया, 'उत्तरकी ओर गंगाके उस पार मैंने एक ज्योतिर्मय भवन देखा। मैं उस दृश्यको देखकर आश्चर्य चकित हो गया।' प्रातःकाल होने पर मैंने उसी रानीके गृहकी छत पर खड़े होकर उक्त स्थानको गौरसे देखा। ज्योतिर्मय गृह तो नहीं दीख पड़ा, किन्तु वहाँ पर एक तालका वृक्ष दीख पड़ा। मैंने उस स्थानके सम्बन्धमें लोगोंसे पूछा। उन्होंने बतलाया, कि यह स्थान बल्लाल दीघी है और वहाँ महाराज लक्ष्मणसेनके प्राचीन दुर्गके बहुतसे चिह्न अभी भी विद्यमान हैं। मैं उसी सोमवारको कृष्णनगर गया और वहींसे शनिवारको बल्लाल दीघी पहुँचा। वहाँ रातमें एक अद्भुत दृश्य दिखायी पड़ा। श्रीमन्महाप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैताचार्य, श्रीगदाधर, आदि भक्त-मण्डलीके सहित, भावपूर्वक नृत्य संकीर्त्तनमें विभोर हो रहे हैं। सबकी आँखोंमें आँसू भरे पड़े हैं। हरिबोलकी तुमुल ध्वनि हो रही है, उसमें मृदंग और करतालकी ध्वनि भक्तोंको मदमत्त कर

रही है। थोड़ी देरके बाद वह दृश्य आँखोंसे ओझल हो गया।

दूसरे दिन मैंने पैदल ही उन स्थानोंका दर्शन किया तथा प्राचीन वृद्ध लोगोंसे उस स्थानके सम्बन्धमें पूछा। उन्होंने उक्त स्थानको श्रीमन्महाप्रभुका जन्मस्थान बतलाया। भक्ति रत्नाकर एवं वृन्दावनदास ठाकुरके चैतन्य भागवतमें जिन ग्राम पल्लियोंका उल्लेख है, उन सबको देखा। तत्पश्चात् कृष्णनगरमें बैठकर 'श्रीनवद्वीप धाम माहात्म्य' की रचना कर उसे छपनेके लिए कलकत्ता भेजा। कृष्णनगरके इन्जीनियर श्रीद्वारिकाबाबूको सब बातें बतलायीं। उन्होंने अपनी विद्या बुद्धिके बलसे इन तथ्योंको समझकर मेरे लिए श्रीनवद्वीप मण्डलका एक नक्शा प्रस्तुत कर दिया। नवद्वीप धाममें भ्रमणकर और धाम माहात्म्य लिखकर देखा—उस समय कुछ और करनेका उपाय नहीं।" — (ठाकुर भक्ति विनोदकी आत्मकथासे)

सन् १८६३ ई० में गोद्रुममें वैष्णव सार्वभौम श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराजके आनुगत्यमें श्रीश्रील भक्ति विनोद ठाकुरने विराट हरिसंकीर्त्तनोत्सवका अनुष्ठान किया। उस समय श्रीजगन्नाथ दास बाबाजी महाराज बहुतसे वैष्णवोंको साथमें लेकर श्रीमायापुरका दर्शन करनेके लिए गये। उन्होंने भावाविष्ट होकर महाप्रभुके जन्मस्थान अथवा लुप्त मायापुर 'योगपीठ' को स्वयं अपने हाथोंसे दिखाया। १४४ वर्षके वृद्ध बाबाजीने उद्दण्ड नृत्य कीर्त्तन करते हुए कहा कि यही हमारे प्राण गौरचन्द्रका जन्मस्थान है। उस समय वहाँ पर श्रील भक्ति विनोद ठाकुर, बंगालके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध साहित्यकार, उच्च-पदस्थ राज्यकर्मचारी और प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पत्रिकाओं के सम्पादक आदि उपस्थित थे। इनमें विद्वत्वरेण्य, परमवैष्णव

श्रीश्यामलाल गोस्वामी, श्रीशशीभूषण गोस्वामी, श्रीराधिकानाथ गोस्वामी, श्रीविपिन विहारी गोस्वामी, श्रीराय वनमाली, श्रीराय बहादुर श्रीशिशीर कुमार घोष, श्रीद्वारिकानाथ सरकार, श्रीनफरकुमार आदि बहु-बहु सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे। धीरे-धीरे वहाँ पहले कुछ कुटियाँ बनीं तथा बादमें श्रीमन्दिरोंका निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे भारतके विभिन्न प्रदेशोंसे श्रद्धालुजन दर्शनके लिए आने लगे। इस प्रकार अब यहाँ विश्वके विभिन्न भागोंसे सर्वथा दर्शनार्थियोंकी भीड़ लगी रहती है।

श्रीसीमन्तद्वीप

इसको सिमुलिया भी कहते हैं। इसमें श्येनडांगा, वामनपुकुर (ब्राह्मण पुष्करिणी) का कुछ अंश, राजपूत, मुल्लापाड़ा, विष्णुनगर, और सरडांगा आदि स्थान हैं। प्राचीन सरडांगामें श्रीजगन्नाथजीका प्राचीन मन्दिर है। इस स्थानको शवर-क्षेत्र भी कहा जाता है। यह कहा जाता है कि कालापहाड़ नामका यवन-राजा हिन्दुओंका घोर विरोधी था। इसकी माता हिन्दु महिला थी, मुसलमानोंने उसे जबरदस्ती पकड़ लिया था। इसलिए हिन्दु माता-पिताने उसका परित्याग कर दिया। विवश होकर वह उसी मुसलमानके साथमें रहने लगी। कालापहाड़ बड़ा होने पर इस घटनाको जानकर घोर हिन्दू विरोधी बन गया। उसने हजारों मन्दिरोंको तोड़ा और हजारों हिन्दुओंको मुसलमान बनाया। उसने जगन्नाथपुरीमें भी आक्रमण किया। उसीसमय वहाँके जगन्नाथ, बलदेव और शुभद्राजीको यहीं लाकर किसी भक्तने उनकी सेवा-पूजा की थी।

पुराणोंके अनुसार एक समय शंकरजी पार्वतीसे भगवत्-कथाओंका वर्णन कर रहे थे। प्रसंगवश उन्होंने आने वाले कलि-कालमें राधा-भाव व कान्तिसे देदीप्यमान श्रीकृष्णके गौरांग रूपमें प्रकट होकर देव-दुर्लभ प्रेमको सर्वसाधारणमें वितरण करनेकी लीलाका वर्णन कर रहे थे। ऐसा सुनकर पार्वतीदेवीने नवद्वीपके इस गम्भीर वनमें कठोर आराधना की। श्रीगौरसुन्दरने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिया। श्रीगौर-रूपको देखकर पार्वतीजी मुग्ध हो गयीं और इनकी प्रकट लीला दर्शन करनेकी अभिलाषा व्यक्त की। महाप्रभुजीने कहा तुम मेरी अभिन्न शक्ति हो तथा सदा-सर्वदा मेरी लीलाकी सहचरी हो। स्वरूप-शक्तिके रूपमें तुम मेरी प्रिया राधिका हो और वहिरंगा शक्तिके रूपमें तुम राधिकाजीकी प्रकाश-स्वरूप (छाया) दुर्गा या पार्वती हो। तुम योगमायाके रूपमें मेरी लीलाकी प्रकाशक हो,

ब्रजमें पौर्णमासीके रूपमें तुम मेरी लीलाकी पुष्टि करती हो । अब तुम नवद्वीपमें प्रौढ़ा-मायाके रूपमें क्षेत्रपाल शिवके साथ नित्य-निवास कर विमुखोंको मोहन तथा उन्मुखोंको मेरी सेवाकी ओर आकृष्ट करना । ऐसा सुनकर देवी पार्वतीने प्रेमाविष्ट होकर श्रीमन्महाप्रभुजीके चरणोंकी रज अपने हाथोंमें उठाकर अपनी माँगमें भर ली । महाप्रभुजी अन्तर्द्धान हो गये । अपने सीमन्त प्रदेशमें (अपनी माँगमें) महाप्रभुजीकी चरण-रज धारण करनेके कारण वे सीमन्तनी देवीके रूपमें पूजित हुईं । इस क्षेत्रको सीमन्तद्वीप कहा जाने लगा ।

श्रीगोद्रुमद्वीप-(अथवा सुरभीकुञ्ज)

यह द्वीप प्राचीन गादीगाछा, बालीचर, महेशगंज, तियोरखाली, आमघाटा, श्यामनगर, विरिज, देवपल्ली, हरीशपुर, और सुवर्णविहार तक विस्तृत है । गंगाके पूर्वी तटपर और सरस्वती (खड़िया नदी) के दक्षिणी तटसे आरम्भकर देवपल्ली तक सुविस्तृत है । गोद्रुमका अपभ्रंश ही गादीगाछा है । भगवती-भागीरथीके तटपर एक उच्च भूमि पर एक विशाल वटका वृक्ष था । यहीं पर सुरभी और देवराज इन्द्रने गौरोपासना की थी । कृष्णलीलामें देवराज इन्द्रने गोकुलको नष्ट-भ्रष्ट करनेकी इच्छासे (अपनी पूजा न किये जाने पर) सात दिनों तक मूसलाधार वर्षा की थी । कृष्णने श्रीगोवर्धन धारण कर गोकुलकी रक्षा की थी । इन्द्रका गर्व चूर्ण हुआ और साथ ही स्वकृत अपराधके कारण बड़े भयभीत हुआ । पितामह ब्रह्माजीसे भावी श्रीगौरांग आविर्भावकी बातसे अवगत होकर अपने साथ सुरभी माताको लेकर नवद्वीपकी इस निर्जन-स्थलीमें एक विशाल वट-वृक्षके नीचे तपस्या की । 'गो' से सुरभी और 'द्रुम' शब्दसे वृक्षका बोध होनेके कारण इस स्थानको गोद्रुमद्वीप कहते हैं । बहुत दिनों तक तपस्या करने पर श्रीगौरचन्द्रने इनको दर्शन देकर कहा कि मैंने तुम्हारे हृदयकी बात जान ली है । थोड़े ही दिनोंके बाद मैं श्रीनवद्वीपमें प्रकट होकर जन-साधारणमें अपना 'नाम और प्रेम' वितरण करूँगा, उस समय तुम मेरी लीलामें सहायक होंगे । सुरभी माता महाप्रभुजीके अदृश्य होने पर इसी वटवृक्षके नीचे कुटी बनाकर श्रीगौरचन्द्रका भजन करने लगी । तभीसे इस स्थानका नाम गोद्रुम हुआ ।

कभी प्रलयके समय मृकंड ऋषिके पुत्र मार्कण्डेय ऋषिने यहाँ पर विश्राम किया था । इन्हें सात-कल्पोंकी आयु प्राप्त थी । जल-प्रलय होने पर पृथ्वी जलमें डूब गयी । कोई भी स्थान दिखायी

नहीं देता था । वे बहते-बहते सौभाग्यवश नवद्वीपके इस स्थान पर पहुँचे । वे जलकी तरंगोंके थपेड़ोंसे मूर्च्छित हो रहे थे । परम दयालु सुरभी माताने क्लान्त एवं मूर्च्छित मुनिको देखकर प्रलय-वारिसे उनको उठा लिया और अपनी कुटिया पर उनको ले आयी । कुछ देरमें मूर्च्छा भंग होने पर, ऋषि श्रीनवद्वीप धामको जलसे ऊपर निकला देखकर बड़े विस्मित हुए । वे सोलह कोस धाममें पेड़-पौधों, और पशु-पक्षियोंसे भरे सुन्दर वन-उपवनोंको देखकर बड़े आनन्दित हुए । सुरभी माताने उनको भूखा-प्यासा और क्लान्त देखकर अपने अमृतके समान दूधको पिलाया । दूध पीते ही वे पूर्ण-स्वस्थ्य हो गये । देवीने उन्हें यहाँ रहकर गौर-भजन करनेका उपदेश दिया, वे बोलीं, "यह धाम प्रकृतिसे अतीत अप्राकृत है । जड़-चक्षुओंसे इसका दर्शन नहीं हो सकता । ये आठ द्वीप अष्टदल कमल और श्रीधाम मायापुर कर्णिकाके समान हैं । यहाँ समस्त तीर्थ-सभी देवता अलक्षित रूपमें श्रीमन्महाप्रभुजीकी आराधना करते हैं । श्रीगौरांग भजनसे ब्रजमें श्रीश्रीराधाकृष्ण युगलकी मधुर-भावसे सेवा प्राप्ति होती है । इस क्षेत्रके द्वार पर समस्त सिद्धियाँ, अष्ट निधियाँ, समस्त मुक्तियाँ हाथ जोड़कर सेवाके लिए खड़ी रहती हैं । किन्तु गौर-भक्त दूरसे ही इनका त्याग करते हैं । श्रीगौरचन्द्रके भजनसे पाप-ताप, समस्त प्रारब्ध-अप्रारब्ध, कर्मवासनाएं और अविद्या सदाके लिए दूर हो जाती है ।" ऐसा सुनकर मार्कण्डेयजी यहीं पर रहकर भजन करने लगे ।

(१) स्वानन्द-सुखद कुञ्ज

गोद्रुमसे पूर्वकी ओर निकट ही सरस्वती नदीके तट पर श्रीभक्तिविनोद ठाकुरजीके भजन और समाधि-स्थलको स्वानन्द- सुखद कुञ्ज कहते हैं । श्रील भक्तिविनोद ठाकुर यहीं कुटी बनाकर भजन करते थे । श्रील भक्तिविनोद ठाकुरके अभिन्न सुहृद अवधूत-शिरोमणि श्रीलगौरकिशोरदास बाबाजी महाराजकी भजन कुटी भी उसी कुञ्जके

एक किनारे पर स्थित है ।

श्रील भक्ति विनोद ठाकुर वर्तमान कालमें पुनः शुद्धाभक्ति प्रचारके मूल महापुरुष हैं । इन्होंने विभिन्न भाषाओंमें लगभग १०० (एकसौ) भक्ति ग्रन्थोंकी रचना की और श्रीगौरसुन्दरकी लोकातीत महिमाको स्थापन कर श्रीगौड़ीय-वैष्णव-समाजमें सप्तम गोस्वामीके रूपमें प्रसिद्ध हुए हैं । इन्हीं महापुरुषकी प्रचेष्टासे ३९८ चैतन्याब्दमें कलकत्तामें 'श्रीविश्व-वैष्णव - राजसभाकी' स्थापना हुई । इन्होंने सज्जन-तोषणी नामक पत्रिकाके माध्यमसे जगत्‌में 'गौर-वाणी' और 'गौर-नाम' एवं शुद्धाभक्तिका विपुल प्रचार किया है । प्राचीन ग्रन्थोंका प्रकाशन भी इन्होंने किया । श्रीलभक्ति-सिद्धान्त-सरस्वती इन्हींके सुपुत्र थे, जिनके द्वारा इन्होंने विश्वभरमें शुद्धा-भक्तिका प्रचार कराया था । एक दिन इन्होंने गोद्रुममें भजन करते हुए कुलिया नवद्वीपसे रात्रिकालमें उत्तरदिशाकी ओर कुछ दूरी पर एक दिव्य-प्रकाश देखा, दूसरे दिन भी इन्होंने उसी दिव्य-प्रकाशको देखा तथा सपरिकर श्रीगौरनित्यानन्द प्रभुको महा-संकीर्त्तन करते हुए देखा । अब वे इसका रहस्य जाननेके लिए सरस्वती नदीको पारकर श्रीधाम मायापुर पहुँचे । वहाँ इन्होंने एक ताल वृक्षके निकट तुलसीके पौधोंको देखा । लोगोंसे पूछने पर पता लगा कि यहाँ कुछ भी फसल लगानेसे व्यर्थ हो जाती है और अपने-आप तुलसीका वन ही बना रहता है । श्रीभक्ति-विनोदठाकुर प्राचीन सरकारी नक्शों और विवरणों, विशेषकर श्रीचैतन्य-भागवत्, श्रीचैतन्य-चरितामृत और भक्तिरत्नाकर आदि ग्रन्थोंके आधार पर तथा सुप्राचीन महात्माओंके मुखसे सुनकर उस स्थान पर नित्य-सिद्ध-वैष्णव-सार्वभौम श्रीलजगन्नाथ दास बाबाजी महाराजको तथा बंगालके सुप्रसिद्ध महानुभावोंको लेकर उस स्थल पर पहुँचे । श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराजने उस स्थान पर नृत्य करते हुए उसे श्रीगौर-आविर्भाव-स्थली 'योगपीठ' के रूपमें निर्दिष्ट किया । श्रीभक्ति विनोद ठाकुरजीने वहाँ

श्रीगौरविष्णुप्रिया और लक्ष्मीप्रिया देवी तथा पंचतत्त्व इत्यादिकी स्थापना कर, वहाँकी समस्त व्यवस्थाका भार अपने पुत्र श्रीविमला प्रसाद सरस्वतीको सौंप दिया । ये विमला प्रसाद ही बादमें श्रीभक्ति सिद्धान्त सरस्वती हुए ।

श्रील भक्तिविनोद ठाकुरजीने 'नाम-हट्ट' की स्थापना कर गाँव-गाँवमें हरिनाम-संकीर्तन व शुद्धाभक्तिका प्रचार किया । ये पूर्वलीलामें ब्रजकी श्रीकमल मञ्जरी थे । श्रीगौर-सुन्दरके ये नित्य-सिद्ध परिकर हैं ।

(२) सुवर्णविहार

यह स्थान कृष्णनगर, नवद्वीप घाट रेलवे लाइन पर आमघाटा स्टेशनके पास है । सत्ययुगमें यहाँ सुवर्णसेन नामके एक राजा थे। बहुत समय तक उन्होंने राज्य किया । वृद्ध होने पर भी उन्हें विषयोंसे व राज्यसे आसक्ति बनी रही । वे विषयोंमें आविष्ट थे। सौभाग्यवश देवर्षि नारद उनके राजभवनमें पधारे । उन्हें विषयाविष्ट देखकर देवर्षिको बड़ी दया आयी । उन्होंने निर्जन स्थानमें राजाको हितकारी उपदेश देना आरम्भ किया । "महाराज ! वृथा ही अपने जीवनको नष्ट कर रहे हैं । आपने अर्थको अनर्थ और अनर्थको यथार्थ अर्थ मान लिया है, किन्तु आप अच्छी तरह विचार करें कि सांसारिक विषय अर्थ नहीं, अनर्थ हैं । यह जीवोंको विषयोंमें फँसाकर पुनः जन्म-मरणके चक्करमें डाल देता है । आप विचार कीजिए मरनेके बाद पिता, पुत्र, स्त्री, भाई बन्धु, राजा-प्रजा यह सब सम्बन्ध कहाँ रहते हैं । ये सब छूट जाते हैं । मरनेके बाद वे आपके शरीरको जला देंगे इसलिए इसमें आसक्त रहना बुद्धिमत्ता नहीं है । स्वर्गमें भी स्थायी-सुख नहीं है । अपने कर्मानुसार सुखोंको भोगनेके बाद पुनः संसारमें लौटना पड़ता है । कैवल्य मुक्तिमें जीवोंका सर्वनाश हो जाता है । न तो इसमें लौकिक सुख है और न कोई पारमार्थिक ही । इसमें जीवकी सत्ता लुप्त हो जाती है ।

अतः सौभाग्यवान् जीव मुक्ति नहीं चाहते । जीव कृष्णका नित्यदास है । भगवान्को भूलकर वह विभिन्न योनियोंमें भ्रमण करता हुआ सर्वत्र ही त्रितापों द्वारा तप्त होता रहता है । सौभाग्यवश संसारमें भ्रमण करते समय शुद्ध-सन्तोंका संग मिलने पर उनके हृदयमें पारमार्थिक श्रद्धाका उदय होता है । तब वह सद्‌गुरु पदाश्रय कर श्रीकृष्ण-भजन करना आरम्भ करता है । ऐकान्तिक रूपसे गुरु पदाश्रय कर भक्तोंके संगमें भजन करने पर उसकी श्रद्धा क्रमशः निष्ठा, रुचि, आसक्ति और भावके रूपमें परिपक्व होती है । वह कृष्ण-प्रेमको लाभ करता है । शुद्धा-भक्तिको प्राप्त करनेके लिए श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण और वन्दनादि नवधा-भक्ति साधन स्वरूप हैं। इस साधन-भक्तिके माध्यमसे ही कृष्ण-प्रेमकी प्राप्ति होती है । हे राजन ! तुम्हारा जन्म श्रीनवद्वीप-धाममें हुआ है, तुम बड़े सौभाग्यवान् हो । आने वाले कलियुगमें यहाँ पर सर्व-अवतारी स्वयं श्रीकृष्ण ही श्रीमती राधिकाजीके भाव और कान्तिको अंगीकार कर श्रीगौरांग रूपमें अवतीर्ण होकर जन साधारणमें हरिनाम और कृष्णप्रेमका वितरण करेंगे । जो लोग कृष्ण-धाममें वासकर बहुत कष्ट सहन कर श्रीकृष्णका साधन भजन करते हैं, उनको बहुत दिनोंमें सिद्धि प्राप्त होती है, किन्तु जो लोग गौर-धाममें रहकर श्रीगौर-नामका आश्रय लेते हैं, उनके अपराध सहज ही दूर हो जाते हैं और कृष्ण-प्रेमकी प्राप्ति भी उन्हें शीघ्र होती है । ऐसा कहकर नारद ऋषि गौरहरि कहते हुए भावावेशमें नृत्य करने लगे । नारद ऋषिके चले जाने पर रातमें राजाने स्वप्नमें सपरिकर श्रीगौर-हरिको कीर्तन एवं नृत्य करते हुए देखा । निद्रा भंग होने पर राजा कातर होकर रोने लग गये । उसी समय आकाशवाणी हुई, "राजन ! तुम दुःखी मत होओ, मेरी प्रकट लीलामें तुम 'बुद्धिमन्त खान' नामक परिकर होकर सब-प्रकारसे मेरी सेवा करोगे ।" श्रीबुद्धिमन्त खानने श्रीमन्महाप्रभुजीकी पुरीधाम-यात्रामें सबप्रकारसे सहायता की थी ।

वर्तमान कालमें सुवर्णसेनके राज-भवनके भग्नावशेष टीले पर आम्रकाननके भीतर जगद्गुरु श्रीलभक्ति-सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी द्वारा स्थापित श्रीसुवर्ण-विहार गौड़ीय मठ अवस्थित है।

(३) हरिहर क्षेत्र

इस क्षेत्रको महावाराणसी भी कहते हैं। गण्डकी नदीके किनारे अलकानन्दाके पूर्वी तटपर हरिहर क्षेत्र स्थित है। यहाँके प्राचीन मन्दिरमें श्रीहरि और हर एक ही श्रीविग्रहमें प्रकाशित हैं। यहाँ वैष्णव-प्रवर श्रीशम्भु, वैष्णवी-शक्ति श्रीगौरीके साथ नित्य विराजमान रहकर सब समय गौरकीर्त्तन करते रहते हैं। काशी और कैलास वाससे भी अधिक इस स्थानकी महिमा है, यहाँ मृत्युके समय शम्भु जीवोंके कानोंमें श्रीगौर-नाम प्रदानकर उन्हें भव-सागरसे पार कर देते हैं।

श्रीमहादेव अथवा शम्भु यथार्थमें 'सदाशिव' विष्णु-तत्त्व हैं। सदाशिव और विष्णुमें कोई भेद नहीं। सदाशिव एक अंशसे तमोगुणका अवलम्बन कर जगत्का ध्वंश करते हैं और जीवोंकी कामनाओंको पूर्ण करते हैं। विमुख जीवोंको मोहित कर और उन्मुख जीवोंको कृष्ण-भक्ति प्रदानकर उनका पालन भी करते हैं। ये काशी एवं कैलाशमें रहकर श्रीकृष्ण-भजन करते हैं। ये वैष्णवोंमें प्रधान एवं श्रीहरिके अतिप्रिय हैं। प्रिय होनेके नाते ही ये हरिसे अभिन्न-तत्त्व हैं।

किन्तु जो लोग रावण, कुम्भकरण, मेघनाद, कंस, जरासंध और भस्मासुरकी भाँति श्रीहरिसे विद्वेष रखते हुए शंकरजीकी उपासना करते हैं, वे असुर कहलाते हैं तथा श्रीहरिके द्वारा निहत होते हैं। श्रीमद्भागवतमें पुण्डरीक वासुदेव और उनके सखा काशी नरेशने श्रीकृष्णका विरोध किया। श्रीकृष्णने श्रृगाल, पुण्डरीक वासुदेवका तो वध किया ही काशी नरेशका भी सिर काटकर

काशीके राजद्वार पर फेंक दिया। इसपर काशी नरेशका पुत्र श्रीकृष्णपर आक्रमणकी तैयारी करने लगा। श्रीकृष्णने समस्त काशीको सुदर्शन चक्रके तापसे जलाकर भष्म कर दिया। शंकरजीने परिकरोंके सहित काशी छोड़कर इसी स्थान पर शरण ली थी।

शिवतत्त्व बहुत ही रहस्यपूर्ण है। श्रीरामचन्द्रजीके द्वारा रामेश्वरकी स्थापनाके समय एकत्र समुदाय 'रामस्य ईश्वरः' (षष्ठीतत्पुरुष) मानकर रामेश्वरकी जय देने लगा अर्थात् 'शिव ही रामके ईश्वर हैं,' ऐसा समझा। देवताओंने इसका विरोध किया और रामेश्वर शब्दका अर्थ किया– 'रामश्च असौ ईश्वरः' अर्थात् द्वन्द्व समासके द्वारा 'राम और शंकर दोनों ही ईश्वर हैं।' इस पर शंकरजी क्षुब्ध होकर श्रीशिवलिंगमें से बोले, "रामेश्वरके ये दोनों अर्थ ठीक नहीं, रामेश्वरका अर्थ है– रामः यस्य ईश्वरः स रामेश्वरः।" यहाँ बहुव्रीहि समास द्वारा अर्थ हुआ राम ही जिनके ईश्वर हैं, वे रामेश्वर हैं। इस तरह श्रीकृष्ण ही एकमात्र समस्त ईश्वरोंके ईश्वर हैं। शंकरजी इनके प्रिय सेवक हैं। श्रीमद्भागवतमें ऊषा-विवाहके समय वाणासुर व श्रीकृष्णके बीच युद्धमें शंकरजीने ऊपरसे वाणासुरका पक्ष लिया, किन्तु वे श्रीकृष्णसे हार गये और वाणासुरके प्राणोंकी रक्षा हेतु प्रार्थना करने लगे। शंकरजीकी प्रार्थना पर श्रीकृष्णने वाणासुरकी हजार भुजाओंमें से केवल चार भुजाओंको छोड़ दिया और उसे शंकरजीका परिकर बना दिया। वैष्णवजन श्रीशंकरजीको भगवान्का प्रिय और वैष्णव-मात्रका गुरु मानकर उनका आदर एवं सम्मान करते हैं। भगवद् धामोंमें सर्वत्र ही शंकरजी क्षेत्रपाल धाम-रक्षकके रूपमें गोपीभाव अंगीकार कर श्रीगोपीश्वरके नामसे प्रसिद्ध हैं और योग्य जीवोंको कृष्ण-प्रेम दानकर वृन्दावनमें प्रवेश कराते हैं। श्रीमद्भागवतमें भी 'वैष्णवानां यथा शम्भुः' शंकरजीको वैष्णव-श्रेष्ठ माना गया है। भगवान्का कोई भी आदेश अप्रिय होने पर भी सर्वथा पालन करनेके लिए तत्पर रहते

हैं । समुद्र-मंथनके बाद विष्णुकी इच्छा जानकर विषको पानकर जगत्की रक्षा की । अपने प्रभु श्रीकृष्णकी इच्छा जानकर श्रीशंकराचार्यके रूपमें वेद-विरुद्ध मायावादका प्रचार कर शुद्ध-भक्ति और भगवत्-तत्त्वज्ञानको आच्छादित किया । नास्तिक बौद्धोंका दमन कर निरीश्वर कर्मकाण्डको ध्वस्त किया । इसप्रकार भगवान्के आदेशको सदैव पालन कर प्रभुकी मनोऽभीष्ट सेवा करते हैं ।

(४) देवपल्ली (नृसिंहपल्ली)

यह स्थान सत्ययुगसे ही प्रसिद्ध है । भगवान्-नृसिंह देवने भक्त प्रह्लादके ऊपर अत्याचार करनेके कारण हिरण्य-कश्यपुका बधकर इसी स्थल पर विश्राम किया था । यह स्थान मंदाकिनीकी प्राचीन धाराके ऊपर स्थित है । यहाँ यत्र-तत्र-सर्वत्र मंदाकिनीके तटपर अलग-अलग ऊँचे टीलोंपर श्रीब्रह्माजी, इन्द्रदेव, सूर्यदेव, गणेश और विश्वकर्मा आदि देववर्ग अपने-अपने भवन बनाकर उनमें निवास करते हुए भगवान् श्रीनृसिंह देवकी उपासना करते थे । कालान्तरमें मंदाकिनीका प्रवाह बदल गया । देवताओंके स्थान भी टीलोंके रूपमें परिवर्तित हो गये, मन्दिर भी लुप्त हो गया, श्रीमन्महाप्रभुजी अपने परिकरोंके साथ नगर-संकीर्तन करते हुए, यहाँ नवद्वीप धामकी शेष-सीमा तक आते थे तथा संध्या तक हरिहर-क्षेत्र, ब्राह्मण-पुष्करिणी, सुवर्ण-विहार आदि होते हुए पुनः श्रीधाम मायापुरमें लौट जाते थे । उस समय चारों तरफ नद्-नदी, आम्र-कुञ्ज, छोटे-छोटे गण्डग्राम, हिरण,नीलगाय और कोयल इत्यादि पशु-पक्षियोंसे भरे हुए मनोरम वन-उपवन थे । संध्याके समय जब श्रीगौर-नित्यानन्द प्रभु, अद्वैताचार्य, गदाधर, मुकुन्द और श्रीवास पण्डित आदि परिकरोंके साथ भाव-विभोर होकर नृत्य-संकीर्तन करते हुए लौटते, तो प्रत्येक गाँव-गाँवमें लोग इनका स्वागत करते हुए संकीर्तनमें योगदान करते । उस समय महाप्रभुको श्रीकृष्ण लीलाकी स्मृति—कृष्ण गोचारण करते हुए वनसे गोष्ठकी ओर आ रहे हैं, अधरों पर

मुरली विराजित है, श्याम अंगों पर पीताम्बर उसी प्रकारसे सुशोभित हो रहा है, मानो नव-जलधर मेघोंके बीच स्थिर विद्युत दमक रही हो, वैजयन्ती माला पैरों तक लटक रही है, सखा-वृन्द कन्हैयाकी जय-जयकार कर रहे हैं, करोड़ों गायें हुँकार करतीं हुई कन्हैयाको घेरकर चल रही हैं, कृष्णको श्याम (काली) घटा एवं बंशी-ध्वनिको मेघ-गर्जन मानकर मयुरोंका समूह प्रमत्त हो अपने पंखोंको फैलाकर नृत्य कर रहा है । कोयलें कुहु-कुहु करतीं हुई श्याम-सुन्दरका स्वागत जता रही हैं । दोनों ओर कुञ्जोंसे, अट्टालिकाओंसे, भवनोंके झरोकोंसे और अपने वंकिम नयन-कटाक्षोंसे गोपियाँ श्याम-सुन्दरका अर्चन कर रही हैं । महाप्रभुजी श्रीमती राधिकाके आवेशमें निविष्ट होकर मानो श्यामका साक्षात् दर्शन कर रहे हैं । हठात् कोई वृद्धा अपनी नवेली बहूसे कह रही है, 'घरमें बैठी रह, बाहर मत निकलना, नहीं तो कृष्ण-सर्प तुम्हें डंस देगा । जीवन भर विष नहीं उतरेगा ।' भोली-भाली गोपी कहती, "अपनी बेटीको निषेध क्यों नहीं करतीं और आप स्वयं भी क्यों जा रही हैं ? जो होना है सो हो, मैं तो अवश्य ही जाऊँगी ।" इधर परिकरगण महाप्रभुजीको अत्यन्त कठिनतासे होशमें लाते । अब ये फूट-फूटकर रोने लग जाते । गदाधर पण्डित बड़े मधुर स्वरसे "वराह पीडं नटवर वपु.- - -" का गान करते । मुकुन्द घोष "फुलेन्दीवर कान्ति - - - -" श्लोक सुनाकर सबको भाव-विभोर कर देते । नित्यानन्द प्रभु आदि सखाओंके भावावेशमें भर जाते । श्रीमन्महाप्रभुजी अब कन्हैयाके आवेशमें आ जाते । इस प्रकार सभी लोग शची भवनमें उपस्थित होते, शचीमाता भक्त-मण्डलीकी आरती उतारतीं, अपने अंचलसे गौर-नित्यानन्दके अंगों पर लगी धूलको पोंछकर अपनी गोदीमें बैठा लेतीं ।

भक्त प्रवर प्रह्लादके पिता, हिरण्य कश्यपुको मारकर, श्रीनृसिंह देवने यहीं पर विश्राम किया था । हिरण्य-कश्यपु भक्त और भगवान्

का विरोधी था। इसने अपने पुत्र प्रह्लादको भगवन्नाम करनेसे निषेध किया था, किन्तु प्रह्लाद महाराजजीने भगवन्नाम करना नहीं छोड़ा, हिरण्य-कश्यपुने बालक प्रह्लादको मारनेके लिए तरह-तरहके अत्याचार किये। आगमें जलाने, समुद्रमें फेंकने, विष खिलाने, सर्प-डंसन आदि उपायोंको अवलम्बन कर मारनेकी चेष्टा की, किन्तु सब-प्रकारके उपायोंके करने पर भी जब वह अपने कार्यमें सफल नहीं हुआ, तब बालक प्रह्लादको पुनः पढ़नेके लिए शंडामर्क नामक गुरुभाइयोंके पास भेज दिया।

एक दिन गुरुजीकी अनुपस्थितिमें बालक प्रह्लाद असुर बालकों को कुछ उपदेश देने लगे कि मनुष्य-मात्रको बचपनसे भगवानूका भजन करना उचित है, क्योंकि यह निश्चित नहीं कि मृत्यु कब आ जाये। कोई बचपनमें, कोई युवावस्थामें, कोई प्रौढ़ावस्थामें और कोई वृद्धावस्थामें अपने-अपने कर्मानुसार मरते हैं, इसलिए बचपनसे भगवत् भजन करना उचित है। जैसे दुःख प्राप्तिके लिए कोई प्रयास नहीं करता, किन्तु दुःख भोगना ही पड़ता है। वैसे ही प्रारब्धवश अपने-आप सुख भी आयेगा। इसलिए मनुष्य जन्म पाकर भगवत्-भजन करना ही परम और ऐकान्तिक कर्त्तव्य है। जो विषयोंके संग्रहमें ही इस बहुमूल्य जीवनको व्यतीत कर देते हैं। वे पशुओंके समान हैं। क्योंकि कर्मोंके द्वारा वे जिन विषयोंका संग्रह करते हैं वह विषय-समूह और शरीर भी यहीं छुट जाता है। ये सब जीवको सुख-शान्ति नहीं दे सकते। जीव भगवानूका नित्यदास है। भगवानूसे बिछुड़ने पर ही हमारी यह दुर्दशा हो रही है। भगवद्-भजनसे ही जीव नित्य-सुखी रह सकते हैं। विशेषकर श्रीहरिनाम कीर्त्तन, भगवद्-कथाओंका श्रवण एवं उनका स्मरण करना ही जीवोंका परम कर्त्तव्य है। सभी बच्चे प्रह्लाद महाराजजीके वचनोंको सुनकर बड़े प्रभावित हुए और उच्च स्वरसे हरि-संकीर्तन करने लगे।

हिरण्य-कश्यपुको जब यह पता लगा कि प्रह्लादने पाठशालाके सभी बच्चोंको बिगाड़ दिया है और वे सम्मिलित रूपसे हरिनाम-कीर्त्तन कर रहे हैं, तब उसने प्रह्लादको राजभवनमें बुलाया। उसकी आखें लाल हो गयीं, चेहरा तम-तमाने लगा, हाथमें गदा लेकर प्रह्लादकी ओर झपटा और बोला, "देखें तुम्हारी कौन रक्षा करता है, बता तेरा रक्षक कहाँ है ?" प्रह्लादने निर्भय होकर कहा, 'केवल हमारा ही रक्षक नहीं, आपका और विश्वका रक्षक प्रभु कहाँ नहीं है ? वह तो सर्वत्र ही मुझको दीख रहा है।' हिरण्य-कश्यपुने कहा, 'अरे झूठे ! क्या वह इसमें भी है ?' यह कहते हुए उस खम्बेको चूर्ण-विचूर्ण कर दिया। साथ ही एक भयंकर गर्जन और अट्टहास की आवाज सुनायी दी, उसने चौंककर देखा कि टूटे हुए खम्भेसे मनुष्य जैसे शरीर और सिंह जैसे मुख-वाले भयानक नृसिंहको देखा। वह श्रीनृसिंह भगवानूसे लड़नेको प्रस्तुत हुआ, किन्तु भगवान्ने उसे अपने जघों पर रखकर, न दिनमें न रातमें– संध्याके समय, न घरमें न बाहर– देहलीके ऊपर, किसी भी माहके भीतर नहीं– पुरुषोत्तम अर्थात् अधिक मासमें और न अस्त्रसे न शस्त्रसे– पेटचीरकर उसे मार डाला। देवता लोग भगवानूकी स्तव-स्तुति करने लगे। भगवानूने प्रह्लादजीको वर माँगनेके लिए कहा, किन्तु बहुत कहने पर भी इन्होंने कोई वर नहीं माँगा। अन्तमें प्रह्लादजीने कहा, "विश्वके समस्त जीवोंके दुःख मैं भोगूँ और वे समस्त पापोंसे छुटकारा पाकर आपकी सेवाको प्राप्त हों।" भगवान् बड़े प्रसन्न हुए। प्रह्लाद महाराज एक आदर्श भक्त हैं, इनका स्मरण करनेसे ही समस्त सांसारिक विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं और भगवद्-भक्ति प्राप्त होती है।

इस स्थान पर श्रीनृसिंह देवकी बड़ी मान्यता है। किसी भी कामनाकी पूर्ति तथा विपत्तियोंको दूर करनेके लिए ब्रजधाममें जैसे

गिरिराज गोवर्धनकी मान्यता है, वैसे ही गौड़मण्डलमें नृसिंहदेवकी मान्यता है । बहुत दूर-दूरसे लोग इनके दर्शनोंके लिए आते हैं । पूर्व और दक्षिणकी ओर श्रीनवद्वीप धामकी अन्तिम सीमा पर यह स्थान स्थित है ।

❋❋❋❋

श्रीमध्यद्वीप

गोद्रुमसे दक्षिणकी ओर मध्यद्वीप स्थित है । मजीदाग्राम, वामनपाड़ा, सीमुलगाछी और ब्रह्मनगर आदि ग्राम-समूह तक मध्यद्वीप व्याप्त है । मध्यद्वीपका अपभ्रंश ही मजीदाग्राम है । इसमें (१) सप्तर्षि भजन-स्थल, (२) नैमिषारण्य, (३) पुष्कर तीर्थ,(४) उच्च हट्ट, (५) हंसवाहनशिव तथा (६) पंचवेणी आदि स्थान दर्शनीय हैं । यहीं पर सत्ययुगमें मरीचि, अत्रि, अंगीरा, पुलह, क्रतु, पुलस्थ और वशिष्ठ ये सप्तर्षि पितामह ब्रह्माके निकट प्रसंगवश भविष्यत् कलिमें अवतीर्ण होने वाले श्रीगौरहरिके भजनकी रीति तथा गौरहरिने जिस देव-दुर्लभ प्रेमको चाण्डाल तक सभीको वितरण किया था, उस प्रेमतत्त्वके सम्बन्धमें कुछ बतलानेके लिए प्रार्थना की । ब्रह्माजीने प्रसन्न होकर उन ऋषियोंको नवद्वीपमें गमन कर श्रीगौर-हरिका नाम-संकीर्तन करने और उनकी लीलाओंका स्मरण करनेका आदेश दिया । ब्रह्माजीने और भी कहा कि इसके द्वारा श्रीनवद्वीप धाम स्वयं कृपाकर उनलोगोंके हृदयमें श्रीगौरप्रेमका उदय करायेंगे । जिन लोगोंको नवद्वीप धामके प्रति प्रीति है, वही लोग सहजमें ही ब्रजवास करते हैं । नवद्वीप धाममें अपराधका विचार नहीं है । श्रीनवद्वीप धामकी ऐसी महिमा सुनकर वे लोग इस धामके अन्तर्गत मध्यद्वीपमें इसीस्थान पर कुटियोंका निर्माण कर श्रीगौर-सुन्दरके नाम, रूप, गुण और लीलाओंका जोर-जोरसे कीर्तन करते हुए उनकी कृपाके लिए प्रार्थना करने लगे । उन्होंने अन्न, जल, निद्रा और अन्यान्य भोगोंका सम्पूर्ण रूपसे त्यागकर गौरनामका कीर्त्तन करते-करते एक दिन मध्याह्नके समय सपरिकर महामोहन श्रीगौरसुन्दरका दर्शन किया । उन्होंने श्रीराधाभाव-द्युति-सुवलित-तनु श्रीगौरसुन्दरके चरणोंमें आत्म-निवेदन कर विविध प्रकारसे उनकी स्तव-स्तुतियाँ की । श्रीगौरसुन्दरने ऋषियोंको अन्याभिलाष, ज्ञान, कर्म, तपस्या और योग आदिके

प्रयासोंको छोड़कर केवल श्रीकृष्ण-कीर्त्तन करनेका उपदेश दिया और यह भी कहा कि कुछ दिनोंमें ही वे अपने समस्त परिकरोंके साथ श्रीनवद्वीप धाममें लीलाओंका प्रकाश करेंगे । उस समय तुमलोग मेरी लीलाओंका दर्शन करोगे । श्रीगौरसुन्दरके अन्तर्द्धान होने पर सप्तऋषि इस स्थान पर श्रीगौर-कृष्णके भजनमें तत्पर हो गये । श्रीमन्महाप्रभुजी प्रकट लीलाके समय परिकरोंके साथ नगर-कीर्त्तन करते-करते इस स्थान पर पधारते थे । आज भी यहाँ ऋषियोंकी कुटियोंके स्थान पर उनका भग्नावशेष सप्तटीलाके रूपमें दीख पड़ता है ।

(१) नैमिषारण्य

सप्तर्षि टीलेके दक्षिणमें परम-पवित्र श्रीगोमती नदी दृष्टिगोचर होती है । गोमतीके निकटवर्ती उपवनोंको नैमिषारण्य कहते हैं यहीं पर अट्ठासी हजार ऋषियोंने श्रीसूत गोस्वामीके मुखसे श्रीगौर-भागवतका श्रवण किया था । पंचानन महादेवने अपने वाहन वृष (सांड़) को छोड़कर हंसके ऊपर चढ़ अपने परिजनोंके साथ श्रीगौरहरिकी लीला-कथाओंका श्रवण किया था ।

(२) ब्राह्मण पुष्कर

इसका वर्त्तमान नाम वामन-पोखरा या वामन-पुरा है । सत्ययुगमें जीवनदास नामका एक ब्राह्मण समस्त तीर्थोंमें भ्रमण करता हुआ श्रीनवद्वीपके इस स्थानमें आकर वास करने लगा । उसके मनमें पुष्कर तीर्थमें स्नान करनेकी बड़ी तीव्र लालसा हुई । अत्यन्त व्याकुल होने पर रातको स्वप्नमें दैववाणी सुनी- "तुम यहाँ पर कुछ दिन रहकर भगवन्नाम कीर्त्तन करो, तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी ।" वह यहीं पर कुटी बनाकर जीवनके अन्तिम समय तक भजन करता रहा । अत्यन्त वृद्ध होने पर तीर्थराज पुष्करने कृपा-पूर्वक एक सुन्दर सरोवरके रूपमें दर्शन देकर इसमें स्नान करनेके लिए कहा । स्नान करते ही ब्राह्मणको दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो गयी । उसने

पुष्कर राजको प्रत्यक्ष रूपमें देखा । पुष्कर राजने कृपाकर उपदेश दिया कि हे ब्राह्मण ! अन्यान्य तीर्थोंमें सौ बार स्नान करनेसे जो फल होता है, नवद्वीप धाममें एक रात वास करनेसे वह फल होता है । अतः मैं भी पृथ्वीके समस्त तीर्थोंके साथ यहाँ पर नित्य वास करता हूँ । भविष्यत् कलिमें श्रीगौर-हरि (श्रीचैतन्यमहाप्रभु) यहाँ पर प्रकट होकर श्रीकृष्णनाम कीर्त्तनके माध्यमसे कृष्णप्रेमका वितरण करेंगे । तुम भी प्रकट लीलाके समय जन्म लेकर उनकी लीलाका दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त करोगे ।

(३) उच्चहट्ट

इसे 'हाटडांगा' ग्राम भी कहते हैं । यह स्थान ब्रह्मावर्तके अन्तर्गत कुरुक्षेत्रका स्थान है । इस स्थानके एक ओर सरस्वती, दूसरी ओर दृषद्वती बहती है । श्रीमन्महाप्रभु अपने समस्त परिकरोंको लेकर ब्राह्मण-पुष्कर होते हुए (कभी-कभी चौदह मृदंगोंके साथ) कीर्त्तन करते-करते यहाँ पधारते थे । इस स्थान पर देवता लोग दलबद्ध होकर उच्च कण्ठसे गौरनाम तथा गौरलीला-कथाओंका कीर्त्तन करते थे, इसलिए इस स्थानको 'उच्चहट्ट' कहते हैं । (उच्च=ऊँचे स्वरसे तथा हट्ट=एकत्रित होकर अथवा हाटडांगा=देवताओंके एकत्रित होनेका स्थान) कुरुक्षेत्र अभिन्न नवद्वीपके इस स्थान पर नित्य निवास कर भजन करनेसे शीघ्र ही श्रीगौरसुन्दरकी कृपा प्राप्त होती है ।

(४) पंचवेणी

उच्चहट्टके पास ही पंचवेणी नामक स्थान है । यहाँ भगवती-भागीरथी गंगाके साथ मंदाकिनी, अलकानन्दा गुप्तरूपमें सरस्वती तथा पश्चिममें गंगाके साथ भोगवती और मानस गंगाका संगम क्षेत्र है । यह स्थान महा-महिमाशाली महाप्रयाग है । पितामह ब्रह्माजीने यहाँ गंगाके दोनों किनारों पर करोड़ों यज्ञ किये हैं । यहाँ जल, थल या अन्तरिक्षमें जहाँ कहीं भी मृत्यु होनेपर जीव अनायास ही

श्रीगोलोक धामको प्राप्त होता है । श्रीगौर-सुन्दरकी सेवाके लिए सभी नदियाँ यहाँ पर मिलती हैं, श्रीवेदव्यासादि सर्वज्ञ ऋषियोंकी ऐसी मान्यता है । चौदह-भुवनोंमें इस पंचवेणीके समान कोई भी तीर्थ स्थान नहीं है । जो लोग श्रद्धापूर्वक श्रीमन्महाप्रभुका स्मरण करते हुए इस पंचवेणीमें स्नान या आचमन करते हैं, उनलोगोंके हृदयमें सहज ही श्रीमन्महाप्रभुजीकी पवित्र लीलाओंकी स्फूर्ति होती है तथा श्रीश्रीराधाकृष्णके श्रीचरण-कमलोंमें प्रेममयी भक्तिका आविर्भाव होता है ।

❋ ❋ ❋ ❋
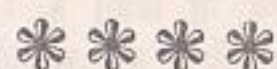
श्रीकोलद्वीप

श्रीकोलद्वीपके अन्तर्गत गंगाप्रसाद, कोलआमाद, समुद्रगढ़, चापाहाटी, गदखलीकाचर, पारमेदीया या गादखलीर, तेघरीपाड़ा, तेघरीकोल तथा वर्तमान नवद्वीप शहर जिसे अपराध भञ्जन पाट या कुलिया कहते हैं, आदि स्थान हैं । श्रील भक्ति विनोद ठाकुरने सज्जनतोषणी पत्रिकामें इस स्थानके सम्बन्धमें एक गवेषणात्मक प्रबन्धमें लिखा है कि श्रीनवद्वीपके अन्तर्गत श्रीकुलियाधाम पृथ्वीमें एक अतुलनीय स्थान है, इसे श्रीपाट कुलिया भी कहते हैं ।

श्रीकोलद्वीप श्रीकोलदेवका आविर्भाव-स्थल है । गंगाके पश्चिम तटपर पंचवेणीके संगम (पंचवेणी पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों तटों पर स्थित है) स्थलके सन्निकट उच्चभूमि श्रीकुलिया पहाड़के नामसे प्रसिद्ध है ।

सत्ययुगमें यहाँ एक वासुदेव नामके एक विप्र रहते थे । वे यहीं पर श्रीवराहदेवकी उपासना करते थे । उनकी उपासनासे प्रसन्न होकर भगवान् वराह देवने उनको दर्शन दिये । जिस नृसिंह रूपमें उन्होंने भक्त प्रह्लादकी रक्षाकर हिरण्य-कश्यपुका वध किया था, उसी रूपको देखकर भाग्यवान् विप्र आतुर होकर उनकी स्तव-स्तुति करने लगा । पर्वतके समान आकार वाले श्रीकोलदेव (श्रीवराहदेवको ही कोलदेव कहते हैं।) ने प्रसन्न होकर कहा, 'यह नवद्वीप धाम मेरा बड़ा ही प्रिय स्थान है । त्रिभुवनमें इसके समान कोई भी धाम नहीं है, यह गुप्त वृन्दावन है । पृथ्वीके समस्त धाम यहाँ नित्यकाल विराजमान रहते हैं । श्रीधाम नवद्वीपमें निवास करनेसे सभी तीर्थोंमें वास करनेका फल अनायास ही प्राप्त हो जाता है । यहीं पर कलियुगमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण श्रीमती राधिकाजीके भाव और अंगकान्तिको लेकर श्रीगौरांग रूपमें अवतीर्ण होंगे । वे अपने परिकरोंके साथ विविध प्रकारकी लीलायें करते हुए, सर्वसा-

धारणमें श्रीहरिनाम संकीर्त्तन प्रचारके माध्यमसे कृष्णप्रेमका वितरण-करेंगे । तुम उस समय जन्म लेकर उन लीलाओंको दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त करोगे । अभी तुम इस रहस्यको गोपनीय रखना ।'' ऐसा कहकर श्रीकोलदेव अन्तर्द्धान हो गये । श्रीवासुदेव विप्र यहीं पर उनकी आराधनामें लग गये ।

यह स्थान अभिन्न श्रीगोवर्धन है । इसके उत्तरी भागमें श्री बहुलावन है तथा दक्षिणी भागमें श्रीधाम वृन्दावन रास-स्थली है। इसको अपराध-भञ्जन कुलिया भी कहते हैं । श्रीमन्महाप्रभुजी संन्यास लेनेके पश्चात् श्रीपुरी धाममें उपस्थित हुए तथा दक्षिण भारतमें भ्रमणकर पुरी लौटे । पुनः श्रीधाम वृन्दावनका दर्शन करनेके लिए यात्रा की । हजारों लोग उनके साथमें चले, वे पानीहाटी, कुमार-हट्ट, काञ्चन-पल्ली इत्यादि होते हुए विद्यानगरमें वाचस्पतिके घर पहुँचे, किन्तु वहाँ भीड़ होने पर पास ही कुलिया ग्राममें भक्त माधवदासके घरमें सातदिन तक रहे । यहीं रहते समय उन्होंने कुलिया नगर निवासी गोपाल-चापाल नामक एक वैष्णवापराधी तथा नामापराधी ब्राह्मणका एवं देवानन्द पण्डित नामक एक दूसरे वैष्णव-अपराधीका उद्धार किया था ।

गोपाल-चापाल (गोपाल-चक्रवर्ती) सप्तग्रामके प्रसिद्ध श्रीहिरण्य और गोवर्धनदास मजूमदारका राज्यकर्मचारी था । यह बड़ा पण्डित और रूपवान् था । एकदिन श्रीहिरण्य-गोवर्धनकी राजसभामें राज-पुरोहित श्रीबलराम पण्डित श्रीहरिदास ठाकुरजीको लेकर उपस्थित हुए । हरिदास ठाकुरजी प्रसंगवश श्रीहरिनामका माहात्म्य वर्णन करने लगे । हरिदास ठाकुरजीने कहा-''एक शुद्ध-हरिनामके उच्चारणकी बात ही क्या ? नामाभास (संकेत, परिहास, अवहेला, स्तोभ-अवज्ञा या उपेक्षा) से भी अनायास ही मुक्ति मिल जाती है । शुद्ध हरिनामसे तो भगवद्-प्रेमकी प्राप्ति होती है । जिस प्रेमके द्वारा वैकुण्ठ एवं तदुपरि श्रीगोलोक धामकी प्राप्ति होती है ।'' गोपाल

हरिदास ठाकुरकी बात सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हो गया, वह उनके प्रति अपमान-जनक शब्दोंका प्रयोग कर हरिदास ठाकुरका तिरस्कार करने लगा । और यह कहते हुए सभा-स्थलका परित्याग किया, ''मुक्ति तो केवल ज्ञानके द्वारा ही प्राप्त होती है, हरिनामके द्वारा कदापि मुक्ति नहीं मिल सकती । यदि हरिनामके द्वारा मुक्ति मिले तो मेरी नाक गलकर गिर जाय अन्यथा यदि हरिदासकी बात गलत हो तो उसकी नाक गलकर गिर जाय ।'' सभामें हाहाकार मच गया, बलराम प्रभुने कहा, ''तुमने परम वैष्णव हरिदास ठाकुरजी के चरणोंमें अपराध किया है, तुम्हारा कभी भी कल्याण नहीं हो सकता । इस भयंकर वैष्णव-अपराधसे तुम्हारा सर्वनाश होना निश्चित है ।'' गोवर्धन दासजीने भी उस गोपाल चक्रवर्तीको नौकरीसे निकाल दिया । क्षमाकी मूर्ति परम-भागवत श्रीलहरिदास ठाकुरजी द्वारा गोपालका कुछ अपराध न लेने पर भी तीसरे दिन ही उस विप्रको कुष्ठ-व्याधि लग गयी । उसकी चंपक-पुष्पके समान सुन्दर नासिका, हाथ तथा पैरोंकी अंगुलियाँ गलकर गिर गयीं । श्रीमन्महाप्रभु बहुत दिनोंके पश्चात् कुलिया ग्राममें पधारे, तब यह गोपाल-चक्रवर्ती भी यहीं आकर बहुत आर्तनाद करता हुआ, उनके शरणागत हुआ और अपने पूर्वकृत-वैष्णव-अपराधके लिए पुनः क्षमा माँगने लगा । महावदान्य चैतन्य महाप्रभुजीने उस नामापराधी ब्राह्मणको क्षमा कर दिया और उसे निरन्तर हरिनाम करनेका उपदेश दिया । कुछ ही दिनोंमें हरिनाम करते-करते उसकी कुष्ठ-व्याधि दूर हो गयी और पूर्ववत् सुन्दर सुकान्त हो गया । अब यह नाम परायण भगवद्-भक्त होकर दास बन गया ।

एक दूसरा नवद्वीपवासी चापाल गोपाल बहुत ही दुराचारी ब्राह्मण था । श्रीवास पण्डितके घर हरि-संकीर्त्तन होता था, जिसको वह सहन नहीं कर पाता था । इसलिए वह श्रीवास पण्डितके प्रति द्वेष करने लगा और तरह-तरहसे उन्हें कष्ट देनेकी चेष्टा करता ।

विमुख लोगोंको मोहित करते है तथा उन्मुख-जीवोंको श्रीगौर-सेवामें नियुक्त करते हैं। ये धाम-रक्षक स्वरूप हैं। यहाँ नित्य-स्थित रहने पर भी, मायापुरका अधिकांश भाग गंगाके गर्भमें विलीन होने पर कुछ कालके लिए प्रौढ़ामाया भी कुलिया पहाड़पुरमें भक्तोंके द्वारा सेवित हो रही हैं। आजकल लोग इस स्थानको 'पोड़ा माँ तला' कहते हैं।

माँ यशोदाके गर्भसे श्रीकृष्णके जन्मके साथ ही यह योगमाया भी आविर्भूत हुई थीं। भगवानूकी पराशक्ति योगमाया एक हैं। वे विविध रूपोंमें भगवानूकी सेवा करतीं हैं, वही असुरोंको मोहित करने एवं उनको दण्ड देनेके लिए महामायाके रूपमें प्रकट होती हैं। जैसे नन्दभवन या ब्रजमें वे योगमाया हैं और वही योगमाया यशोदा माँको मुग्धकर उनमें कृष्णके प्रति पुत्रकी भावना कराती हैं। यशोदा वात्सल्यसे मुग्ध होकर कृष्णको ओखलसे बाँधती हैं, डराती-धमकाती हैं और पालन-पोषण करती हैं। कृष्णकी समस्त लीलायें योगमायाके द्वारा सम्पन्न होती हैं, किन्तु वे ही कंसके निकट मथुरामें महामायाके रूपमें प्रकट हो जाती हैं। दुर्गा, काली, विन्ध्य-वासिनी, कामाख्या, भद्रा एवं चण्डी आदि इनके ही विविध रूप हैं। ये विमुख-जीवोंको धन, सम्पत्ति, पुत्र और परिवार आदि विषयोंको प्रदानकर मोहित करतीं हैं तथा योगमाया पौर्णमासी रूपमें जीवोंको चित्-शक्ति प्रदान कर श्रीश्रीराधाकृष्ण युगल-सेवामें अधिकार प्रदान करतीं हैं।

योगमाया श्रीभगवद्-धामको आच्छादित करके रखतीं हैं, जिससे विमुख-जीव इसमें प्रवेश न कर सके तथा अपनी महामायाके जाल के ऊपर ही कर्मी, ज्ञानी आदि अन्य प्रकारके दूसरे जीवोंको रखती हैं, जिससे वे धामका दर्शन नहीं कर पाते।

(२) श्रीजगन्नाथदासबाबाजी महाराजकी भजन-कुटी एवं समाधि-स्थल

श्रीजगन्नाथ दास बाबाजी महाराज पहले व्रजमण्डलके सूर्यकुण्डमें निवास कर भजन करते थे। अपने जीवनके शेष भागमें ये श्रीधाम नवद्वीपमें रहकर भजन करते थे। ये अपने समयमें गौड़मण्डल, ब्रजमण्डल और क्षेत्रमण्डलके सबसे बड़े विद्वान्, रसिक और सिद्ध-वैष्णव माने जाते थे! इसलिए ये वैष्णव-सार्वभौमके नामसे प्रसिद्ध हैं। इन महापुरुषने ही श्रीभक्ति-विनोद ठाकुरकी प्रार्थनासे श्रीगौर-जन्म-स्थली श्रीधाम-मायापुरका स्थान निर्णीत किया था। इन्हींके कहनेसे श्रीगौर-जन्म-स्थली मायापुरमें एक विशाल मन्दिरका निर्माण हुआ है तथा उसमें श्रीश्रीगौर, विष्णुप्रिया, लक्ष्मीदेवी एवं पंचतत्त्व आदि श्रीविग्रह सेवित हो रहे हैं। मायापुर धामको प्रकाशित करवानेके दो वर्ष बाद ही १३०२ बंगाब्दमें वे अप्रकट लीलामें प्रवेश कर गये। बंगालके मयमनसिंह जिलेके टंगाइल मुहकमे के अन्तर्गत किसी ग्राममें इनका आविर्भाव हुआ था। लगभग १४४ वर्षों तक ये इस धरा-धाममें प्रकट थे। कहते हैं श्रीभक्ति-विनोद ठाकुर पर महती कृपाकर इनके हृदयमें अपना सारा भजन-बल, शास्त्रीय-ज्ञान और प्रेमा-भक्तिका संचार किया था। ये जोर-जोरसे महामन्त्रका कीर्त्तन व उच्चारण करते थे।

एक बार इनके शिष्योंने श्रीभक्ति-विनोद ठाकुरसे कहा कि हम लोग घर छोड़कर भजन-शिक्षाके लिए इनके पास आये हैं। किन्तु बाबाजी महाराज हमको फूल और सब्जियोंके पौधे लगाकर, उसके द्वारा भगवत्-सेवाके लिए निर्देश देते हैं। हमें अष्टकालीय लीला-स्मरणादिकी शिक्षा नहीं देते। आप इनसे हमें भजन-शिक्षा देनेके लिए प्रार्थना करें। इस पर भक्तिविनोद ठाकुरजीने शिष्योंको समझाया कि अनर्थ-ग्रस्त जीवोंके लिए तुलसी, पुष्प-फल, और सब्जियोंके वृक्ष लगाकर श्रीठाकुरजीकी सेवा करनेसे ही उनका अनर्थ व अपराध दूर होगा, अन्यथा उनसे शुद्ध-चिन्मय-नाम नहीं होगा। अनाधिकार जीवोंको अष्टकालीय लीला स्मरणादिसे उनके अनर्थ और अधिक बढ़ जाते हैं। धीरे-धीरे वे भजनसे च्युत हो जाते हैं। इसलिए श्रीलबाबाजी महाराजके उपदेशानुसार साधन करने

करनेमें ही हमारा कल्याण है।

श्रीजगन्नाथ बाबाजी महाराजको कुछ लोग जो प्रणामी दे जाते, उसे वह संग्रह करके रखते। एक दिन सेवकोंसे उन्होंने रसगुल्ले आदि मंगवाये और ठाकुरजीको भोग देकर धामकी गऊओं और कुत्तोंको प्रसादके रूपमें खिलानेका आदेश दिया, किन्तु सेवकोंकी इच्छा यह थी कि उन पैसोंसे वहाँके बाबाजी-लोगोंको निमन्त्रित कर एक महोत्सव किया जाय। बाबाजी महाराजने उनको ऐसा करनेसे निषेध किया। केवल वेशधारी, छिप-छिपकर व्यभिचार करनेवाले, ऊपरसे तिलक-माला-धारण किये हुए नामधारी वैष्णवोंको खिलानेकी अपेक्षा धामकी गऊओं और कुत्तोंको खिलानेसे अधिक फल होता है। इससे शुद्धाभक्तिमें प्रवेश होता है। ऐसा कहकर सारे रसगुल्लोंको गऊओं और कुत्तोंको खिला दिया गया।

अत्यन्त वृद्धावस्थामें बाबाजी महाराजकी आंखोंकी पलकें नीचे तक ऐसी झुकी रहतीं कि वे देख नहीं पाते थे। जब सेवक लोग थालमें महाप्रसाद लाते, तब ये वहाँके कुत्तेके छः-सात बच्चों (पिल्लों) की प्रतीक्षा करते। जब वे आ जाते, तब उन्हें (हाथकी अंगुलियोंसे) पूरे छह-सात तक गिन लेते तथा उनको अपने थालमें खा लेने देते थे। तब कहीं स्वयं प्रसाद सेवा करते थे। यदि सेवकोंने उन पिल्लोंको कहीं छिपा दिया, तो वे रूठकर प्रसाद-सेवा नहीं करते थे तथा कहते थे, "अरे! ये धामके पिल्ले हैं, साधारण नहीं हैं। तुम लोग नहीं समझते हो। जब तक ये यहाँ आकर मेरे साथ प्रसाद-सेवा नहीं कर लेते, मैं प्रसाद-सेवा नहीं करूँगा।" श्रीधामके प्रति इनकी ऐसी अद्‌भुत निष्ठा थी।

इनके सेवक इनको टोकरीमें रखकर अपने सिर पर उठाकर कभी मायापुर, कभी गोद्रुम-कुञ्ज इत्यादि स्थानों पर ले जाया करते। श्रीधाम मायापुरमें श्रीमन्महाप्रभुके जन्म-स्थान पर ये चार-चार हाथ ऊँचे उछल कर नृत्य करते हुए कीर्त्तन करते थे।

(३) कुलिया-धर्मशाला (एवं श्रीलगौरकिशोरदास बाबाजी महाराज)

यह श्रीलगौरकिशोर दास बाबाजी महाराजजीका सामयिक भजन स्थल है। अवधूत-परमहंसकुल चूड़ामणि श्रीश्रीलगौर किशोरदास बाबाजी महाराजजी भी पहले व्रजके विभिन्न स्थानों—वृन्दावन, गोवर्धन, राधाकुण्ड, सूर्यकुण्ड, नन्दग्राम एवं बरसाना आदि कृष्णलीला-स्थलियोंमें कठोर वैराग्य पूर्वक भजन करते थे। उनका इतना कठोर वैराग्य था कि वे भूख लगने पर कभी-कभी श्रीराधा-कुण्ड अथवा श्रीयमुनाजीकी कीचड़ खाकर "हा राधे! हा कृष्ण!" कहते हुए विप्रलम्भ भावसे भजन करते थे।

"कोथाय गो प्रेममयी राधे राधे, कोथाय गो व्रजविलासिनी राधे-राधे।" इत्यादि पदोंका उच्च स्वरसे भाव-पूर्वक गायन करते हुए एक वनसे दूसरे वनमें घूमते रहते थे। पीछे श्रीनवद्वीप धामकी कृपा-प्राप्तिके लिए ये भी श्रीनवद्वीप धाम पधारे थे। इन्होंने शिष्य न करनेके लिए संकल्प किया था। किन्तु श्रीविमला प्रसाद सरस्वती (प्रसिद्ध श्रील सरस्वतीठाकुर) के बाबाजीसे दीक्षा ग्रहणके लिए अनशन करने पर तथा श्रीश्रील भक्ति-विनोद ठाकुरके आग्रहसे श्रीलगौरकिशोर बाबाजीने बालक सरस्वतीको वैष्णवी-दीक्षा प्रदान की। ये सरस्वती ठाकुर ही वैष्णव जगत्‌में ॐ विष्णुपाद श्री-श्रीमद्‌भक्ति-सिद्धान्त सरस्वतीठाकुर 'प्रभुपाद' के नामसे प्रसिद्ध हुए।

बाबाजी महाराज प्रतिष्ठाको भजनके लिए हानिकारक मानते थे। सूअरकी विष्ठा समझ उससे बहुत दूर रहा करते थे। लोग इनसे धन-जन-पुत्र-परिवार आदि विषयोंके लिए ही आशीर्वाद माँगते और इसके लिए ही इन्हें तंग किया करते। एक समय बाबाजी महाराजने ऐसे विषयी लोगोंसे बचनेके लिए नगर-पालिका द्वारा निर्मित कुलिया-धर्मशालाके कच्चे शौचालयमें निवास करना आरम्भ कर दिया था। कुछ दिनोंके बाद वहाँके जिलाधिकारीको पता लगने पर वे वहाँके पुलिस अधीक्षकके साथ स्वयं बाबाजीके पास मिलनेके लिए आये। बाबाजीने भीतरसे किवाड़ बन्द कर लिये,

बहुत आग्रह करने पर भी उनलोगोंसे नहीं मिले । उनलोगोंने किसी अच्छे स्थानपर कुटी निर्माण करनेके लिए प्रार्थना की, किन्तु बाबाजी महाराज इससे सहमत नहीं हुए । बाबाजी महाराजके विचारसे विषयी-लोगोंके संगकी दुर्गन्ध पाखानेकी दुर्गन्धसे भी भीषण और भक्तिके लिए बाधक होती है । इसी धर्मशालामें बाबाजी महाराज अप्रकट हुए थे ।

इन्हीं दिनों हमारे परमाराध्य श्रीलगुरु-पाद-पद्म अष्टोत्तरशतश्री श्रीलभक्ति प्रज्ञानकेशव गोस्वामी महाराज (उस समय इनका नाम श्रीविनोद बिहारी ब्रह्मचारी) श्रीधाम मायापुरमें इनके दर्शनोंके लिए उपस्थित हुए । पहले तो बाबाजीने भीतरसे धीमे स्वरसे कहा, "मैं बहुत ही अस्वस्थ हूँ, मैं दरवाजा नहीं खोल सकता ।" किन्तु विनोद बिहारी ब्रह्मचारीने बतलाया,"मैं श्रील सरस्वती ठाकुरका आश्रित सेवक हूँ ।" तब झटसे बाबाजीने किबाड़ खोलकर स्नेहसे उनके सिर पर हाथ रखकर कहा, "तुम निर्भय होकर साधन-भजन करो । तुम्हारी समस्त विपत्तियोंको मैं स्वयं ग्रहण करता हूँ ।" हमारे श्रील गुरु-पाद-पद्म श्रीलबाबाजी महाराजकी इस कृपाका सार-णकर भावमें विह्वल हो जाते थे ।

किसी समय एक व्यक्ति श्रीलबाबाजी महाराजजीसे अपने ऊपर कृपा करनेके लिए बार-बार आग्रह करने लगा । तब बाबाजीम-हाराजने झट अपने डोर और कौपीन खोलकर उससे कहा,"लो मेरी कृपा लो ।" वह इस डरके मारे (कि संसार छोड़ना पड़ेगा) वहाँसे तुरन्त भाग गया ।

किसी समय एक युवक कुछ दिनों तक उनके आश्रमके पास रहकर अपनेको इनका शिष्य बतलाता था । थोड़े ही दिनोंके बाद वह घर लौट गया तथा विवाह कर अपनी दुल्हनके साथ बाबाजी महाराजके पास आया । बाबाजीको प्रणाम कर यह कहते हुए शुभ-आशीर्वाद माँगा, "बाबाजी महाराज मैंने कृष्णके संसारके लिए

एक कृष्ण-सेविकाका संग्रह किया है । आप हमें आशीर्वाद दें ।" बाबाजीने गम्भीर होकर कहा, "बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि तुमने कृष्णका नया संसार बसाकर एक कृष्ण-दासीका संग्रह किया है, किन्तु खबरदार ! कृष्णदासीके प्रति कभी भोग-बुद्धि मत रखना, कभी इसकी कुछ सेवा ग्रहण मत करना, सदा-सर्वदा अपनी पूज्या समझकर इसकी सेवा करना, यह कृष्णकी दासी है । कृष्णकी दासी जगत्के लिए परमादरणीय एवं पूज्य होती है ।" ऐसा सुनते ही वह युवक अपनी पत्नीको लेकर वहाँसे भाग गया ।

किसी समय एक नामधारी बाबाजीने इन बाबाजी महाराजको बड़ी प्रसन्नताके साथ यह शुभ संवाद दिया कि मैंने श्रीनवद्वीप धाममें एक सुन्दर जगह खरीद ली है, वहाँ कुटी निर्माण कर भजन करूँगा । बाबाजीने सुनकर उत्तर दिया, "बड़े आश्चर्यकी बात है कि आपने नवद्वीप-धाममें एक जगह खरीदी है, यहाँका एक-एक धूलिकण अप्राकृत है तथा चिन्तामणिसे भी करोड़ों गुणा अधिक मूल्यवान् है । विश्व-ब्रह्माण्डकी सारी सम्पत्ति बेचकर भी उसके द्वारा यहाँकी एक रेणु कणका भी मूल्य नहीं चुकाया जा सकता, किन्तु आपने यहाँका भूमि-खण्ड कैसे खरीद लिया ? मेरी समझमें नहीं आ रहा है ।" वह व्यक्ति लज्जित होकर बाबाजीके चरणोंमें गिर गया ।

इन महापुरुषकी समाधि पहले गंगाके पश्चिम तटपर कुलि-याग्राम (नवद्वीप शहर) में ही थी । परन्तु भगवती-भागीरथीके कटावके कारण श्रील सरस्वती ठाकुरने इसे उठवाकर श्रीचन्द्रशेखर भवनके निकट स्थित श्रीराधाकुण्डके पास स्थापित करवा दिया ।

लौकिक दृष्टिसे अन्ध और अशिक्षित होने पर भी तत्कालीन बड़े-बड़े भागवत वक्ता भी श्रीमद्भागवतके श्लोकोंका अन्तर्निहित रसपूर्ण अर्थ सुननेके लिए इनके पास आते थे ।

(४) श्रीलबंशीदास बाबाजी महाराज

श्रील बंशीदास बाबाजी एक भजनानन्दी महात्मा थे । ये श्रीगौर किशोरदास बाबाजी महाराजके सम-सामयिक थे । ये गंगा किनारे कुलियाके 'नूतन-चढ़ा' पर एक झोंपड़ी बनाकर भजन करते थे । ये श्रीगौर-नित्यानन्दके श्रीविग्रहोंकी भाव सेवा करते, उन्हें बड़े प्रेमसे लाड़ लड़ाते, कभी उलाहना भी देते, कभी उनसे लड़ते-झगड़ते और कभी उनके विरहमें रोते भी थे । उनके हृदयगत भावों और अनुरागको समझना, बड़े-बड़े तत्त्वदर्शियोंके लिए भी अगम्य था । एक बार वे अपनी भजन-कुटीके पास कनेरके वृक्षसे कुछ पुष्प चयन कर रहे थे, एक छोटेसे बालकने इन्हें निषेध किया, इसपर कुछ विवाद सा भी हो गया, बच्चेने धक्का देकर उन्हें गिरा दिया उनके पैरोंमें चोट लग गयी । बाबाजी वहाँसे लौटकर श्रीगौर-नित्यानन्दजीको भला-बुरा कहने लगे 'तुमलोगोंने मुझे पुष्प-चयनके लिए क्यों भेजा ? फिर उस बच्चेसे मुझे गिरवा क्यों दिया ? मैं तुम्हारी सेवा नहीं करूँगा ।' वस रूठ गये । कुछ देरके पश्चात् बाबाजीसे नहीं रहा गया तथा उसी स्थितिमें सेवामें लग गये । वे नाम-भजनमें ऐसे प्रमत्त हो जाते कि उन्हें यह भी ज्ञात नहीं रहता कि एकादशी कब है ? किसी अन्य तिथिमें ही तीन-चार दिनों तक एकादशीका निर्जला उपवास करते । कभी नित्यानन्द प्रभुकी बड़ी प्रसंशा करते और महाप्रभुजीको नटखट बतलाते । कभी विषयी लोगों तथा वैष्णव-नामधारी विषयी लोगोंसे बचनेके लिए अपनी झोंपड़ीके चारों तरफ मछलियोंके काँटे और पंख आदि अपवित्र वस्तुओंको फैला देते, जिससे साधारण लोग उन्हें असदाचारी समझकर दूर रहें । श्रीलभक्ति-सिद्धान्त-सरस्वती इनको एक सिद्ध-महापुरुष मानकर बड़ा सम्मान करते थे । श्रीसरस्वती ठाकुरके शिष्यगण इनके दर्शन करनेके लिए जाते थे। इनकी बातों एवं भावोंको समझना बड़ा कठिन था, क्योंकि ये सदैव भक्तिके अन्तर्राज्य

में विचरण करते थे ।

(५) श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ

श्रीकोलद्वीपका उत्तरी भाग श्रीगोवर्धन और बहुला वन है तथा दक्षिणी भागमें श्रीवृन्दावनकी रास-स्थली है यहाँके पश्चिमी तटपर श्रीयमुनाजी प्रवाहित हो रही हैं । श्रीयमुनाके तट पर वन-उपवनोंके मध्य वंशीवट और रासस्थली है । इसी स्थानके मध्यमें श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ स्थित है । जगद्गुरु श्रीश्रील भक्ति-सिद्धान्त-सरस्वती प्रभुपादकी अप्रकट लीला आविष्कारके पश्चात् उनके अन्तरंग परिकर श्रीश्रील भक्ति-प्रज्ञानकेशव गोस्वामी महाराजजीने श्रील प्रभुपादकी मनोभीष्ट सेवाकी पूर्तिके लिए १६४१ ई० में एक किरायेके मकानमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी स्थापना की, बादमें विस्तृत भूखण्ड लेकर वहाँ नौखण्डमय विशाल मठके मध्य-स्थलमें सुरम्य श्रीमन्दिरका प्रकाश किया । इसके तीन प्रकोष्ठोमें क्रमशः (१) श्रीश्रील गुरुदेव (श्रील भक्ति-सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद), (२) श्रीगौरांगदेव एवं श्रीश्रीराधा विनोद बिहारी तथा (३) श्रीनवद्वीप धामके अधिष्ठात्रीदेव श्रीकोलदेव या वराह देवकी सेवा प्रकटित की।

श्रीमन्दिरके नौ-शिखर नवधा भक्तिके एक-एक अंग स्वरूप हैं। श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन ये भक्तिके नौ अंग हैं । इनके अनुरूप ही श्रीमन्दिरके नौ शिखर हैं । मठके अन्दर नौ-खण्ड इस प्रकार हैं–

(१) **परमात्म खण्ड**–अर्थात् मुद्रण-यन्त्रके द्वारा भक्तिग्रन्थ और पारमार्थिक पत्रिका आदि छपनेका स्थान ।

(२) **कीर्त्तन खण्ड**–यहाँ संकीर्त्तन और भागवतादि पाठ-प्रवचन होता है ।

(३) **उपास्य खण्ड**–श्रीमन्दिर जहाँ श्रील सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद (श्रीश्रीगुरुदेव) श्रीचैतन्य महाप्रभु एवं श्रीश्रीराधा-विनोदविहारी और श्रीकोलदेवका अर्चन, पूजन एवं भोग-राग होता है ।

(४) सेवक खण्ड- मठवासियोंके रहनेका स्थान ।
(५) भोग खण्ड- भण्डार एवं पाकशाला ।
(६) गोवर्धन खण्ड- गोशाला ।
(७) वैष्णव ग्रन्थागार खण्ड ।
(८) उद्यान खण्ड ।
(९) ज्ञान खण्ड- शौचस्थान ।

ये खण्ड-समूह भक्तिके अनुकूल ग्रहण तथा प्रतिकूल वर्जनके आधार पर विभक्त हैं । भक्ति-रहित ज्ञान-कर्म मलकी भांति सर्वदा त्याज्य हैं । इसलिए शौचालयको यहाँ ज्ञान खण्ड कहा गया है ।

श्रीलभक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामीकी बहुत दिनोंसे यह अभिलाषा थी कि गंगाके पश्चिमी तट पर स्थित प्राचीन कुलिया नगरमें भगवान् श्रीकोलदेवकी श्रीविग्रह-सेवा प्रकटित होनी चाहिए। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए ही अस्मदीय गुरु-पाद-पद्मने यहाँ श्रीकोलदेवकी सेवा प्रकटित की है ।

अस्मदीय श्रीगुरु-पाद-पद्म श्रीश्रीभक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामीका आविर्भाव बंग देशके वरिशाल जिलेके वानारी पाड़ा ग्राममें एक सुप्रतिष्ठित गुह - ठाकुरता वंशमें हुआ था । ये अपने पिता परम भागवत श्रीशरदचन्द्र गुह और परम भक्तिमती माता भुवनमोहिनी के द्वितीय पुत्रके रूपमें आविर्भूत हुए थे । अत्यन्त सुन्दर गौरवर्ण होनेके कारण ज्योत्सना अथवा जोना (ज्योत्सनाका अपभ्रंश शब्द) से इनका नाम जनार्दन हुआ । इनका यथार्थ नाम श्रीविनोदविहारी था । ८ वर्षकी आयुमें ही इनके पिताका परलोकगमन हो गया। श्रीभुवनमोहिनी देवी जमींदार वंशकी तेजस्वी एवं शिक्षित महिला होनेके कारण इन्होंने अपने बच्चोंका पालन-पोषण अपने अनुरूप ही किया । ये बचपनसे ही बड़े निर्भीक, होनहार, चरित्रवान, परोपकारी, बलवान, सुविचारक एवं सर्वोपरि परम धार्मिक थे । इनकी संगठनात्मक-शक्ति, समाज-सेवा एवं मानव-कल्याणकी भावनाको लक्ष्य

कर सभी इनका आदर करते थे । आठवीं श्रेणीमें आने पर ही (१२ वर्षकी आयु) बालक विनोद जमींदारीकी देखभाल करने लग गये थे । इनकी जैसी अल्प आयुमें ही कानूनका ज्ञान एवं कर्म-कुशलता अन्यत्र कहीं नहीं देखी जाती । प्रवेशिका परीक्षामें उत्तीर्ण होने पर बालक विनोद 'उत्तरपाड़ा' कालेजमें भर्ती हुए । एक वर्ष बाद 'दौलतपुर' कालेजमें पड़ने लगे । वहाँके अध्यापक-गण इनसे श्रीचैतन्य चरितामृत, श्रीमद् भगवत् गीता इत्यादिका पाठ सुनकर इनकी बड़ी प्रशंसा करते । १९१५ ई० में अपनी बुआ श्रीमतीसरोजवासिनी देवीके साथ इन्होंने श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरका दर्शन किया एवं इनसे श्रीहरिनाम ग्रहण किया । १९१९ ई० में पुनः फाल्गुनी पूर्णिमा तिथिको (गौर-जन्मोत्सवके दिन) श्रील प्रभुपादसे वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण की । तबसे कृष्णनगरमें प्रेसके व्यवस्थापकके रूपमें 'दैनिक नदीया' प्रकाशकी सेवामें नियुक्त हुए। इसमें इनके बहुतसे प्रबन्ध प्रकाशित होते थे । १९२९ ई० में इनके एक दार्शनिक भाषणसे प्रसन्न होकर श्रील सरस्वती ठाकुरने अपने समस्त दार्शनिक ग्रन्थोंको इन्हें प्रदान कर दिया । २१ मार्च १९३२ ई० में श्रीगौर-जन्मोत्सवके अवसर पर श्रीलप्रभुपादने इनकी दायित्वपूर्ण सेवासे प्रसन्न होकर इनको 'कृतिरत्न' की उपाधिसे विभूषित किया, तत्पश्चात् पुरी धाम, कटक, वालेश्वर, इलाहाबाद, कानपुर, आसाम आदि स्थानोंमें शुद्ध भक्तिका प्रचार किया । मायावादकी जीवनी (वैष्णव-विजय) नामक ग्रन्थकी रचनासे गौड़ीय-वैष्णव जगत् इनसे बहुत प्रभावित हुआ । श्रीलप्रभुपादने अपने प्रकट कालमें ही इनको संन्यास प्रदान करनेकी कई बार चेष्टा की, किन्तु किसी कारणसे ऐसा सम्भव न हो सका । अप्रकटके बाद श्रीलप्रभुपादने इन्हें सपनेमें तीन बार संन्यास लेनेका आदेश दिया, तब श्रीमन्महाप्रभुजीके संन्यास-स्थान कटवामें इन्होंने श्रीप्रभुपादके शिष्य श्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर महाराजजीसे १९४१ ई० में

संन्यास ग्रहण किया । इनका संन्यासका नाम श्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज हुआ । गंगाके दोनों किनारे पर स्थित स्थानों—रामघाट, कांचड़ापाड़ा, नैहाटी, चुँचुँड़ा, चन्दननगर, वैद्यवाटी, श्रीरामपुर और कलकत्ता आदि स्थानोंमें शुद्धभक्तिका प्रचार किया । इनकी श्रीमद्भागवत व्याख्यासे बड़े-बड़े विद्वान् प्रभावित हुए । चुँचुँड़ामें वहाँके निवासियोंके आग्रह पर श्रीउद्धारण गौड़ीय मठकी स्थापना की । १९४० ई० में वैशाख मासकी अक्षय तृतीयाके दिन कलकत्ता महानगरीके वोसपाड़ा लेन स्थित किरायेके मकानमें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी स्थापना की तथा इसका प्रधान केन्द्र श्रीनवद्वीप धामके वर्तमान शहर कुलियाग्राममें श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठकी स्थापना की। यहींसे इन्होंने श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा तथा गौर-जन्मोत्सवका पुनः प्रचलन किया । इन्होंने 'श्री गौड़ीय पत्रिका' नामक बंगला मासिक, 'श्रीभागवत-पत्रिका' नामक हिन्दी मासिक पत्रिकाओंका प्रकाशन किया, इसी बीच इन्होंने मेदिनीपुर, चौबीस परगना, हुगली एवं वर्धमानके गाँव-गाँवमें प्रचार किया । इन्होंने त्रिदण्ड संन्यासका पुनः प्रचलन भी किया । श्रीगौड़ीय वेदान्त चतुष्पाठीकी स्थापना की । १३ सितम्बर १९५४ ई० में मथुरा नगरीमें श्रीकेशवजी गौड़ीय मठकी स्थापना की । १९५६ ई० में अन्नकूट महोत्सवके दिन श्रीकेशवजी गौड़ीय मठमें श्रीविग्रह प्रतिष्ठा हुई । इसी प्रकार आसाम-प्रदेशमें श्रीगोलोक गंज गौड़ीय मठ एवं वासुगाँवमें वासुदेव गौड़ीय मठकी स्थापना की । श्रीमन्महाप्रभुके पदाङ्क-पूत स्थान 'पिछलदा' में गौड़ीय मठकी स्थापना की । उड़ीसाके अन्तर्गत भद्रकके निकट राण्डीया हाट (कोरण्ट) में गौड़ीय प्रचार केन्द्रकी स्थापना की ।

ये बड़े प्रतिभाशाली आचार्य थे । इनकी गुरु-निष्ठा आदर्श थी । ये असाधारण लेखक, प्रखर-वक्ता, निपुण-संचालक, सुविचारक, आइनज्ञ, (कानूनके ज्ञाता) एवं निर्भीक सत्यके प्रचारक थे । इन्होंने

थोड़े ही दिनोंके भीतर भारतमें सर्वत्र श्रीचैतन्य मनोऽभीष्ट शुद्धा-भक्तिका प्रचार-प्रसार किया । अक्टूबर १९६८ ई० में शरद पूर्णिमाकी रातको अप्रकट लीलाका प्रकाश कर महारासमें प्रवेश कर गये । इनकी समाधि भी यहीं पर है ।

(६) श्रीसारस्वत गौड़ीय मठ

जगद्गुरु श्रीलसरस्वती ठाकुरके प्रधान शिष्योंमें से एक, त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद्भक्ति रक्षक श्रीधर महाराजकी यहाँ भजन और समाधि-स्थली है । इन्होंने ही इस मठकी स्थापना की थी । यह भक्ति-सिद्धान्तमें पारदर्शी, विद्वत्-वरेण्य, प्रतिभाशाली आचार्य थे । इनकी हरिकथाएँ बड़ी दार्शनिक और युक्तिपूर्ण होती थीं । ये अप्राकृत कवि भी थे । इन्होंने श्री श्रीहरि-गुरु-वैष्णव एवं धाम सम्बन्धी बहुतसे अनुपम स्तव-स्तोत्रोंकी रचनायें की हैं । असदीय गुरुपादपद्म श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजजीने इन्हींसे संन्यास-वेश ग्रहण किया था ।

(७) श्रीसारस्वत गौड़ीय आसन और मिशन

परिव्राजकाचार्य श्रीमद् भक्ति विवेक भारती महाराज तथा श्रीमद्भक्ति रूप-सिद्धान्ती महाराजद्वयने इस मठकी स्थापना की। ये दोनों श्रीलप्रभुपादके शिष्य थे । दोनों ही विद्वान्, लेखक और प्रखर-वक्ता थे । इन्होंने श्रीमद् भगवद् गीता, ब्रह्मसूत्र, सिन्धु-बिन्दु-किरण एवं कुछ उपनिषदोंका पुनः प्रकाशन किया है । इसके अतिरिक्त इनके द्वारा प्रतिष्ठित कलकत्ता एवं पुरीधाममें भक्ति प्रचार केन्द्र हैं ।

(८) समुद्रगढ़

यह कोलद्वीपके दक्षिण-पश्चिमी भागमें स्थित है । यह व्रजके बहुलावनके अन्तर्गत एक स्थान माना गया है । इसको साक्षात् द्वारिकापुरी या गंगासागर भी कहा गया है । द्वापरमें यहाँ पर

समुद्रसेन नामक एक कृष्ण-भक्त राजा राज्य करते थे । राजसूय यज्ञके समय पाण्डुपुत्र महाबलवान भीमसेन पूर्वी भारतके राजाओंको पराजित करते हुए वंग-विजयके लिए सेना सहित आये थे । महाराज समुद्रसेन श्रीकृष्णका दर्शन करना चाहते थे । परन्तु वह जानते थे कि भक्तोंकी कृपा व उनके माध्यमसे ही भगवद्-दर्शन सम्भव है । इसीलिए उन्होंने सोचा कि यदि युद्धमें भीमसेनको किसी प्रकार पराजित कर दिया जाय तथा भीम कोई दूसरा उपाय न देखकर अपनी रक्षाके लिए कृष्णको पुकारें तो कृष्ण यहाँ आ सकते हैं । तभी मैं अपने आराध्य देवका दर्शन पा सकता हूँ । ऐसा विचार कर बड़े उत्साहके साथ अपनी सारी शक्ति लगाकर भीमको पराजित करनेके लिए प्रयास करने लगे । प्रभुकी कुछ ऐसी ही इच्छा, भीम युद्धमें पराजित होने लगे । ऐसे समयमें उन्होंने पाण्डवोंके रक्षक श्रीकृष्णको आर्तनाद करते हुए पुकारा, कृष्ण तत्क्षण युद्ध-भूमिमें प्रकट हो गये । किन्तु उनका दर्शन केवल मात्र महाराज समुद्रसेनको ही हुआ । भीमसेन और दोनों ओरके सैनिक किसीने भी भगवान्‌को नहीं देखा । भगवान् श्रीकृष्णके दर्शनकर समुद्रसेन शान्त हो गये तथा बहुतसे उपहारोंको देकर भीमसेनसे मित्रता कर ली । भीमसेन भी उनको पराजित समझकर आनन्दसे लौट गये । समुद्रसेनको भगवान्‌ने अपने भावी श्रीगौरांग रूपमें अवतरित होनेकी बात बतलायी तथा उनको हरिनाम-कीर्त्तनके माध्यमसे श्रीगौर-भजन करनेका उपदेश दिया । समुद्रसेनके प्रार्थना करने पर श्रीकृष्णने उसी समय इनको श्रीराधा-भाव-द्युति-सुवलित अपने गौरांग रूपमें दर्शन दिया । दर्शन पाकर राजा कृतार्थ हो गये ।

यह स्थान अभिन्न कुमुद वन है । श्रीकृष्ण तृतीय पहरमें विचरण करते हुए यहाँ पर सखियोंके साथ लीला-विलास किया करते हैं । इस लीला-विलासका भी राजाने दर्शन किया । यह

स्थान समुद्रगढ़के नामसे प्रसिद्ध है । यह नवद्वीपके दक्षिणकी ओर, पश्चिमकी शेष-सीमा पर स्थित है । समुद्र यहाँसे कुछ ही दूरी पर स्थित है । महाप्रभुजीकी लीला-दर्शनकी तीव्र लालसा होने पर यह समुद्र भी गंगा नदीके माध्यमसे यहाँ तक उपस्थित हुए और यहीं वे नित्य-निवास कर नवद्वीप धाम व श्रीचैतन्य महाप्रभुजीकी लीलाओंका दर्शन किया करते हैं । समुद्रने महाप्रभुजीका दर्शन कर उनसे प्रार्थना की कि आप मेरे तट पर भी कुछ दिन निवास कर अपनी अद्‌भुत लीलाओंका दर्शन करानेका सौभाग्य प्रदान करें । श्रीमहाप्रभुजी संन्यासके बाद भक्त-समुद्रकी इच्छा पूर्तिके लिए समुद्रके तटपर श्रीपुरीधाममें अपनी अपूर्व लीलाओंका प्रकाश किया ।

(६) चम्पक हट्ट

श्रीकोलद्वीपका दक्षिणी-पश्चिमी अंश चम्पक हट्ट ग्राम कहलाता है । इसका वर्त्तमान नाम चाँपाहाटी है । सत्ययुगमें यहाँ एक वृद्ध-ब्राह्मण निवास करते थे । यहाँ चम्पक-फूलोंका बहुत बड़ा एक उपवन था, इसीलिए इस स्थानका नाम 'चम्पक हट्ट' पड़ा । ब्राह्मण श्रीराधा-गोविन्दका अर्चन-पूजन इन चम्पक-पुष्पोंसे किया करते थे । इसकी प्रेममयी आराधनासे प्रसन्न होकर श्रीश्यामसुन्दरने इस ब्राह्मणको चम्पक-पुष्प जैसी द्युतिमें शोभित, गौर रूपमें दर्शन दिये और कहा,"कलियुगमें मैं इसी रूपमें प्रकटित होकर जीवोंको कृष्णनाम व प्रेम वितरण करूँगा । उस समय तुम भी जन्म लेकर मेरी उस महावदान्य लीलाका दर्शन करोगे ।" वही विप्र गौरलीलामें श्रीगौर-शक्ति श्रीगदाधरके छोटेभाई द्विज वाणीनाथ हैं । व्रजलीलाकी ये कामलेखा सखी हैं । इन्हींके द्वारा सेवित श्रीगौर गदाधर विग्रह यहाँ पर श्रीमन्दिरमें सेवित होते हैं । जगद्‌गुरु श्रील प्रभुपादजीने यहाँ श्रीगौर-गदाधर गौड़ीय मठ स्थापित किया ।

यह स्थान जयदेव गोस्वामीका श्रीपाट है । जयदेव गोस्वामी बल्लाल सेन राजाके सम-सामयिक हैं । राजा इनका बहुत सम्मान

करते थे। गंगाके पूर्वी तट पर बल्लालसेनके राजभवनसे कुछ दूरी पर इनकी भजन-कुटी थी। बादमें इनके भजनमें कुछ बाधा उपस्थित होने पर उस स्थानसे अपनी पत्नी पद्मावतीको साथ लेकर इस निर्जन एवं सुहावने उपवनमें निवास कर भजन करने लगे। एक समय यहाँ पर गीत-गोविन्दके पदोंकी रचना करते समय श्रीमती राधिकाजीके मान होनेका प्रसंग उपस्थित हुआ। कृष्णके बहुत मनाने पर किसी प्रकार भी उनका मान दूर नहीं हुआ। उसी समय श्रीजयदेवजीके हृदयमें यह भावना उपस्थित हुई कि श्रीकृष्णने श्रीमती राधिकाजीको मनानेके लिए अपना सिर उनके चरणोंमें झुका दिया। श्रीजयदेवके हृदयमें ऐसी लीला स्फूर्ति होने पर वे भयभीत हो गये तथा वे इस प्रसंगको लिख नहीं सके। उनका हाथ काँपने लगा तथा कलम हाथोंसे गिर गयी। सोचने लगे, श्रीकृष्ण सर्वेश्वर सबके आराध्य देव और शक्तिमान तत्त्व हैं। श्रीमती राधिका उनकी शक्ति सेविका तत्त्व हैं। अतः श्रीकृष्ण भला राधिकाजीके चरण-कमलोंमें अपना मस्तक कैसे झुका सकते हैं? ऐसा करनेसे मर्य्यादाका उल्लंघन होता है। ऐसा सोचकर उन्होंने लिखना बन्द कर दिया तथा वे गंगा-स्नानके लिए चले गये। इसी बीच रसिक-शेखर श्रीकृष्ण श्रीजयदेवका रूप बनाकर इनके घर पहुँचे तथा पद्मावती देवीसे पुस्तकको माँगकर जयदेवके द्वारा लिखित, 'स्मर गरल खण्डनम्' इस अधूरे पदको पूरा करते हुए इसके आगे लिख दिया "मम शिरसि मण्डनम् देहि पद-पल्लवमुदारम्"। तब यह पूरा पद हुआ।

"स्मर गरल खण्डनम् मम शिरसि मण्डनम् देहि पद पल्लवमुदारम्॥"

यह लिखकर श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान हो गये। थोड़ी देर बाद जयदेव गंगा-स्नान करके लौटे। इनकी पत्नीने कहा, "आप इतनी जल्दी कैसे लौट आये? आप तो अभी थोड़ी देर पहले ही लौटकर अपनी पुस्तकमें कुछ लिखकर पुनः स्नानके लिये गये थे।"

जयदेव गोस्वामीने पुस्तक मंगवायी तथा खोलकर देखा तो अपने अधूरे पदको पूर्ण रूपमें लिखा हुआ पाया। ये आश्चर्यचकित होकर रोने लगे, अपनी स्त्रीसे बोले, "हे देवि! आप धन्य हैं आपने श्यामसुन्दरका दर्शन कर लिया, वे स्वयं यहाँ उपस्थित होकर, जिस पदको लिखनेसे मैं डर रहा था, उसको उन्होंने स्वयं लिखकर पूरा कर दिया। कृष्ण प्रेमके वशीभूत हैं। वे मर्य्यादामयी भक्तिसे वशीभूत नहीं होते।" जयदेव गोस्वामी कुछ दिनोंके बाद अपनी पत्नीके साथ जगन्नाथपुरी चले आये। जयदेव गोस्वामी द्वारा लिखित गीत-गोविन्दके पद इतने मधुर और ललित हैं कि स्वयं जगन्नाथदेव उसे सुननेके लिए लालायित रहते हैं।

किसी समय एक उपवनमें कोई देवदासी गीत-गोविन्दका पद गा रही थी। जगन्नाथजी मन्दिरसे निकलकर तेजीसे दौड़कर उपवनमें पहुँचे। काँटेदार झाड़ियोंसे लगकर उनके वस्त्र फट गये तथा अंगोंमें खरोचें आ गयीं। पद सुननेके बाद श्रीमन्दिरमें पुनः उसी रूपमें विराजित हो गये। पट खुलने पर श्रीजगन्नाथजीकी ऐसी अवस्था देखकर पुजारी विस्मित हो गये। बड़े पुजारी और महाराजको खबर दी गयी, सभी लोग चिन्तित हो गये। स्वप्नमें दूसरे दिन रातको श्रीजगन्नाथजीने इस रहस्यको प्रकट किया, वे गीत-गोविन्दका पद सुनने गये थे, जल्दबाजीमें कंटीली झाड़ियोंमें उलझनेसे उनके वस्त्र फट गये। श्रीजयदेवने अपने इष्टदेवका गौरांग रूपमें दर्शन पाया था।

❋ ❋ ❋

श्यामकुण्ड है। यहाँ कुण्डके चारों तरफ सखियोंकी बड़ी मनोरम कुञ्जें हैं। यह कृष्णकी मध्याह्न विहार-स्थली है।" महाप्रभुजी अपराह्न (तृतीय प्रहर) में अपने परिकरोंके साथ यहाँ उपस्थित होकर संकीर्त्तन करते थे तथा सबको कृष्ण-प्रेम दान करते थे।

श्रीराधाकुण्ड भजन राज्यमें सर्वोत्तम स्थान है। ब्रह्माण्ड रूप देवी-धामके ऊपर विरजाके उसपार ब्रह्म और शिवलोकके भी ऊपर श्रीबैकुण्ठ धामकी स्थिति है। बैकुण्ठमें भी साकेत आदि धामोंसे ऊपर श्रीकृष्णलोककी स्थिति है, श्रीकृष्णलोकमें भी द्वारिकाके ऊपर श्रीमथुराधाम है। मथुरामें भी श्रीगोकुल-वृन्दावन श्रेष्ठ हैं। वृन्दावनमें भी श्रीगोवर्धन श्रेष्ठतर है तथा इस गोवर्धनमें श्री राधाकुण्ड और श्रीश्यामकुण्ड श्रीश्रीराधाकृष्ण युगलकी लीला विलास (विशेषतः मध्याह्न लीला)का परम रहस्यमय श्रेष्ठतम स्थान है।

(१) विद्यानगर

ऋतुद्वीपके अन्तर्गत विद्यानगर नवद्वीपके पश्चिमकी ओर शेष सीमा पर स्थित है। यह स्थान वेद, उपनिषद्, पुराण, स्मृति, एवं चौंसठ प्रकारकी विद्याओंका मूल उद्गम स्थान है तथा उनके अध्ययन एवं अध्यापनका मुख्य केन्द्र है। लोक पितामह ब्रह्माजी ऋषियों और देवताओंको यहाँ पर अध्ययन कराते हैं। मन्त्र-द्रष्टा ऋषिगण विविध उपनिषदोंको प्रकाशित करते हैं। मनु, वशिष्ठ, पराशर, याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियोंको प्रकाशित कर ऋषियोंको इसकी शिक्षा देते हैं। वाल्मीकि ऋषि नारदजीकी कृपासे आदि-काव्य रामायणकी रचना कर भरद्वाज आदि शिष्योंको पढ़ाते हैं। धन्वतरिने आयुर्वेदकी, विश्वामित्रने धनुर्वेदकी, शौनकादि ऋषियोंने वेद और पुराणोंकी शिक्षा यहीं पर प्राप्त की है। कपिल ऋषिने सांख्य, गौतमने न्याय, कणभूकने वैशेषिक, पातञ्जलिने योग, जैमिनीने मीमांसा, वेदव्यासजीने वेदान्त-दर्शन, महाभारत और पुराण इत्यादि तथा देवर्षि नारदजीने पञ्चरात्र-दर्शनका प्रकाश कर अपने-अपने

श्रीऋतुद्वीप (श्रीराधाकुण्ड)

चम्पक हट्टसे उत्तरकी ओर श्रीकोलद्वीपके दक्षिणमें मनोहर ऋतु-द्वीप है। इसका वर्तमान नाम रातुपुर है। यहाँ षड्-ऋतुएँ वर्तमान रहती हैं। विभिन्न प्रकारके पुष्पोद्यान एवं सघन कुञ्ज हैं। विशेषतः यहाँ श्रीराधाकुण्डके तटपर सघन आम्र-वृक्षोंका पुञ्ज है। जिसमें कोयलें कुहकती रहती हैं। यह स्थान गुप्त राधाकुण्ड है। श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभुजी जीव गोस्वामीको जब इस स्थान पर लेकर आये, तब उन्होंने ब्रजलीलाके भावमें (श्रीबलदेव प्रभुके आवेशमें) आविष्ट होकर कहा "जल्दीसे सिंगा ले आओ, बछड़े आगे निकल गये, भैया कन्हैया घर पर सो रहा है, वह अभी तक नहीं आया। अरे सुबल ! श्रीदाम ! तुम कहाँ हो ? मैं अकेला बछड़ोंको कैसे सँम्भालूं ? भैया कन्हैया ! तुम कहाँ हो?" ऐसा कहते हुए जोरसे चिल्लाने लगे। उपस्थित भक्तोंने नित्यानन्दजीको पकड़कर सांत्वना दी–"प्रभु तुम्हारे भैया कन्हैया इस समय गौरचन्द्रके रूपमें संन्यास लेकर जगन्नाथ पुरीमें निवास कर रहे हैं। आज उनके अभावमें नवद्वीप नगरी शून्य हो रही है। हमें कंगाल कर स्वयं निर्मोही बनकर वहाँ रह रहे हैं।" इतना सुनते ही नित्यानन्द प्रभुजी जोरसे रोते-रोते पछाड़ खाकर भूमि पर गिर पड़े। कुछ ही समय बाद उठकर बोले, "भैया कन्हैया ! तु हम सबको छोड़कर संन्यासी क्यों बन गया ? तेरे बिना मैं अकेला नहीं रह सकता। अभी यमुनामें कूदकर अपने जीवनका त्याग कर दूँगा।" ऐसा कहते-कहते वे सम्पूर्ण रूपसे अचेतन हो गये। भक्तोंने जोर-जोरसे श्रीगौर नामका कीर्त्तन आरम्भ किया, जिसे सुनकर बहुत देरके बाद (करीब डेढ़ घण्टा) में सचेतन हुए। उन्होंने भक्तोंको सम्बोधित करते हुए कहा, "यह स्थान गुप्त श्रीराधाकुण्ड और

अनुयायियोंको शिक्षा दी । विशेषतः वेदव्यासजीने सर्वविद्या सार-स्वरूप गायत्रीका अर्थ, महाभारतका सारांश और उपनिषदोंका प्रतिपाद्य-तत्त्वस्वरूप अमल पुराण 'श्रीमद्भागवत' का प्रकाश इसी स्थान पर किया था । श्रीमद्भागवत वैष्णवोंको प्राणके समान प्रिय हैं । सर्वविद्या-विशारद देवगुरु वृहस्पतिने लोक पितामह ब्रह्माजीसे यह जानकर कि स्वयं श्रीकृष्ण भविष्यत् कलियुगमें श्रीगौरांग रूपमें प्रकट होकर संकीर्त्तनके माध्यमसे सर्व-साधारणको कृष्णप्रेमका वितरण करेंगे । श्रीमन्महाप्रभुजीकी लीलाके कुछ ही समय पूर्व ह; वासुदेव सार्वभौमके रूपमें यहीं पर जन्म ग्रहण किया । इनके पिताश्रीका नाम श्रीमहेश विशारद तथा छोटे भाईका नाम श्रीविद्या वाचस्पति था ।

श्रीसार्वभौम भट्टाचार्यजी श्रीमन्महाप्रभुजीके आविर्भावके पूर्व ही श्रीजगन्नाथ पुरी चले गये तथा वहाँ महाराज प्रताप रुद्रकी राज-सभामें राज-पण्डित बन गये । वे तत्कालीन अद्वैतवादियोंमें एक सर्वप्रधान सार्वभौम-पण्डित माने जाते थे । बड़े-बड़े अद्वैतवादी विद्वान् संन्यासी भी इनके पास वेदान्त-सूत्र या ब्रह्म-सूत्रका शंकर भाष्य पढ़नेके लिए आते थे ।

श्रीचैतन्य महाप्रभुजी संन्यास लेनेके बाद श्रीपुरीधाम पधारे । श्रीजगन्नाथजीका दर्शन कर भावाविष्ट हो पृथ्वी पर गिर पड़े तथा मूर्च्छित हो गये । उसी समय सार्वभौम भट्टाचार्यजी महाप्रभुजीके श्रीअगोंमें अष्टसात्त्विक भावोंको देखकर बड़े विस्मित हुए और एक असाधारण महापुरुष समझकर अपने वासस्थान पर ले आये । बादमें श्रीनित्यानन्द आदि भक्तोंके आने पर उनसे महाप्रभुजीका परिचय जानकर बड़े प्रसन्न हुए । इन्होंने श्रीमन्महाप्रभुको अपने पिताके प्रियबन्धु श्रीजगन्नाथ मिश्रका पुत्र जानकर बड़े स्नेहसे आग्रह-पूर्वक वेदान्तका शंकर-भाष्य सात दिन तक पढ़ाया, किन्तु नव-संन्यासी श्रीमन्महाप्रभुने इनके निर्विशेष ब्रह्मका प्रतिपादन करने-

वाली समस्त युक्तियों एवं कुटतर्कोंका खण्डन कर सविशेष ब्रह्मकी स्थापना की तथा कृपापूर्वक षड्भुज रूपका दर्शन कराया । सार्वभौमका समस्त अभिमान चूर्ण हो गया । इनको दिव्य ज्ञान हुआ तथा वे पूर्ण रूपसे भगवद्भक्त एवं श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकर बन गये ।

विद्यानगर श्रीमन्महाप्रभुजीके विद्या-विलासका स्थान है । वे यहाँ आकर सार्वभौम भट्टाचार्यके शिष्योंको खेल ही खेलमें तीक्ष्ण युक्तियोंसे पराजित कर देते थे । यहाँके बड़े-बड़े अध्यापक भी निमाई पण्डितसे शास्त्रार्थ करनेसे डरते थे ।

यह स्थान नवधा भक्तिका पीठ स्वरूप है । प्रौढ़ामाया यहाँ पर नित्यकाल निवास कर श्रीगौरसुन्दरकी सेवा करती हैं । वे विमुख-जीवोंको मोहित कर भक्तिसे दूर रखती हैं । कृष्ण-भक्ति ही विद्या है, अविद्या उसकी छाया है । श्रीगौरधाममें ये दोनों रहकर अन्वय-व्यतिरेक रूपमें प्रभुकी नित्य सेवा करती हैं ।

❋ ❋ ❋ ❋
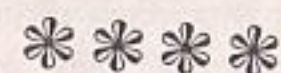
श्रीजहनुद्वीप

जहनुद्वीप वर्त्तमान जान्नगरके आस-पासमें विस्तृत है । यह ब्रजके भद्रवनसे अभिन्न है । पहले जाह्नवी (भगवती श्रीगंगा) इसके आस-पासमें ही बहती थी । श्रीमन्महाप्रभु अपने परिकरोंके साथ संकीर्त्तन करते हुए यहाँ नगर-भ्रमणमें पधारते थे । यह महाप्रभुजीके कीर्त्तन तथा अन्यान्य लीला-विलासका स्थल है । जहनुद्वीपका अपभ्रंश ही वर्त्तमान जान्नगर है । श्रीजहनुमुनिकी यह आराधना स्थली है । इनकी आराधनासे प्रसन्न होकर श्रीगौरहरिने इनको दर्शन दिये थे । जह्नुमुनि स्वर्णकान्ति द्वारा देदीप्यमान श्रीगौरांग मुर्त्तिका दर्शन कर भाव-विभोर हो उठे । इन्होंने महाप्रभुजीसे जन्म-जन्मान्तरों तक भी श्रीनवद्वीप वासके लिए प्रार्थना की । श्रीमहाप्रभुजीने इन्हें यह वरदान दिया कि भविष्यमें प्रकट लीलाके समय तुम मेरी विविध लीलाओंका दर्शन करोगे ।

जहनुमुनि नवद्वीपके इसी उपवनमें आराधना कर रहे थे । एकदिन वे भगवद् लीलाओंका चिन्तन करते हुए समाधिस्थ हो गये । उसी समय श्रीभगीरथजी ब्रह्मा और शंकरको प्रसन्न कर अपने पितृ-पुरुषोंके उद्धारके लिए गंगाको श्रीगंगोत्रीसे हरिद्वार-प्रयाग-काशी आदि होते हुए महासागरकी ओर ले जा रहे थे, जहाँ श्रीकपिलमुनिके आश्रमके समीप उनके साठ हजार पूर्वज (सगरपुत्र) जलकर भस्म हो गये थे । महाराज भगीरथ अपने रथ पर बैठकर आगे-आगे चल रहे थे, भगवती गंगा कलकल करती हुई प्रवाहित होती आ रहीं थीं । यहाँ आने पर श्रीभगीरथजी जहनु मुनिको प्रणाम कर आगे बढ़ गये । पीछेसे सुरसरि गंगा श्रीगौरधाममें प्रवेश कर अत्यन्त आह्लादित हो अपनी तरंगोंके माध्यमसे अपने आनन्दको प्रकाशित करतीं हुईं अग्रसर हो रहीं थीं, उन्हें अपने शरीरकी तनिक भी सुध-बुध न थी । वे ऋषिकी कुटीके पाससे होकर

निकली, जिससे ऋषिकी कुटीका कुछ भाग तथा इनके जलपात्र आदि कुछ सामान धारामें बह गये । गंगाकी कलकल ध्वनि, सुशीतल समीर व जलके फुँआरोंसे ऋषिका ध्यान भंग हो गया । इनको कुछ क्रोधाभास-सा हुआ । सहसा इनको ध्यान हुआ कि यह जलधारा साधारण नहीं है । ब्रह्माजीने श्रीवामनदेवके चरणोंको कारणवारिके जिस जलसे धोया था, वही देव-दुर्ल्लभ पतित-पावनी भगवती गंगाके रूपमें अति पवित्र जल प्रवाहित हो रहा है । श्रद्धासे उनका मस्तक नत हो गया, झट अपने गण्डूष (चुल्लू) में उठाकर समस्त जलको पान कर गये । ऊपरसे आता हुआ प्रवाह आगे न बढ़ सका । ऐसा देख भगीरथ अत्यन्त व्याकुल हो उठे। किसी प्रकारसे मुनिको प्रसन्न किया । प्रसन्न होकर मुनिने अपनी जंघाको कुछ चीरकर गंगाके कुछ अंशको बाहर छोड़ दिया । गंगाजी पुनः कलकल करती हुई श्रीनवद्वीपको चारों ओरसे घेरतीं हुईं, कहीं उसके बीचसे निकलतीं हुईं, उसे नौ भागोंमें विभक्त कर दिया । तबसे यह गौरधाम नौ भागोंमें विभक्त होनेसे नवद्वीप कहलाने लगा । श्रीगंगाजी ऋषिके पेटमें पहुँचकर जंघाके माध्यमसे पुनः प्रकटित होनेके कारण श्रीजहनु मुनिकी प्रिय बेटी 'जाह्नवा' के नामसे प्रसिद्ध हुई तथा यह स्थान भी जहनुद्वीपके नामसे प्रसिद्ध हुआ ।

श्रीगंगाके सम्बन्धमें पुराणोंमें एक दूसरी कथाका भी उल्लेख है । गोलोकमें श्रीगंगा एक सखीके रूपमें श्रीकृष्णकी प्रिया हैं । किसी समय गोलोकके निर्जन प्रदेशमें वे कृष्णके साथ रसभरी बातोंमें निमग्न हो रहीं थीं । अकस्मात् श्रीमती राधिकाजीको सखियोंके साथ अपनी ओर आते हुए देख ये संकुचित हो कर लज्जासे जल बन गयीं । श्रीमती राधिकाजीने वहाँ उपस्थित होकर श्रीकृष्णसे मुस्कराकर पूछा, "तुम्हारी वह सखी कहाँ गयीं ?" कृष्णने भाव-भंगिमाके साथ वहाना बनाते हुए कहा- 'यहाँ तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी सखी

नहीं है।' श्रीराधिकाजी समझ गयीं और तब उन्होंने गंगाको अपनी सखीके रूपमें ग्रहण किया। गंगाका जल-स्वरूप भी गोलोकमें यमुना की भांति नित्य रूपमें प्रतिष्ठित हो गया। उसीका अंश कारणवारिके रूपमें प्रकटित है। ब्रह्माजीने उसी कारणवारिके जलसे भगवान् श्रीवामन देवके चरण-कमलोंको धोया था।

एक समय बादशाह अकबरकी राजसभामें गंगा और यमुनामें कौन श्रेष्ठ है? यह विवाद छिड़ गया। गंगाके किनारे वास करने वाले राजाओं, सामन्तों एवं राजपण्डितोंने श्रीगंगाजीको श्रेष्ठ बतलाया तथा श्रीयमुनाके तटवासी राजाओं, सामन्तों एवं पण्डितोंने यमुनाको श्रेष्ठ बतलाया। विवादका कुछ समाधान नहीं हुआ। उस समय श्रीजीव गोस्वामी वृन्दावनमें क्षेत्र संन्यास लेकर भजन करते थे। वे तत्कालीन विश्वके सबसे बड़े विद्वान् संत माने जाते थे। अकबरने बड़ी श्रद्धा और सम्मानसे श्रीजीव गोस्वामीको आगरामें बुलाकर इसकी मीमांसाके लिए अभिलाषा की, किन्तु श्रीजीव गोस्वामी किसी भी प्रकार एक दिनके लिए भी व्रज छोड़नेके लिए प्रस्तुत नहीं हुए। अन्तमें बादशाहके अत्यधिक आग्रहसे दिन ही दिनमें व्रज लौट आयेंगे, इस शर्त पर आगरा जानेके लिए सहमत हुए। बादशाहने आने जानेकी व्यवस्था की। श्रीजीव गोस्वामीने आगराके शाही-दरबारमें पहुँचकर दोनों पक्षोंकी बातें सुनीं तथा बोले, "शास्त्रोंके अनुसार श्रीकृष्ण स्वयंरूप भगवान् हैं। इन स्वयंरूप भगवान्के अंशोंके अंश अर्थात कला-स्वरूप श्रीवामनदेव हैं। इन श्रीवामन देवके श्रीचरण-कमलोंकी धोवन-स्वरूप यह श्रीगंगाजी हैं। उधर श्रीयमुना महारानी या कालिन्दी भगवान् स्वयंरूप श्रीकृष्णकी पटरानियोंमें से एक हैं। वे उनकी अति प्रिय अभिन्न प्रियतमा स्वरूप हैं। अब आपलोग स्वयं विचार करें कि कौन श्रेष्ठ हैं? गंगामें स्नानका जो फल है, वह श्रीयमुनाजीके चिन्तनसे ही मिल जाता है। गंगास्नानसे पाप दूर होते हैं, किन्तु यमुना-स्नानसे

श्रीकृष्णप्रेम और श्रीव्रजप्रेमकी प्राप्ति होती है। यमुनाके तट पर एवं उसके जलमें कृष्ण सखा और सखियोंके साथ विहार करते हैं।

किन्तु एक विशेष बात यह है कि जब श्रीगंगाजी श्रीयमुनाजीके साथ मिलकर प्रयागसे आगे बढ़कर श्रीगौरलीला-स्थली श्रीनवद्वीप-धाममें प्रवेश करती हैं, तब पूर्वी तटपर गंगा और पश्चिमी तट पर यमुनाकी धाराएँ बहती हैं। उस मिलित धारामें श्रीचैतन्य महाप्रभुजी विविध प्रकारके विहार करते हैं। भगवती-भागीरथी ऐसे सौभाग्यको लाभ कर श्रीयमुनाके समकक्ष हो जाती हैं। ये भी श्रीगौरप्रेमको देनेवाली बन जातीं हैं। यह गौरप्रेम और कृष्णप्रेम दोनों एक और अभिन्न हैं।

श्रीजीव गोस्वामीजीके इस निर्णयसे सभी सभासद बड़े सन्तुष्ट हुए। बादशाह अकबर श्रील जीव गोस्वामीके दर्शनकर धन्य हो गये।

(१) भीष्मटीला

जान्नगरके पास ही यह भीष्मटीला स्थित है। भीष्मदेव अपने मातामह श्रीजह्नुमुनिके दर्शनके लिए यहाँ पधारे थे, जह्नुमुनिके पास ही कुछ दिनों तक यहाँ ठहरे थे। प्रतिदिन नियमानुसार जह्नुमुनिसे भगवत् कथा एवं विभिन्न प्रकारके उपदेशोंका श्रवण करते थे। जह्नुमुनिने उनको श्रीगौरांग देवके तत्त्व तथा उनके श्रीनवद्वीप धाममें आविर्भूत होनेकी बात कही। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ दिनोंमें ही कलिकी प्रथम सन्ध्यामें श्रीकृष्ण ही श्रीगौरांग रूपमें आविर्भूत होकर विश्वम्भरके अधिकारी एवं अनाधिकारी जीवोंको कृष्णनाम और कृष्णप्रेम प्रदान करेंगे। यहाँ तक कि वृक्ष, लता, पशु, पक्षी इत्यादि सभीको कृष्णप्रेममें प्रमत्त बना देंगे। उन्होंने भीष्मदेवको राजनीति, धर्मनीति, समाजनीति तथा

धर्मकी सूक्ष्म नीतियोंका भी उपदेश किया। इन्होंने आत्मा-अनात्मा, जड़-चेतन, जीवतत्त्व, मायातत्त्व, भगवत्तत्त्व और भक्तितत्त्वादिके विषयमें भी बहुतसे आदेश प्रदान किये। जीव भगवान्‌का नित्य दास है। वह भगवत् सेवासे विमुख होनेके कारण इस मायिक संसारमें जन्म-मरणके चक्रमें पड़ा हुआ त्रितापोंसे दग्ध हो रहा है। सद्गुरुकी कृपासे वैष्णवोंके संगमें हरिकथा श्रवण और भगवन्नाम कीर्त्तनके द्वारा ही वह पुनः अपनी स्वरूपावस्थाको प्राप्त हो सकता है। सभी धर्मोंका यही सार तत्त्व है। भीष्मपितामहने अपनी शरशय्या पर लेटे हुए अपने निर्याण कालमें सन्तप्त महाराज श्रीयुधिष्ठिर और पाण्डवोंको श्रीजह्नु ऋषिसे सुनीं नीतियों और धर्मतत्त्वका उपदेश दिया। भीष्मदेवका यह निवास-स्थान ही भीष्म टीला कहलाता है।

****

श्रीमोदद्रुमद्वीप

मोदद्रुमद्वीपका दूसरा नाम मामगाछी है। यह ब्रजका भाण्डीर वन है। पूर्व कल्पमें श्रीरामचन्द्रजी पिताके आदेशसे छोटे भाई लक्ष्मण एवं पत्नी सीताजीके साथ वनवासके समय यहाँ कुछ दिन तक इस सुन्दर उपवनमें रहे। उस समय यहाँ पर एक वटका वृक्ष था, जिसकी शाखा-प्रशाखाएँ बहुत दूर-दूर तक विस्तृत थीं। नाना प्रकारके पक्षी इसकी डालों पर बैठकर सदा-सर्वदा कलरव करते रहते थे। इस स्थानकी मनोहर छटाको देखकर श्रीरामचन्द्रने लक्ष्मणसे इसी स्थान पर वटवृक्षके नीचे पर्णकुटीका निर्माण करवाकर कुछ समय तक यहीं ठहरे थे।

किसी समय रामचन्द्रजी वनकी अपूर्व शोभा देखकर कुछ मुस्करा रहे थे। सीताजीने अकस्मात् हँसनेका कारण पूछा। रामचन्द्रजीने कहा, "आगामी कलियुगमें इसी नवद्वीप धाममें मैं श्री जगन्नाथ मिश्रके घर शचीमाताके उदरसे जन्म ग्रहण करूँगा, लोग मुझे श्रीगौरांग नामसे पुकारेंगे। मैं विविध प्रकारकी मनोमुग्धकारी लीलाओंके द्वारा सबको मुग्ध करूँगा तथा हरिनाम महिमा प्रकाशित कर जन-साधारणको भगवन्नाम कीर्त्तनमें प्रमत्त करूँगा। पापी-तापियोंका भी हृदय परिवर्त्तन कर उन्हें देव-दुर्ल्लभ भगवद् प्रेम प्रदान करूँगा। युवावस्थामें ही संन्यास लेकर श्रीजगन्नाथ पुरीमें निवास करूँगा। उस समय मेरी मैया शचीदेवी जो कौशल्याका रूप होगी, वे अपनी पुत्रवधू विष्णुप्रियाजीको गोदमें लेकर रोयेंगी। तुम ही विष्णुप्रिया होगी। मैं भी पुरीमें रहकर तुमलोगोंके लिए दिनरात रोया करूँगा। यह सुनकर सीताजीने पूछा "ऐसा आप क्यों करेंगे? श्रीरामने उत्तर दिया, "जीवोंको प्रेमा-भक्तिकी शिक्षा देनेके लिए मैं गौरांग रूपमें अवतरित होऊँगा।" (श्रीभक्तिविनोद ठाकुर कृत श्रीनवद्वीपधाम माहात्म्य) प्रेमाभक्तिका आस्वादन दो प्रकार

से होता है । 'संभोग' और 'विप्रलम्भ' रूपमें । संयोगमें जो सुख होता है, उसे सम्भोग रस कहते हैं । वियोगमें जो दुःख होता है, उसे विप्रलम्भ रस कहते हैं । संभोगमें बाह्य मिलन-आनन्द प्रधान होता है, किन्तु विप्रलम्भमें सदैव आन्तरिक मिलनका आनन्द प्राप्त होता है, जिसमें बाह्य सबकुछ विस्मृत हो जाता है । ऐकान्तिक रसिक भक्तजन वियोगमें ही असीम सेवानन्दको प्राप्त होते हैं । वैसे भी विप्रलम्भके बिना संभोग रसकी पुष्टि नहीं होती । विप्रलम्भ जितना ही अधिक गाढ़ा होगा, सम्भोग रसका आस्वादन भी उतना ही गाढ़ा होगा । अतः विप्रलम्भमें सम्भोगकी अपेक्षा करोड़ों गुणा अधिक रसास्वादन होता है । मेरे गौरांग अवतारके समय माता कौशल्या, अदिति देवीके साथ मिलकर श्रीशचीदेवीके रूपमें अवतरित होंगी तथा तुम विष्णुप्रियाके रूपमें पत्नी होओगी । मैं इस राम-अवतारमें तुम्हें किसी वहानेसे त्यागकर वाल्मीकिके आश्रम पहुँचा दूँगा तथा तुम्हारे विरहमें मैं स्वर्ण-सीताका निर्माण कराकर तुम्हारी आराधना करूँगा । ठीक इसी प्रकार गौरावतारमें मेरे गृह त्यागके बाद तुम मेरी गौरांग प्रतिमाका प्रकाशकर इसी नवद्वीपमें मेरी आराधना करोगी । गौरांग लीलाके द्वारा मैं जगत्को विप्रलम्भ रसकी महत्ताकी शिक्षा दूँगा । यह मेरा बड़ा ही प्रिय स्थान है । यह अयोध्यासे भी अधिक मुझे प्रिय है । यह वट-वृक्ष रामवृक्षके नामसे प्रसिद्ध होगा । कलिके प्रारम्भमें इसका अन्तर्द्धान हो जायेगा।

श्रीरामचन्द्रजीने यहाँ कुछ दिनों तक रहनेके पश्चात् सीता और लक्ष्मणके साथ दण्डकारण्यके लिए प्रस्थान किया ।

श्रीरामचन्द्रजीकी इच्छासे उनके परममित्र निषादराज यहीं पर एक ब्राह्मणके घरमें पैदा हुए थे, इनका नाम सदानन्द भट्टाचार्य हुआ । इनकी रामचन्द्रजीमें ऐकान्तिक निष्ठा थी । श्रीचैतन्य महाप्रभुके आविर्भावके समय ये श्रीजगन्नाथ मिश्रके भवनमें उपस्थित थे । इन्होंने शिशु निमाईका श्रीरामचन्द्रके रूपमें दर्शन किया । अनन्तर

उसी समय इन्होंने श्रीरामके साथ सीताजी, लक्ष्मण एवं हाथ जोड़े हुए श्रीचरणोंकी ओर श्रीहनुमानजीका दर्शन किया । ये प्रायः बालक निमाईका दर्शन करने जगन्नाथ भवन आया करते थे । कुछ समय बाद जब महाप्रभुजीने हरिनाम-संकीर्त्तन करना आरम्भ किया, तब सदानन्द भी उनकी टोलीमें कीर्त्तन करते-करते आनन्दमें विभोर हो जाते थे ।

(१) श्रीलवृन्दावन दास ठाकुरजीका श्रीपाट

मोदद्रुमद्वीपमें श्रीचैतन्य-भागवतके रचयिता श्रीवृन्दावन दास ठाकुरकी आविर्भाव-स्थली है । ये श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासके अभिन्न-अवतार हैं । इनकी माताजीका नाम श्रीनारायणी देवी था । श्री नारायणी देवी श्रीमन्महाप्रभुके लीला-परिकर श्रीवास पण्डितजीकी भतीजी थी । बचपनमें श्रीचैतन्य महाप्रभुजीका उच्छिष्ट महाप्रसाद बड़े प्रेमसे ग्रहण करतीं थीं । महाप्रभुजी इस भक्तिमती बालिका को बहुत स्नेह करते थे । कालान्तरमें नारायणी देवीका विवाह यहाँके किसी ब्राह्मण परिवारमें हुआ । उसी स्थान पर श्रीलभक्ति-सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरने श्रीमोदद्रुम गौड़ीय मठकी स्थापना की है। श्रीवृन्दावन दास ठाकुर द्वारा सेवित श्रीगौरनित्यानन्द एवं श्रीजगन्नाथजी आज भी यहाँ सेवित हो रहे हैं ।

(२) श्रीमालनी देवीका पित्रालय तथा श्रीवासुदेवदत्तका श्रीपाट

श्रीवास पण्डितकी पत्नीका नाम श्रीमालनी देवी था । इनका-पित्रालय यहीं पर था । श्रील वृन्दावन दासके वास-स्थानके पास ही यह स्थान है । निकट ही श्रीसारंग एवं मुरारीका श्रीपाट भी है । ये दोनों यहीं पर रहकर भजन करते थे । ये महाप्रभुजीके लीला-परिकर थे । महाप्रभुजीके संन्यास लेकर नवद्वीपसे चले जाने के बाद उनके विरहमें ये नवद्वीप नहीं रह सके । अतः यहाँ रहकर भजन करने लगे । यहीं पर चट्ट-ग्रामवासी श्रीमुकुन्द दत्त ठाकुरके भ्राता श्रीवासुदेव दत्त ठाकुर द्वारा प्रतिष्ठित श्रीमदनगोपालकी

सेवा आज भी प्रचलित है।

श्रीवासुदेव दत्त ठाकुर श्रीमहाप्रभुजीके परिकर थे। ये श्रीभगवत्-सेवाके लिए उदारता पूर्वक अपना सबकुछ व्यय कर देते थे। भविष्यके लिए कुछ भी संग्रह नहीं करते थे, ये परम-भक्त थे। श्रीमन्महाप्रभुजी इनकी बड़ी प्रसंशा करते थे तथा कहते, 'मेरा यह शरीर केवल वासुदेवका ही है, वह जहाँ मुझे बेच देगा, मैं वहीं बिक जाऊँगा, यह बात मैं त्रिसत्य कह रहा हूँ।' चट्टग्रामवासी मुकुन्दके ये सहोदर छोटे भाई थे। प्रसिद्ध रघुनाथ दास गोस्वामीके दीक्षागुरु श्रीयदुनन्दनाचार्य इन्हीं श्रीवासुदेव दत्त ठाकुरके अनुग्रहीत (शिष्य) थे। एक बार इन्होंने श्रीमन्महाप्रभुजीसे यह प्रार्थना की कि विश्वके समस्त जीवोंका पाप मेरे सिर पर आ जाये, मैं जन्म-जन्मान्तरोमें उसे भोग करता रहूँगा तथा आप उन सब जीवोंका भव-बन्धन दूर कर उन्हें सद्‌गति प्रदान करें। श्रीमन्महाप्रभुजीने श्रीवासुदेव दत्तकी विष्णु-वैष्णव सेवाके लिए खर्चकी उदार प्रवृत्तिको देखकर श्रीशिवानन्द सेनको इनका सरखेल (जमाखर्च नियमित रखने वाला मुनीम) बनकर इनके व्ययका नियमन करनेके लिए कहा था।

(३) श्रीसारंगदेव-मुरारीका श्रीपाट

मामगाछीमें श्रीगौर पार्षद श्रीसारंगदेव यहीं निवास करते थे। एक समय श्रीगौर सुन्दर देवानन्द पण्डितको डाँट-फटकार कर श्रीवास और श्रीसारंग देवके साथ अपने घर लौट रहे थे। श्रीमन्महाप्रभुजीने सारंगसे पूछा,"सारंगदेव ! तुम कोई शिष्य क्यों नहीं करते ? अकेले आश्रमका सारा काम-काज, ठाकुरजीकी सेवा और मेरे साथ रहकर संकीर्त्तन करनेमें तुम्हें कष्ट होता होगा।" सारंगदेवने उत्तर दिया, "उपयुक्त शिष्य नहीं मिलता, इसलिए शिष्य नहीं करता।" महाप्रभुजीने कहा, "तुम जिसे शिष्य करोगे, वही उपयुक्त हो जायेगा।" सारंगदेव बोले, "कल जो भी पहले मिलेगा, उसीको

शिष्य बनाऊँगा।" ऐसा कहकर प्रभुको दण्डवत् प्रणाम कर आश्रम लौट आये। दूसरे दिन सारंगदेव प्रातःकाल उठकर गंगा स्नान करने गये, वहाँ उन्होंने गंगाके प्रवाहमें एक मृत बालकको बहते हुए देखा। सारंगदेव महाप्रभुजीकी आज्ञाका स्मरण कर उस मृत बालकको तट पर लाकर उसके कानमें दीक्षामन्त्र उच्चारण किया, आश्चर्यकी बात यह हुई कि दीक्षामन्त्र कानमें प्रवेश होते ही बालक जीवित हो उठा। वह सारंगदेवके श्रीचरणोंमें साष्टांग प्रणाम कर कहने लगा, "कल मेरा यज्ञोपवीत हो रहा था, उसी समय एक काले विषधर सर्पने मुझे डंस लिया। उसके बाद मुझे कुछ पता नहीं।" उस बालकके जीवित होनेकी खबर पाकर उसके माता-पिता, भाई-बन्धु सभी उपस्थित हुए। उन्होंने बालकको हृदयसे लगा लिया एवं बोले, "सर्पके डंसनेके बाद किसी भी प्रकारकी चिकित्सासे इसे बचा नहीं सके। सर्पके डंसनेसे मरने वालेका दाह-संस्कार नहीं किया जाता, इसलिए हमने इसे गंगामें बहा दिया था। आपकी महती कृपासे इसे पुनः प्राण दान मिला है।" ऐसा कहकर वे बालक मुरारीसे घर चलनेके लिए आग्रह करने लगे, किन्तु मुरारी उनलोगोंके साथ जानेको तैयार नहीं हुआ। उसने अपना सम्पूर्ण-जीवन श्रीसारंगदेवकी सेवामें व्यतीत करनेका दृढ़ संकल्प कर लिया था। यही बालक परवर्ती कालमें श्रीमुरारी ठाकुरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सारंगदेवके निवास-स्थान पर एक विशाल मौलश्री (वकुल) का वृक्ष था। आज भी वह पेड़ इस बातकी साक्षी देता हुआ विराजमान है। यह बहुत प्राचीन वृक्ष है, इसके ऊपर केवल छाल दिखायी देती है, भीतर कुछ भी सार-अंश नहीं है।

(४) बैकुण्ठपुर

मोद्द्रुमद्वीपके अन्तर्गत उत्तर-पश्चिमकी शेष सीमा तक बैकुण्ठ-पुर नामक एक ग्राम है। नवद्वीप धामके अन्तर्गत इसी स्थान पर

भगवान् श्रीनारायण अपनी श्री, भू एवं लीला तीनों शक्तियोंके साथ नित्य सेवित होते हैं । इस चिन्मय-भूमिकी किरणोंके आभासको 'ब्रह्म' कहते हैं । चिन्मय दृष्टिसे ही इस धामका दर्शन होता है ।

किसी समय नारद ऋषि श्रीबैकुण्ठ पधारे, वहाँ श्रीलक्ष्मी और नारायणको न देखकर इन्होंने उनके परिकरोंसे पूछा, परिकरोंने प्रभुके भूलोक स्थित नवद्वीप धाममें पधारनेकी बात बताई । नारद ऋषिने यहाँ उपस्थित होकर श्रीलक्ष्मीनारायणका दर्शन किया । श्रीनारायणने प्रसन्न होकर इनको श्रीगौरांग रूपमें दर्शन दिया । जिस स्थान पर नारदजीने दर्शन किया, उस स्थानका नाम वैकुण्ठपुर हुआ ।

एक और भी गूढ़ रहस्य है । श्रीरामानुज आचार्य कुछ दिनों तक श्रीक्षेत्र जगन्नाथपुरीमें रहकर श्रीजगन्नाथ देवकी सेवा करते थे। श्रीजगन्नाथजीने उनको कृपा कर आदेश दिया कि तुम श्रीनवद्वीप धामका दर्शन करो, मैं कुछ ही दिनोंमें वहाँ पर श्रीगौरांग रूपमें प्रकट होकर सर्वत्र ही कृष्णनाम संकीर्त्तनके माध्यमसे कृष्णप्रेमका जन-साधारणमें वितरण करूँगा । तुम अपने शिष्योंको यहीं छोड़कर अकेले चले जाओ । वह स्थान श्रीरंगमसे करोड़ों गुणा श्रेष्ठ है । तुम वहाँ नवद्वीप धामका दर्शन कर अपने कूर्माचल नामक स्थान पर लौट जाना । श्रीजगन्नाथदेवका आदेश पाकर श्रीरामानुज यहाँ आये । यहीं पर उन्होंने श्रीवैंकटेश्वर भगवान्‌का दर्शन किया तथा पुनः उनको ही श्रीगौरांग रूपमें देखा । श्रीगौरचन्द्रका दर्शन करके श्रीरामानुज अधीर हो उठे और बोले, मैं अब इस नवद्वीप धामको छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा । जिस समय आपकी लीला प्रकट होगी, "मैं उन लीलाओंका दर्शन करूँगा ।" भगवान् श्रीगौरसुन्दर 'ऐसा ही हो' कहकर अन्तर्द्धान हो गये । भगवत् इच्छासे श्रीरामानुज आचार्य दक्षिण-भारत लौटकर, वहाँ ये दास्य-भक्तिका प्रचार करने लगे । इनके दार्शनिक मतका नाम है-- विशिष्टाद्वैतवाद । इन्होंने श्रीशंकराचार्यकि निर्विशेष अद्वैत मतको शास्त्रीय प्रमाणों एवं तीक्ष्ण-

युक्तियोंसे खण्डन किया है । कलिकालमें चारों वैष्णव-सम्प्रदायोंमें 'श्री' सम्प्रदायके ये प्रवर्त्तक माने जाते हैं, इनके वेदान्त-सूत्रका श्रीभाष्य एवं अन्यान्य ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं ।

इन्हीं श्रीरामानुजने श्रीमन्महाप्रभुजीके समय श्रीअनन्त नामसे एक ब्राह्मण परिवारमें जन्म ग्रहण किया था । श्रीलक्ष्मीप्रियाके साथ श्रीनिमाई पण्डितके विवाहोत्सवमें ये सम्मिलित हुए थे ।

(५) महतपुर

रुद्रद्वीपके अन्तर्गत महतपुर नामका यह ग्राम ब्रजमण्डलके अन्तर्गत काम्यवन है । द्रौपदीके साथ युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण वनवासके समय घूमते हुए, एक चक्रा ग्राममें पहुँचे थे । वहाँकी मनोरम छटा देखकर महाराज श्रीयुधिष्ठिर बड़े मुग्ध हुए । रातको उन्होंने स्वप्नमें श्रीबलदेव प्रभुजीका दर्शन किया । पुनः बलदेव प्रभुने श्रीनित्यानन्द प्रभुके रूपमें दर्शन दिया तथा भावी श्रीगौरांग अवतारके बारेमें बतलाया । उन्होंने निकटस्थ श्रीनवद्वीप धामका दर्शन करनेके लिए कहा । उनके निर्देशानुसार पाण्डवगण गंगाके तटपर मायापुरके सन्निकट इस स्थान पर पहुँचे तथा यहीं पर श्रीगौरसुन्दरकी आराधना की । श्रीगौरसुन्दरने प्रसन्न होकर इन्हें दर्शन दिया और भगवन्नाम-माहात्म्य तथा भविष्यमें होने वाले अपने लीला-विलासके सम्बन्धमें बतलाया । श्रीयुधिष्ठिर महाराज अपने भाइयों एवं पत्नीके साथ गौरप्रेममें मत्त होकर नृत्य करने लगे । जिस स्थान पर इन्होंने श्रीमहाप्रभुजीका दर्शन पाया था, वह स्थान महतपुरके नामसे प्रसिद्ध हुआ । यहाँ पर पंच-वटवृक्ष एवं युधिष्ठिर-वेदी कुछ दिनों पूर्व तक स्थित थी । अब वे लुप्त हो गये हैं ।

इस स्थान पर श्रीमध्वाचार्य अपने शिष्योंको साथ लेकर आये थे तथा यहाँ रहकर श्रीमन्महाप्रभुजीकी कृपा प्राप्त की थी । ये श्रीमध्वाचार्य चारों-वैष्णव-सम्प्रदायके अन्तर्गत श्रीब्रह्म-सम्प्रदायकी

परम्परा में (कलियुगके) प्रधान आचार्य माने जाते हैं । ब्रह्मासे नारद, नारदसे व्यास और श्रीव्यासके शिष्य श्रीमध्वाचार्यजी हैं । ये द्वैतवादके प्रवर्त्तक आचार्य हैं । इन्हींसे इस सम्प्रदायका नाम मध्व-सम्प्रदाय हुआ है । इनके दार्शनिक मतानुसार पाँच भेद नित्य माने जाते हैं । (१) ब्रह्म और जीवमें भेद, (२) जीव और जीवमें भेद,(३) जीव और जड़में भेद, (४) जड़ और जड़में भेद एवं (५) ब्रह्म और जड़में भेद । कृष्ण ही परब्रह्म हैं, वे सर्वशक्तिमान हैं, जीव इनके अंश हैं, ये जीव दो प्रकारके हैं—बद्ध और मुक्त, भगवद्भक्ति ही मुख्य साधन है इत्यादि । विशेषतः कृष्ण ही परम पुरुष हैं तथा जीव भगवान्‌का नित्यदास है– उनकी इन मान्यताओंके कारण ही परम भागवद् प्रेमकल्पतरुके बीज-स्वरूप श्रीमाधवेन्द्र पुरीपाद एवं इनके शिष्य ईश्वर पुरीपाद, अद्वैताचार्य, पुण्डरीक विद्यानिधि, परमानन्द पुरी आदि श्रीमन्महाप्रभुजीके प्रमुख परिकरके रूपमें इसी परम्परामें आये । श्रीमन्महाप्रभुजीने श्रीईश्वर पुरीपादसे इसी परम्परामें वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण की । इसीलिए इस परम्पराका नाम श्रीब्रह्म-माध्व-गौड़ीय-वैष्णव सम्प्रदाय हुआ ।

कभी श्रीमध्वाचार्यने भी यहाँ आकर कुछ समय तक श्रीगौर सुन्दरकी आराधना की थी । यहीं पर स्वर्णकान्ति द्वारा देदीप्यमान श्रीशचीनन्दन गौरहरिका दर्शन किया था । महाप्रभुजीने इनको उपदेश देते हुए कहा, "तुम मेरे नित्यदास हो, कुछ ही दिनोंमें मैं नवद्वीप धाममें आविर्भूत होऊँगा तथा तुम्हारी सम्प्रदायको स्वीकार कर जगत्‌में विशुद्ध प्रेमाभक्ति व हरिनाम वितरण करूँगा । तुम अभी भारतवर्षमें भ्रमणकर श्रीशंकराचार्य द्वारा प्रचारित अवैदिक और प्रच्छन्न बौद्धवादका शास्त्रीय प्रमाणों एवं प्रबल युक्तियोंके द्वारा खण्डन करो । भगवान्‌का श्रीविग्रह नित्य एवं सच्चिदानन्दमय हैं । परब्रह्म अखिल अप्राकृत गुणोंके आधार हैं, जीव कदापि परब्रह्म नहीं हो सकता, ब्रह्म और जीवका सम्बन्ध प्रभु और दासका है।

इस तत्त्वका सर्वत्र प्रचार करो । अभी मेरी भविष्यत् लीलाका रहस्य मत प्रकट करना ।" ऐसा कहकर वे अन्तर्द्धान हो गये । तत्पश्चात् श्रीमन्महाप्रभुजीके निर्देशानुसार श्रीमध्वाचार्य मायावादको दूर करने तथा भक्तिके प्रचारके लिए अन्यत्र चले गये ।

❋❋❋❋

श्रीरुद्रद्वीप

राढुपुर, शंकरपुर, रुद्रपाड़ा, निदयाघाट एवं टोटा आदि ग्रामों तक रुद्रद्वीप व्याप्त है। रुद्रपाड़ामें जगद्गुरु श्रीलभक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुरजीने श्रीरुद्रद्वीप गौड़ीय मठकी स्थापना की है।

रुक्मवर्ण गौरहरि नदीयामें प्रकट होंगे तथा सर्वत्र नाम व प्रेमका वितरण करेंगे, यह जानकर श्रीरुद्रदेव महाप्रभुजीके आविर्भावसे पूर्व ही अपने परिकरोंको साथ लेकर यहाँ पधारे तथा श्रीगौरनाम का कीर्तन करते हुए नृत्य करने लगे। देवताओनें उनके ऊपर पुष्पवृष्टि की। श्रीगौरसुन्दरने रुद्रदेवकी हरिकीर्तनमें तन्मयता देखकर रुद्रदेवको दर्शन दिया तथा कलिमें अपने अवतीर्ण होनेकी बात कहकर अन्तर्द्धान हो गये। विज्ञव्यक्तियोंका ऐसा कहना है कि नील-लोहित इत्यादि एकादश रुद्रोंने यहीं पर गौरचन्द्रकी उपासना की थी। अतः इस द्वीपका नाम रुद्रद्वीप हुआ। कैलास धाम इस रुद्रद्वीपकी प्रभा मात्र हैं। अष्टावक्र, दत्तात्रेय आदि ऋषि-मुनियोंने भक्ति-विरोधी अद्वैतवादको छोड़कर भक्ति प्राप्तिके लिए यहाँ पर भगवद् आराधना की थी। श्रीशंकराचार्य भी इस स्थान पर आये थे, किन्तु रुद्रदेवने उनको श्रीनवद्वीप मण्डलमें मायावादका प्रचार करनेके लिए निषेध किया, इसीलिए वे अन्यत्र चले गये। यहाँ पर शुद्धाद्वैतके आचार्य श्रीविष्णुस्वामीने रुद्रदेवकी कृपा लाभकर कलियुगमें श्रीरुद्र-वैष्णव-सम्प्रदायका प्रचार किया है। श्रीस्वामीने भी इसी स्थान पर महाप्रभुजीकी कृपा प्राप्त की थी। इन्होंने श्रीमद्भागवत की भावार्थ-दीपिका टीका लिखी। जिसका श्रीचैतन्य महाप्रभु बड़ा आदर करते थे। किसी समय रुद्रद्वीप गंगाके पश्चिमी तट पर था। श्रीजीवगोस्वामीके धाम-दर्शन (परिक्रमा) के समय यह द्वीप गंगाके पूर्व और पश्चिम दोनों किनारों पर स्थित था तथा श्रीनिवास आचार्यके समय गंगाके पूर्वी तट पर था। अब इसका कुछ भाग

पश्चिमी तट पर भी है।

(१) विल्वपक्ष

'वेल पोखरिया' विल्वपक्षका अपभ्रंश नाम है। यह ब्रजका बेलवन है। यहाँ ब्राह्मण सज्जनलोग विल्वके पत्तोंसे महादेवजीकी आराधना करते थे, अतः इसका नाम विल्वपक्ष या वेलपोखरिया हुआ। इन ब्राह्मणोंमें श्रीनिम्बादित्याचार्य भी थे। ये बड़े विद्वान् और श्रीचतुःसन नामक वैष्णव-सम्प्रदायके (कलियुगमें) प्रवर्त्तक आचार्य हैं। इनका दार्शनिक मत 'द्वैताद्वैत' नामसे प्रसिद्ध है। इनके मतानुसार जीव और जड़का ब्रह्मसे भेद और अभेद दोनों युगपत सत्य हैं। चित्वस्तुकी दृष्टिसे जीव और ब्रह्ममें अभेद है, किन्तु जीव, अणु, अल्पज्ञ, मायावश होने योग्य और दास-स्वरूप हैं। ब्रह्म पूर्ण, सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, जीव एवं जड़के नियन्ता हैं। जड़-जगत् भी भगवत्शक्तिसे प्रसूत होनेके कारण ब्रह्मसे भिन्न और अभिन्न दोनों है। यहीं पर सनकादि चारों कुमार गौरचन्द्रकी आराधना करते थे। श्रीनिम्बादित्य आचार्यने उनके द्वारा शक्ति संचारित होकर शुद्धभक्तिका (भेदाभेद तत्त्व) प्रचार किया। मूल वैष्णव-सम्प्रदाय चार हैं तथा उनके मूल (आदि) प्रवर्त्तक श्री, ब्रह्मा, रुद्र और सनत्कुमार ये चार हैं। कलियुगमें श्रीसे रामानुज, ब्रह्माजीसे मध्वाचार्य, रुद्रसे विष्णुस्वामी एवं सनत्कुमारसे निम्बादित्य ये चार वैष्णव-सम्प्रदाय प्रवर्त्तक आचार्य हुए। इन चारोंने श्रीशंकरके मायावादका खण्डन कर भक्तिका प्रचार किया है। श्रीनिम्बादित्याचार्यने यहाँ श्रीगौरसुन्दरकी आराधना कर श्रीगौर रूपका दर्शन किया। इन्हीं निम्बादित्याचार्यने गौरलीलाके समय दिग्विजयी केशव काश्मीरीके रूपमें जन्म लिया था। श्रीमन्महाप्रभुजीने इन्हें पराजित कर श्रीराधा-कृष्ण भजन करनेका आदेश दिया था।

(२) भरद्वाज टीला (भारुई डांगा)

यह स्थान गंगानगरके उत्तर-पश्चिममें स्थित है। श्रीनिवासाचार्य

की धाम परिक्रमाके समय यहाँ एक समृद्ध नगर था, जो टीले पर बसा हुआ था । इस टीलेको भरद्वाज टीला कहते थे । भरद्वाज ऋषिने प्रयागसे तीर्थ भ्रमण करते-२ यहीं गंगाके तट पर चक्रह्रद या चाकदा नामक स्थानमें कुछ समय श्रीगौरहरिकी स्थापनाकी थी । इस भरद्वाज टीलेका अपभ्रंश नाम भारुई डांगा है । भरद्वाज ऋषि आदिकवि वाल्मीकिके शिष्य एवं अत्यन्त प्रभावशाली थे । श्रीराम-चन्द्रजी वनवासके समय सीताजी एवं लक्ष्मणके साथ इनके आश्रममें पधारे थे । ये सर्वज्ञ थे । इसलिए श्रीमन्महाप्रभुकी भावी अवतार लीलाका स्थल जानकर ये नवद्वीप धाममें पधारे थे ।

(३) निदयाघाट

यह घाट गंगाके पूर्वी तट पर स्थित है । श्रीगौरसुन्दर संन्यास लेनेका संकल्प कर इसकी सूचना केवल गदाधर पण्डित, चन्द्रशेखर आचार्य आदि कुछ विशेष भक्तोंको ही दी थी । शामको वे नवद्वीपके प्रत्येक मौहल्लेमें भ्रमण करते हुए समस्त भक्तों एवं नगर-वासियोंसे प्रेम-पूर्वक मिले । भक्त श्रीधरने एक लौकी भेंट की, गोपोंने दूध भेंट किया, किसीने चन्दन और किसीने फूलोंकी माला आदिसे इनका सत्कार किया । गौरसुन्दर दूध और लौकी लेकर घर लौटे और शचीमाताको यह देकर लकलकी (दूध लौकी) प्रस्तुत करनेके लिए कहा । नैवेद्य प्रस्तुत होने पर श्रीशालेग्राम भगवान्को अर्पित कर सभीको बाँटकर बड़े प्रेमसे स्वयंने भी आस्वादन किया। रातमें आज बहुत दिनोंके बाद बड़े प्रेमसे विष्णुप्रियाजीके साथ हँसते-हँसते रसभरी बातें कीं, उनका श्रृंगार भी किया । विष्णुप्रियाजी इनके आकस्मिक परिवर्त्तनसे न जाने क्यों डर सी गयीं । विशेषकर पिछले दिन जब वह गंगा स्नानके लिए गयी थीं तब वहाँ स्नान करते हुए इनके विवाह कालका नाकका बेसर जलमें कहीं खो गया था । इसका खोना बहुत अशुभ माना जाता है, इस घटनाको स्मरण कर वह और भी काँप गयी । श्रीमहाप्रभुजीने योगमायाके
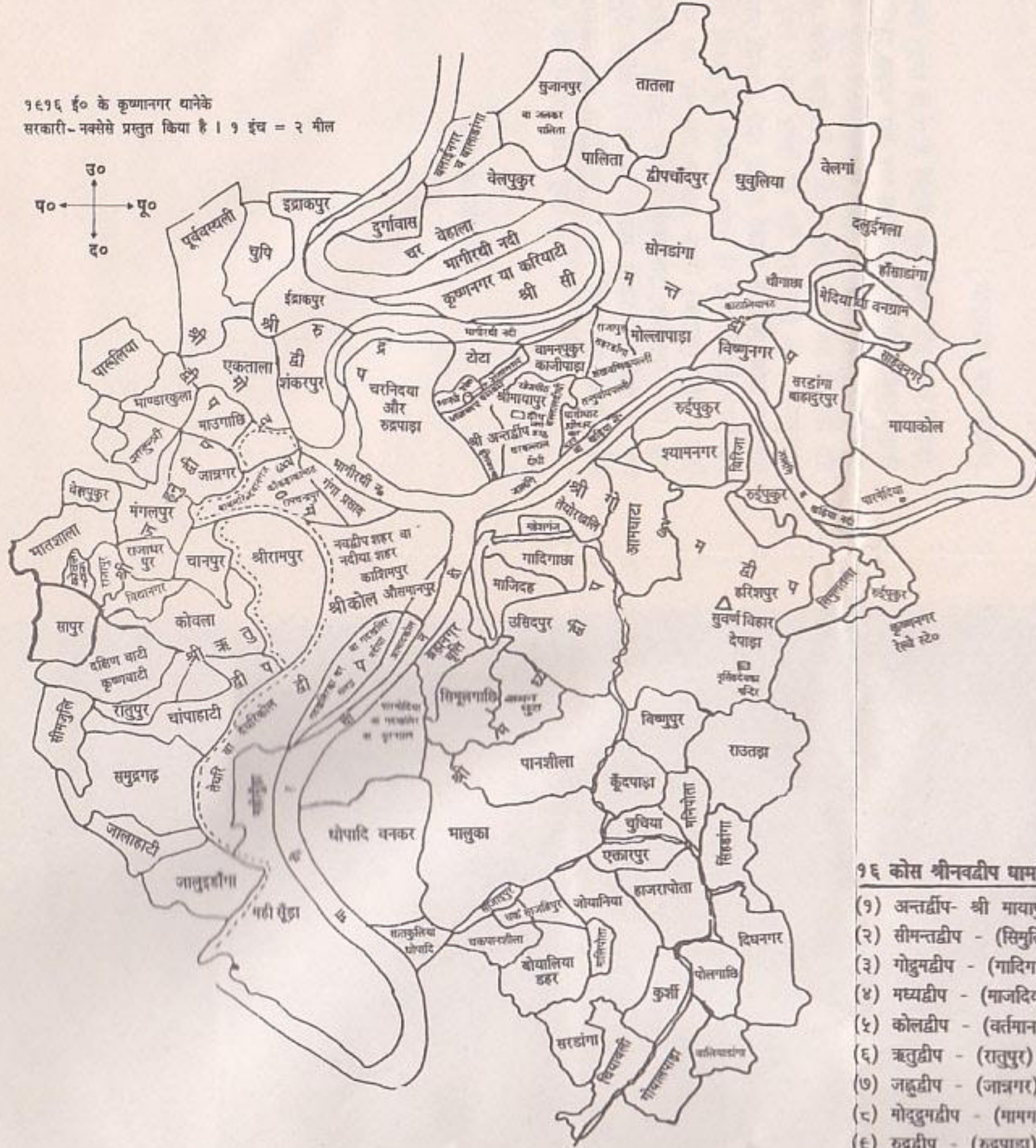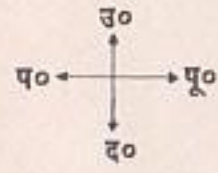
श्रीधाम नवद्वीपका मानचित्र

प्रभावसे उनको तुरन्त ही गाढ़ी निद्रामें सुला दिया और स्वयं निर्मोही, निर्दय और निष्ठुर बनकर एक बार छल-छलायीं आंखोंसे विष्णुप्रियाकी ओर देखते हुए घरसे निकल पड़े । द्वार पर श्रीशचीमाता कठपुतलीकी भांति खड़ी थीं । वे विरहसे प्रायः जड़ हो गयीं थीं। उस समय इनमें रोनेकी शक्ति भी नहीं रह गयी थी । गौरसुन्दरने मैयाको प्रणाम किया । मैया केवल देखती ही रहीं, बोल न सकीं। निमाई वहाँसे निकल कर सर्दीकी रातमें ही उफनती हुई गंगामें कूद गये तथा तैर कर उस पार कण्टक नगरी (कटवा) पहुँचे । वहाँ श्रीकेशवभारतीके निकट संन्यास ग्रहणकर शान्तिपुर होते हुए, श्रीजगन्नाथपुरी पहुँचे । अत्यन्त निर्दय होकर अनाथिनी माँ एवं पत्नीको त्यागकर इसी घाटसे गंगाको पार किया था, अतः तभीसे इस घाटका नाम निदया घाट हुआ ।

❋❋❋❋

श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख
गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह

श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह

लगभग ५०० वर्ष पूर्व स्वयं भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण अपनी तीन आकांक्षाओंको पूर्ण करने तथा विश्वभरमें हरिनाम संकीर्त्तनके माध्यमसे स्वप्रेम वितरण करनेके लिए श्रीशचीनन्दन गौर-हरिके रूपमें प्राचीन गौड़ देशके श्रीमायापुर धाममें आविर्भूत हुए थे। उस समय समस्त व्रज-परिकर सारे गौड़-मण्डलके विभिन्न स्थानोंमें अवत्तीर्ण हुए थे। जिस प्रकार भगवानकी आविर्भाव-स्थली भगवद् धामके रूपमें पूजित होती हैं, भक्तोंकी आविर्भाव-स्थली, निवास-स्थली और भजन-स्थली भी उसी तरह भक्तोंके लिए परम पवित्र पूजनीय एवं कल्याणकारी मानी जाती है। श्रीमन्महाप्रभुके परिकरोंकी इन आविर्भाव-स्थलियों साधन-स्थलियों तथा निवास-स्थलियोंको श्रीपाट भी कहते हैं। वैष्णवजन इन श्रीपाटोंके दर्शन एवं परिक्रमाके लिए सदैव अति उत्कण्ठित रहते हैं। नीचे हम इन तीर्थ-समूह या श्रीपाटोंका विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

उद्धारणपुर

वर्द्धमान जिलेमें कटवासे २ मील उत्तरमें भगवती-भागीरथीके तटपर उद्धारणपुर अवस्थित है। श्रीनित्यानन्द प्रभुजीके प्रिय परिकर श्रीउद्धारण दत्त ठाकुरका यहीं पर वास-स्थान था। इनके द्वारा पूजित श्रीविग्रह अभी तक यहाँ सेवित हो रहे हैं। यहीं पर इनकी समाधि है। पास ही एक प्राचीन नीमका वृक्ष है। कहते हैं कि श्रीनित्यानन्द प्रभुजी यहीं पर बैठे थे।

श्रीउद्धारण दत्त ठाकुर श्रीनित्यानन्द प्रभुकी शाखामें द्वादश गोपालोंमें अन्यतम हैं। पूर्वलीलामें ये श्रीसुबाहु सखा थे। इनका जन्म सप्तग्रामके कृष्णपुरमें एक समृद्धशाली, धनी और सुवर्ण-वणिक परिवारमें हुआ था। पिताका नाम श्रीकर दत्त एवं माताका नाम

श्रीभद्रावती था। शिक्षा आदिके समाप्त होने पर ये गृहस्थ-जीवनमें प्रविष्ट हुए तथा कटवाके नवहट्ट या नैहाटीमें नैराजा नामक राजाके दीवान नियुक्त हुए। उस समय वे निकट ही उद्धारणपुर नामक ग्राममें रहते थे। इनके नाम पर ही इस ग्रामका नाम 'उद्धारणपुर' हुआ था। बादमें श्रीनित्यानन्द प्रभुजीके संगसे प्रभावित होकर विपुल ऐश्वर्य, स्त्री, पुत्र, गृह आदि सबका परित्याग कर श्रीनित्यानन्द प्रभुजीकी सेवा करते हुए, उन्हींके साथ श्रीभगवन्नाम एवं भगवद्भक्तिके प्रचारके लिए भ्रमण करते रहते थे। साठवर्षकी आयुमें १४६३ शकाब्दमें अग्रहायणी कृष्णा त्रयोदशीके दिन ये अप्रकट लीलामें प्रवेश कर गये।

एकचक्राग्राम-(वीरचन्द्रपुर गर्भवास)

मल्लारपुर स्टेशनसे ८ मील पूर्वमें रामपुर हाट स्टेशनसे ११मील दूर है। यहाँ निम्नलिखित दर्शनीय स्थान हैं–

(१) गर्भवासमें श्रीनित्यानन्द प्रभुजीका जन्मस्थान-सूतिकागृह है।

(२) इसके पास ही इनकी माताके द्वारा की गयी षष्ठी पूजाका स्थान है।

(३) पासमें ही माता पद्मावतीकी स्मृतिमें पद्मावती पुष्करिणी है।

(४) यहाँ एक बहुत विराट पीपलका वृक्ष है, जिसकी शाखा पर श्रीमन्महाप्रभुजीने माला उतारकर रखी थी। इसीलिए यह वृक्ष 'मालातला' के नामसे प्रसिद्ध है।

(५) यहाँ एक विराट वकुलका वृक्ष है। श्रीनित्यानन्द प्रभु बाल्यकालमें इस वृक्षके नीचे खेला करते थे। इसलिए यह 'सिद्ध-वकुल' के नामसे प्रसिद्ध है।

(६) वीरचन्द्रपुर, इस स्थानका नाम श्रीनेत्यानन्द प्रभुजीके पुत्र

श्रीवीरचन्द्रके नामानुसार हुआ है। इस श्रीमन्दिरमें, बीचमें श्रीबांकाराय, दाहिनी ओर श्रीजाह्नवा देवी और बाईं ओर श्रीमतीराधिका जी पूजित होती हैं। इन श्रीवंकिमरायजीको श्रीनित्यानन्दप्रभुजीने निकट स्थित यमुना नामक एक क्षुद्र नदीके कदम्ब-खण्डी घाटसे तथा श्रीराधिकाजीको भड्डापुर नामक स्थानसे एक नीमवृक्षकी जड़में से प्राप्त किया था। नित्यानन्दप्रभुजीके पिता श्रीहढ़ाई पण्डित एवं माता श्रीपद्मावती थीं।

श्रीनित्यानन्द प्रभुजी

नित्यानन्द प्रभु १३६५ शकाब्दमें माघी शुक्ला त्रयोदशीके दिन इसी ग्राममें आविर्भूत हुए। इनके पिताका नाम हढ़ाई पण्डित एवं माताका नाम पद्मावती था। ये बचपनसे ही बालकोंके साथ श्रीरामलीला एवं श्रीकृष्णलीला आदिका अभिनय करते थे। श्रीरामलीलामें लक्ष्मण और कृष्णलीलामें श्रीबलरामजीका अभिनय करते थे। अभिनयके समय भावाविष्ट हो जाते थे। एक समय लक्ष्मण आवेशमें लंकामें युद्ध कर रहे थे। मेघनाथके द्वारा शक्तिसे इनकी छातीमें किये गये आघातसे वे सचमुचमें मूर्च्छित हो गये। बहुत देर तक मूर्च्छित रहनेपर बच्चोंने रोते हुए इनके माता-पिताको सूचना दी। माता-पिताने भी बच्चेको जब मरा देखा तो रोने लगे। इतनेमें एक बच्चेने बतलाया, नित्यानन्द प्रभुजीने मुझे बतलाया था "मेरे मूर्च्छित होने पर हनुमान गंधमादन पर्वतसे संजीवनी बूटी लाये, जिसको सुंघा देनेसे मैं जीवित हो जाऊँगा। हनुमानका अभिनय करनेवाले साथीने संजीवनी लानेका अभिनय किया और मूर्च्छित पड़े निताईको सुंघाने पर वे तुरन्त जीवित हो उठे। लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ।

बचपनमें कोई वैष्णव इनके पिताजीसे इनको माँगकर अपने साथ भारतके तीर्थोंमें ले गये थे। ये लक्ष्मीपति मतान्तरमें श्री माधवेन्द्र पुरीके शिष्य थे। भारतके तीर्थोंमें घूमते हुए ये वृन्दावन

आये और वहाँसे श्रीधाम नवद्वीपमें श्रीचैतन्य महाप्रभुजीसे मिले। श्रीकृष्णनाम एवं श्रीकृष्ण-प्रेम-प्रचारमें ये श्रीमन्महाप्रभुके दाहिने हाथ थे। पूर्वलीलामें श्रीबलदेव एवं उससे पूर्व त्रेतायुगमें श्रीराम-भ्राता लक्ष्मण थे। जगाई-माधाईके उद्धारमें इनका प्रमुख हाथ था। प्रतिदिन श्रीमन्महाप्रभुजीके आदेशसे नगरमें हरिनामकी भिक्षा करनेके लिए जाते। श्रीवास अंगन–श्रीसंकीर्त्तन रास-स्थलीमें भक्तोंके साथ नृत्यकीर्त्तनमें विभोर रहते थे। शरीरका होश नहीं रहता था। कभी अपने अधोवस्त्रको खोलकर सिरपर बाँध लेते तथा नंगे ही गोचारण इत्यादि लीलाओंसे सम्बन्धित सख्यभावोंमें आविष्ट हो जाते। ये भक्ति कल्पवृक्षके स्कन्ध स्वरूप हैं। श्रीमन्महाप्रभु जब संन्यास लेकर पुरी जारहे थे, तब कुछ भक्तोंके साथ नित्यानन्दप्रभु भी उनके साथ गये। उड़ीसाकी सीमापर एक नदीके किनारे महाप्रभुजीके दण्ड तीन टुकड़ोंमें तोड़कर उसको नदीमें प्रवाहित कर दिया, इसीलिए उस नदीका नाम दण्डभांगा नदी हुआ। महाप्रभुजीने पूछा–मेरे जीवन-साथी दंडको क्यों तोड़ दिया? नित्यानन्द प्रभुने उत्तर दिया, "सूखे बाँसके दण्डको आप साराजीवन ढोते रहेंगे, मैं ऐसा नहीं देख सकता।" इसका यह भी एक गूढ़ तात्पर्य है कि एकदण्ड - अद्वैतवाद (मायावाद) का सूचक है। जिसका तात्पर्य है– मैं ही ब्रह्म हूँ 'अहं ब्रह्मास्मि'। नित्यानन्द प्रभुजीने उसे त्रिदण्ड बना दिया। वैष्णवोंके लिए त्रिदण्ड संन्यास ग्रहण करना ही उचित है। जगन्नाथ-रथयात्रासे प्रायः सब समय वे महाप्रभुजीके प्रधान सहायकके रूपमें थे। अन्तमें महाप्रभुजीने इनको बंगालमें सर्वत्र भगवद्-भक्तिका प्रचार, विशेषकर हरिनाम संकीर्त्तन प्रचार करनेका आदेश दिया। ये लौटकर कुछ दिन नवद्वीपमें रहनेके बाद सूर्यदास सरखेलकी दो कन्यायें श्रीवसुधा एवं श्रीजाह्नवी देवीके साथ विवाह कर खड़दहमें रहने लगे। इनके पुत्रका नाम श्रीवीरचन्द्र था।

नित्यानन्द प्रभुजी मूलसंकर्षण हैं। ये महासंकर्षण, कारणाब्धि-शायी, गर्भोदशायी, क्षीरोदशायी विष्णु तथा शेष– इन पाँचरूपोंमें प्रकाशित होते हैं। ये सन्धिनी शक्तिके अधिष्ठात्री देव हैं। अनंग मञ्जरी सखीके रूपमें श्रीयुगलकिशोरकी सेवा करते हैं।

श्रीनित्यानन्द प्रभुजीके अप्रकट होने पर श्रीजाह्नवादेवी और वीरचन्द्र प्रभु यहाँ आये थे। श्रीनित्यानन्द प्रभुजीकी पूर्व स्मृतियाँ जगने पर वे भाव-विह्वल होकर रोने लगे। कुछ दिनों तक एकचक्रा ग्राम लोग-शून्य हो गया था। अब यहाँ धीरे-धीरे कुछ लोगोंका निवास स्थान होगया है।

कलकत्ता बागबाजार

विष्णुपुरके राजा वीरहम्बीर श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करते थे, उनके किसी वंशधरने इन श्रीश्रीमदनमोहनजीको बागबाजार निवासी श्रीगोकुलचन्द्र मित्र नामक एक धनी-जमींदारके निकट एक लाख रुपये लेकर बंधक रख दिया था। इसके लिए न्यायालयमें मुकदमा भी चला था। आज भी बागबाजारमें गोकुल चन्द्र मित्रके भवनमें ही वे श्रीमदनमोहनजी विराजमान हैं। श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकर श्रीकाशीश्वर पण्डितके वंशधर इन मदनमोहनजीके मूल सेवक थे। राजा वीरहम्बीरने इन्हींसे इस श्रीमदनमोहनको प्राप्त किया था।

श्रीरामपुर चातरा

यहाँ श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकर श्रीकाशीश्वर पण्डितका निवास स्थान है। श्रीकाशीश्वर पण्डित श्रीशंकरारण्यकी शाखामें थे। ये कृष्णलीलामें केलि-मञ्जरी थे। इनके पिताका नाम श्रीवासुदेव आचार्य एवं माताका नाम श्रीजाह्नवा देवी था। १४२० शकाब्दमें यशोहर जिलेमें ब्राह्मणडांगा ग्राममें इनका जन्म हुआ था। ये बचपनसे ही श्रीगौरांग देवके प्रति अनुरक्त एवं बाल-ब्रह्मचारी थे। किशोरावस्थामें गृह त्यागकर श्रीधामपुरी चले गये, किन्तु माताके आग्रहसे चातरामें

श्रीगौरनिताई विग्रह स्थापित कर सेवा करने लगे ।

काँकुटिया

यह वीरभूम जिलेमें देउलिर ग्रामके निकट स्थित है । यहाँ श्रीलोचनदास ठाकुरकी ससुराल है एवं इनके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीश्री-गोपीनाथ और श्रीगौरनिताई विग्रह आज भी यहाँ सेवित होरहे हैं।

कागज पुकुरिया

यह यशोहर जिलेमें वेनापोलके निकट एक स्थान है । इस ग्राममें दुराचारी वेश्यासक्त रामचन्द्र खाँ वास करता था । उसीने श्रीहरिदास ठाकुरकी साधनामें विघ्न डालनेके लिए हीरा नामक एक रूपवती किशोरी वेश्याको नियुक्त किया था, किन्तु वह श्रीहरिदास ठाकुरके शुद्ध हरिनामको सुनकर अपनी दुषित चित्तवृत्ति छोड़कर परम वैष्णवी बन गयी, जिसके दर्शनके लिए बड़े-बड़े साधु-सन्त पुरुष आते थे ।

तत्पश्चात् श्रीनित्यानन्द प्रभुके इस गाँवमें आने पर रामचन्द्रने उनका निरादर किया, नित्यानन्द प्रभुजी उस स्थानको छोड़कर चले गये, इस महापराधके कारण दूसरे दिन मुसलमानोंने आक्रमण कर सपरिवार रामचन्द्र खाँको मार डाला एवं उस स्थानको अपवित्र कर दिया ।

काँचड़ापाड़ा

'काँञ्चनपल्ली' चौबीस परगनेमें गंगाके किनारे स्थित है, जो महाप्रभुके परिकर श्रीवासुदेव दत्तका श्रीपाट (वासस्थान) है । ये श्रीमन्महाप्रभुके कीर्तनियाँ परिकर श्रीमुकुन्द दत्तके भाई थे । ये भी संगीत विद्यामें विशारद् एवं महाप्रभुके प्रिय कीर्त्तनियाँ थे । इन्होंने ही श्रीमन्महाप्रभुजीसे यह वर मांगा था कि मैं जगत्के समस्त जीवोंकी पापराशि भोगूँ और उन जीवोंकी आप सांसारिक आसक्ति

दूरकर उनको अपने भजनमें नियुक्त करें । बादमें ये कांचड़ापाड़ा छोड़कर नीलाचलवासी हो गये । ये कृष्णलीलाके मधुव्रत नामक सखा थे ।

शिवानन्दसेनकी जन्मभूमि कुलीन ग्राममें है और उनकी ससुराल काँचड़ापाड़ा है ।

यहीं पर कृष्णपुर मौहल्लेमें कविकर्णपूर द्वारा स्थापित श्रीश्रीकृष्णरायजी पूजित हो रहे हैं ।

काजलीग्राम

वर्द्धमान जिलेमें श्रीश्रीनित्यानन्द प्रभुजीकी माता पद्मावतीका जन्मस्थान है । ये बड़ी ही विदुषी एवं धर्मप्राण महिला थीं । इनके पिताका नाम श्रीमहेश्वर शर्मा था ।

काञ्चन गड़िया

यह मुर्शिदाबाद जिलेमें कांदि सबडिवीजनके अन्तर्गत बाजार साहु स्टेशनसे लगभग तीन फर्लांग दूर स्थित हैं । यहाँके प्रमुख दर्शनीय स्थान निम्न हैं–

(१) श्रीहरिदास आचार्यका श्रीपाट– इनको द्विज हरिदास भी कहा जाता है । ये श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकर थे । महाप्रभुजीके निर्देशानुसार वृन्दावनमें रहकर भजन करते थे । इनके दो पुत्र थे – श्रीदास और श्रीगोकुलदास । पिताजीके वृन्दावन चले जाने पर ये यहीं रहते थे । हरिदास आचार्य श्रीनिवास आचार्यको निर्देश दिया कि वे उनके दोनों पुत्रोंको स्वयं दीक्षा दें । श्रीश्रीनिवास प्रभुने वृन्दावनसे लौटकर इन दोनोंको वैष्णवी दीक्षा दी । हरिदास आचार्यके वृन्दावनमें स्वधाम प्राप्त होने पर उनके पुत्रोंने अपने पिताकी अवशिष्ट अस्थियोंको लाकर यहीं काञ्चनगड़िमें उनकी समाधि दी थी ।

(२) श्रीराधावल्लभ दास मण्डलका श्रीपाट– इन्होंने विलाप-कुसुमाञ्जलिका अनुवाद किया था।

(३) श्रीनिवास आचार्यके शिष्य वृन्दावन चट्टराजका श्रीपाट।

(४) श्रीनिवास आचार्यके शिष्य नृसिंह कविराजका श्रीपाट (अष्टकविराजोंमें से एक)

(५) श्रीनिवासाचार्यके शिष्य श्रीरघुनाथ कर (अष्टकविराजोंमें से एक) का श्रीपाट ।

काञ्चना ग्राम

यह चट्टग्रामके अन्तर्गत एक स्थान है । यहीं पर श्रीवासुदेव दत्त, मुकुन्द दत्त आदि श्रीमहाप्रभुके परिकरोंका जन्म स्थान है । श्रीवासुदेव दत्त श्रीशिवानन्द सेनकी सम्पत्तिकी देखमाल करते थे ।

श्रीवासुदेव दत्त पूर्वलीलामें 'मधुव्रत सखा' थे । श्रीमहाप्रभुके परिकर श्रीमुकुन्द दत्त इनके भ्राता थे । वासुदेव दत्त मधुर कण्ठवाले, संगीतशास्त्रके विशारद् एवं श्रीमहाप्रभुजीके कीर्त्तन-संगी थे । वासुदेव दत्तने पृथ्वीके समस्त जीवोंके पापोंको लेकर स्वयं भोगने तथा समस्त जीवोंको कृष्णभक्ति प्रदान करनेके लिए महाप्रभुजीसे प्रार्थना की थी ।

कटवा

यह वर्द्धमान जिलेमें स्थित है । इसको कण्टक नगरी भी कहते हैं । श्रीनिमाई पण्डित चौबीस वर्षकी आयुमें पत्नी श्रीविष्णु-प्रियाजीको एवं माता श्रीशचीदेवीको छोड़कर, निदयाघाट पारकर इस नगरीमें आये और यहीं पर श्रीकेशव भारतीसे संन्यास ग्रहण किया । यहींसे वे शान्तीपुर होते हुए श्रीपुरी धाममें चले गये । अभी भी यहाँ श्रीमन्महाप्रभुजीका मन्दिर, केश-मुण्डनका स्थान, केशोंकी समाधि, श्रीगदाधर दासकी समाधि एवं उनका वासस्थान,

श्रीकेशव भारतीका स्थान और निकट ही नाई श्रीमधुकी समाधि है। यहीं पर अस्मदीय गुरुपाद-पद्म नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजने भी संन्यास वेश ग्रहण किया था ।

अम्बिका कालना

यहाँ श्रीगौरीदास पण्डित एवं सूर्यदास सरखेलका श्रीपाट श्रीहृदय-चैतन्य, (श्यामानन्दके गुरु) परमानन्द, कृष्णदास सरखेल, आदिका वासस्थान है ।

श्रीगौरीदास पण्डित

पं० गौरीदास नित्यानन्द शाखाके द्वादश गोपालोंमें-से एक हैं। पूर्वलीलामें यह सुबल सखा थे । पहले शालिग्राम नामक स्थान पर रहते थे, बादमें गंगाके तट पर अम्बिका कालनामें वास करने लगे। यहाँसे थोड़ी ही दूर पर श्रीनवद्वीप धाम है । गंगाके इस पार अम्बिका कालना एवं उस पार शान्तिपुर है । शान्तिपुरमें श्रीअद्वैत आचार्यका वासस्थान था ।

श्रीगौरीदास पण्डितके पिताका नाम श्रीकंसारि मिश्र तथा माताका नाम कमलादेवी था । इनके अग्रज भ्राता श्रीसूर्यदास सरखेल की कन्या श्रीवसुधा एवं श्रीजाह्नवा देवीके साथ श्रीनित्यानन्द प्रभुका विवाह हुआ था । इन्हींके शिष्य श्रीहृदयचैतन्य थे, जिनके शिष्य प्रसिद्ध श्रीश्यामानन्द प्रभु हैं । एक समय श्रीमन्महाप्रभु एवं नित्यानन्द प्रभुजी हरिनदी ग्रामसे स्वयं नावको खेते हुए श्रीगौरीदासकी भजन कुटी पहुँचे, वहीं पास ही एक इमलीके वृक्षके नीचे बैठे थे । बहुत दिनोंके बाद इन दोनों प्रभुओंको पाकर श्रीगौरीदास पण्डितने उनके घरमें हमेशा रहनेके लिए बारम्बार आग्रह किया । श्रीमन्महा प्रभुजीने वहींके नीमवृक्षसे अपना तथा श्रीनित्यानन्द प्रभुका श्रीविग्रह

बनाकर गौरीदास पण्डितको प्रदान किया। पण्डित गौरीदास उन विग्रहोंसे बातचीत करते, इन्हें खिलाते और प्रीति-पूर्वक इनकी सेवा करते थे। आज भी वह श्रीविग्रह यहाँ विराजमान हैं।

कालिकापुर

कटवाके निकट श्रीगंगामाता गोस्वामिनीके वंशधरोंके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीराधामाधवजीकी सेवा यहाँ अभी भी होती है।

काशिम बाजार

यहाँ महाराजा श्रीमनीन्द्रचन्द्र नन्दीका राजभवन है। इन्होंने गौड़ीय वैष्णव धर्मकी उन्नतिके लिए अपना जीवन, कोषागार आदि सर्वस्व अर्पित कर दिया था। बहुतसी टीकाओंके साथ श्रीमद्भागवत का प्रकाशन इनकी अपूर्व कीर्त्ति है। देश-विदेशमें गौड़ीय वैष्णव धर्म प्रचारके लिए इन्होंने श्रीभक्तिविनोद ठाकुर और श्रील प्रभुपादजी की सब प्रकारसे सहायता की थी।

केशीयाड़ी

मेदिनीपुर जिलेके अन्तर्गत यह एक स्थान है। यहाँ श्री श्यामानन्द प्रभु एवं श्रीरसिकानन्द प्रभुका पदांकपूत स्थान है। यहाँ एक गौड़ीय मठ भी है।

कुमार हट्ट

चौबीस परगना जिलेके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीईश्वरपुरी, श्रीवास पण्डित और खंज भगवानाचार्य वास करते थे। इसका वर्त्तमान नाम हालीशहर है।

श्रीवास पण्डित पहले नवद्वीपमें रहते थे, बादमें महाप्रभुजीके अप्रकट होने पर वहाँ उनके विरहको सहन नहीं कर सके, अतः यहाँ आकर रहने लगे।

श्रीईश्वरपुरीपाद

ये श्रीमाधवेन्द्रपुरीके प्रधान शिष्य थे। ये बड़े ही गुरुनिष्ठ थे। ये अधिकांश रूपमें अपने गुरुजीके गया स्थित आश्रममें रहा करते थे। श्रीचैतन्य महाप्रभुसे इनकी इस गयाके विष्णु मन्दिरमें ही भेंट हुई थी। श्रीमहाप्रभुजीने इन्हींसे वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण की थी। ये भावुक भक्त होनेके साथ अप्राकृत कवि भी थे। इनका श्रीकृष्णलीलामृत नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इन्होंने पण्डित निमाईको (दीक्षासे पूर्व) नवद्वीप धाममें इस ग्रन्थका संशोधन करनेके लिए कहा था। श्रीमन्महाप्रभु संन्यासके पश्चात् अपने गुरुके जन्मस्थान कुमारहट्टमें आये थे और यहाँकी मिट्टीको बड़ी श्रद्धाके साथ अपने मस्तक पर धारण किया था। अप्रकट होनेके समय इन्होंने गोविन्द और काशीश्वरको महाप्रभुजीकी सेवाके लिए पुरी जानेका आदेश दिया था।

कुलाई या कानुई ग्राम

वर्द्धमान जिलेमें कटवासे पाँच कोस उत्तर-पश्चिममें अजय नदीके तट पर कुलाई ग्राम स्थित है। श्रीमहाप्रभुके परिकर श्रीगोविन्द, श्रीमाधव एवं श्रीवासुदेवकी यह जन्म-भूमि है। यहीं अजय नदीके तट पर महाप्रभुजीने विश्राम किया था।

कुलीन ग्राम

यह पूर्वी रेलवे न्यू कार्ड पर स्थित जौग्राम स्टेशनसे ३ मील पूर्वमें स्थित है। यहाँ एक जगन्नाथजीका मन्दिर है तथा श्री सत्यराज खान, श्रीरामानन्द वसु, शंकर, विद्यानन्द, वाणीनाथ वसु आदिका वासस्थान है।

श्रीरामानन्द वसु

ये श्रीमहाप्रभुजीके अत्यन्त प्रियपात्र थे। इनके पिताका नाम श्रीलक्ष्मीनाथ वसु तथा उपाधिका नाम श्रीसत्यराज खान था। श्री सत्यराज खानके पिताका नाम श्रीमालाधर वसु तथा उपाधिका नाम श्रीगुणराज खान था। ये गुणराज प्रसिद्ध पदकर्ता-कवि भी थे, इन्हींके द्वारा रचित 'श्रीकृष्ण विजय' नामक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। श्रीमन्महाप्रभुजीने इसीका एक पद-- **'नन्दनन्दन कृष्ण मोर प्राणनाथ'** का उल्लेख कर कहा था। "गुणराजके इस वाक्यसे मैं उनके वंशके हाथोंमें सदाके लिए बिक गया हूँ। श्रीरामानन्द वसु एवं इनके पिता श्रीसत्यराज खान दोनों ही एक साथ रथयात्राके समय प्रभुजीसे मिले थे। श्रीचैतन्य चरितामृत ग्रन्थमें उनका मिलन प्रसंग वर्णित है। महाप्रभुजीकी आज्ञासे ये प्रतिवर्ष जगन्नाथजीका रथ खींचनेके लिए पट्ट डोरी प्रस्तुतकर स्वयं लाते थे। इन्हींके प्रश्नोंके उत्तरमें महाप्रभुजीने यह बतलाया था कि जिनके मुखसे एक बार कृष्णनाम उच्चारित होता है, वे वैष्णव (कनिष्ठ) हैं एवं पूज्य हैं। जिनके मुखसे निरन्तर कृष्णनाम उच्चारित होता है, वे वैष्णवतर (मध्यम वैष्णव) हैं और जिनके दर्शनसे स्वयं कृष्णनाम उच्चारित होने लगता है, वे वैष्णवतम अर्थात् उत्तम वैष्णव हैं।

कृष्णनगर (खानाकुल कृष्णनगर)

हुगली जिलेके अन्तर्गत दारकेश्वर नदीके तट पर स्थित है। श्रीअभिराम गोस्वामीका यह श्रीपाट है। ये द्वादश गोपालोंमें मुख्यतम हैं।

श्रीकृष्णलीलामें यह श्रीदाम सखा व श्रीरामलीलामें भरत थे। इनकी पत्नीका नाम मालिनी देवी था। इन्होंने श्रीदामके आवेशमें एक बड़े काष्ठ खण्डको जिसे सोलह लोग मिलकर उठा पाते थे, एक हाथसे ही उठाकर उसे बंशीकी भांति अपने होठोंपर धारण

किया था। ये बड़े तेजस्वी थे। यदि किसी साधारण विग्रह अथवा शालिग्राम शिलाको प्रणाम करते थे, वह फट जाती थी। इन्होंने नित्यानन्द प्रभुजीके सात पुत्रोंको प्रणाम किया और वे साथ ही साथ मर गये, आठवें पुत्रके रूपमें श्रीवीरभद्र प्रभुजीको भी प्रणाम किया, किन्तु ये जीवित रहे। अभिराम गोस्वामीने वीरचन्द्र प्रभुको श्रीमन्महाप्रभुजीका द्वितीय कलेवर माना। इनके पास 'जय-मंगल' नामकी एक चाबुक रहती थी, जिस भाग्यवान् व्यक्तिको इस चाबुकका स्पर्श करा देते थे, उसे कृष्णप्रेमकी प्राप्ति हो जाती थी। श्रीनिवास आचार्यको इसी चाबुकसे मारकर श्रीअभिराम गोस्वामीने कृष्णप्रेम प्रदान किया था।

कृष्णपुर

हुगली जिलेके अन्तर्गत सप्तग्रामसे थोड़ी ही दूर दक्षिणमें सरस्वती नदीके पूर्वी तट पर श्रीरघुनाथ दास गोस्वामीका आविर्भाव स्थल है। यहीं उनके पिता श्रीगोवर्द्धनदास एवं चाचा हिरण्यदास का राजप्रसाद था। सप्तग्राम स्टेशनसे डेढ़ मीलकी दूरी पर यह स्थान है। यहाँ मन्दिरमें लकड़ीकी खड़ाऊँ और एक प्रस्तर खण्ड है। इस खड़ाऊँको रघुनाथ दास पहना करते थे तथा प्रस्तर खण्ड पर वे बैठते थे।

केन्दुविल्व

वीरभूम जिलेके अन्तर्गत सिउड़ीसे २० मील दक्षिणमें अजय नदीके किनारे यह बसा हुआ है। दुर्गापुर रेलवे स्टेशनसे भी मोटर एवं बसके द्वारा यहाँ जा सकते हैं। प्रसिद्ध श्रीजयदेव गोस्वामीका वासस्थान है। जयदेव गोस्वामी लक्ष्मणसेन महाराजके राजपण्डित थे, जिनका गीतगोविन्द प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

कोग्राम

श्रीचैतन्य मंगलके रचयिता श्रीलोचनदास ठाकुरका श्रीपाट है। यहीं पर उनकी समाधि भी है । इनकी माताका नाम सदानन्दी एवं पिताका नाम कमलाकर था । ये श्रीखण्डके प्रसिद्ध श्रीनरहरि सरकार ठाकुरके शिष्य थे । इनके दूसरे ग्रन्थों पदावलियों तथा रास-पञ्चाध्यायीके पदानुवादका उल्लेख पाया जाता है ।

खड़दह

चौबीस परगना जिलेके अन्तर्गत इस्टर्न रेलवेके खड़दह स्टेशनसे २ मील पश्चिममें गंगाके तट पर खड़दह ग्राम स्थित है । महाप्रभुके पुरी चले जानेके बाद, उनके आदेशसे नित्यानन्द प्रभुजी वैष्णवधर्मके प्रचारके लिए बंगाल लौटे । विभिन्न स्थानों पर प्रचार करते हुए अन्तमें इसी स्थान पर रहने लगे । यहीं पर इन्होंने श्रीजाह्नवा एवं श्रीवसुधा देवीके साथ विवाह किया । यहीं पर उनके पुत्र श्रीवीरभद्र एवं कन्या गंगामाता देवीका जन्म हुआ था । श्रीनिवास आचार्य एवं नरोत्तम ठाकुर भी यहाँ आये थे । यहाँ श्रीमन्दिरमें श्यामसुन्दरराय विराजमान हैं तथा गंगाका घाट भी श्यामसुन्दर घाटके नामसे प्रसिद्ध है ।

खेतुरी

राजशाही जिलेके अन्तर्गत रामपुर-वोआलियारसे छह कोसकी दूरी पर खेतुरी अवस्थित है । सियालदा स्टेशनसे लालगोला घाट और वहाँसे स्टीमर द्वारा गंगापार कर प्रेमतली तथा वहाँसे दो मील दूर खेतुरी है । यहाँ श्रीनरोत्तम ठाकुरका श्रीपाट है । यहाँ श्रीनरोत्तम ठाकुर द्वारा स्थापित बहुतसे मन्दिर और राधाकुण्ड-श्यामकुण्ड भी हैं । मन्दिरके उत्तरमें प्राचीन राजवाटीका चिह्न है । वहाँ आसन बाड़ीमें नरोत्तम ठाकुरका आसन, इमलीतला, उनका दांतुन और

प्रेमतली आदि स्थान दर्शनीय हैं । उनके दांतुनसे विशाल इमलीका पेड़ हुआ है । प्रेमतलीमें श्रीमहाप्रभुजी श्रीनरोत्तमके जन्मसे पूर्व यहाँ पधारे थे तथा नरोत्तम ठाकुरके लिए यहीं पर प्रेम संरक्षण किया था । इसलिए इस स्थानका नाम प्रेमतली हुआ । श्रीनरोत्तम ठाकुरने यहाँ छह विग्रहोंकी प्रतिष्ठा की थी । (१) श्रीगौरांग, (२) श्रीवल्लभी कान्त, (३) श्रीव्रजमोहन, (४) श्रीकृष्ण (५) श्रीराधाकान्त (६) श्रीराधामोहन । खेतुरीके प्रसिद्ध महोत्सवमें श्रीजाह्नवा माता भी यहाँ पर पधारीं थीं ।

गुप्तिपाड़ा

श्रीवक्रेश्वर पण्डितका श्रीपाट है । श्रीचैतन्य महाप्रभुजीने इनको श्रीपुरीधाममें स्थित श्रीकाशीमिश्र भवनमें श्रीराधाकान्त मठ और गम्भीराकी सेवाका भार सौंपा था ।

गोपीवल्लभपुर

मेदिनीपुरमें सुवर्णरिखा नदीके तटपर स्थित है । एस० ई० रेलवे सरडिहा स्टेशनसे ८ कोस मोटर बससे तथा वहाँसे चार कोस पैदल सुवर्णरिखा पार करके गोपीवल्लभपुर है । श्रीश्यामानन्द प्रभुके शिष्य श्रीरसिकानन्द प्रभुने मयुरभञ्जके महाराजसे एक विग्रह प्राप्त किया था, जिसका नाम श्रीश्यामानन्द प्रभुजीने श्रीगोपीनाथ रखा । उन्होंने उक्त विग्रहकी जिस स्थान पर प्रतिष्ठा की थी, उस स्थानका नाम गोपीवल्लभपुर हुआ । यहाँ पर बहुत प्रकारकी मुद्राएँ (सिक्के) बादशाही जमानेकी दलीलें, श्रीरसिकानन्द प्रभुके गलेकी माला, व्यवहृत कंथा, श्रीमद्भागवत, मिट्टीके वर्त्तन, तिलक, तीन-चार बंशियां और बहुत सी हस्त लिखित पुस्तकें परलोकगत महन्त श्रीनन्दनन्दानन्द देव गोस्वामीके घरमें सुरक्षित रखीं हैं।

श्रीरसिकानन्द प्रभु

इनको रसिकमुरारी भी कहते हैं। ये श्रीश्यामानन्द प्रभुके प्रधान शिष्य थे। इनका आविर्भाव १५१२ शकाब्दमें श्रीपाट सुवर्ण-रेखा नदीके तटस्थित रोहिणी या रयनी ग्राममें हुआ था। पिताका नाम श्रीअच्युतानन्द एवं माताका नाम श्रीभवानी देवी था। ये बड़े विद्वान, रसिक और सिद्धमहात्मा थे। श्रीश्यामानन्द प्रभुने इनके गुणोंसे मुग्ध होकर अपने द्वारा प्रतिष्ठित श्रीगोविन्द जीकी सेवा इनको समर्पित की थी। ये महाप्रभावशाली थे। एक अत्याचारी यवन शासकने इनको तंग करनेके लिए कुछ पागल हाथियोंको छोड़ दिया। इन्होंने भगवन्नाम करते हुए अपने चुल्लू (हाथमें) पानी लेकर हाथियोंके ऊपर छोड़ दिया। प्रोक्षित जलका स्पर्श होनेके साथही वे हाथी नतमस्तक होकर अपनी सूढ़ोंको ऊपर उठाकर कृष्णनामका उच्च स्वरसे कीर्तन करने लगे। वे समस्त हाथी सदाके लिए नम्र, विनयी एवं वैष्णव बन गये। अत्याचारी शासकका चित्त भी बदल गया, वह भी इनके शरणागत होकर कृष्ण-भजन करने लगा।

इनकी अलौकिक शक्तिसे तत्कालीन मयूरभञ्ज, पटाशपुर, मयना आदि राज्योंके राजा भी इनके शिष्य हो गये। अन्तिम कालमें ये अपने सेवकोंके साथ कीर्त्तन करते हुए वांशदह नामक ग्रामसे रेमुना स्थित खीरचोरा गोपीनाथके प्रांगणमें उपस्थित हुए तथा गर्भ मन्दिरमें प्रवेशकर श्रीगोपीनाथजीके श्रीअंगमें प्रविष्ट हो गये। इनके साथी सेवकोंने भी उसी प्रांगणमें अपने-अपने शरीरोंको त्याग दिया। श्री गोपीनाथ मन्दिरके पास ही श्रीरसिकानन्दकी पुष्प-समाधि तथा उन भक्तोंकी समाधियां भी देखी जाती हैं।

चाकदह

नदीया जिलेमें श्रीमहेश पण्डितका श्रीपाट है। ये श्रीनित्यानन्द

प्रभुजीकी शाखामें द्वादश गोपालोंमें-से एक हैं, ब्रजलीलामें इनका नाम उदार गोपाल था। श्रीप्रद्युम्नजीने यहीं पर शम्बरासुरका वध किया था, इसलिए इसे प्रद्युम्न नगर भी कहते हैं।

चाकुन्दी

नदीया जिलेमें दांईहाट रेलवे स्टेशनसे उतरकर चाकुन्दी जाना पड़ता है, यहाँ श्रीनिवास प्रभुजीका जन्म-स्थल एवं यहीं इनकी समाधि भी है।

श्रीनिवासाचार्य

इनका जन्म १४४१ शकाब्दमें वैशाखी पूर्णिमाको हुआ था। पिताका नाम श्रीचैतन्यदास (राढ़ीय ब्राह्मण) था। ये यहाँ महा-महोपदेशक, आध्यात्मिक शिक्षक, वैष्णव-वेदान्त और साहित्य तथा वैष्णव महाजन पदावलियोंके प्रचारक थे। श्रीआचार्य प्रभुजीने श्रीगौड़ीय वैष्णव-धर्मके प्रचारके लिए बहुत कुछ किया है। ये महाप्रभुके द्वितीय प्रकाश भी कहे जाते हैं। इनके गुरुजी सुप्रसिद्ध श्रीगोपालभट्ट हैं। इन्होंने श्रीलजीव गोस्वामीके निकट वैष्णव-दर्शन एवं भक्ति ग्रन्थोंकी शिक्षा ग्रहण की थी। ये मनोहरशाही स्वरके प्रवर्तक माने जाते हैं। श्रीजीव गोस्वामीका आदेश पाकर ये गोस्वामीयोंके रचित समस्त ग्रन्थोंको लेकर बैलगाड़ीसे बंगाल लौट रहे थे। रास्तेमें बंगालकी सीमामें प्रवेश करते ही वहाँके डकैत राजा वीरहम्बीरने रत्नोंकी पेटियाँ समझकर ग्रन्थोंसे भरी पेटियोंको चुरा लिया। बादमें श्रीनिवास प्रभुके प्रभावसे ग्रन्थोंको लौटा दिया गया और वे इनके शिष्य हो गये।

चाटिग्राम

इस चट्टग्राम जिलेमें श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि, श्रीचैतन्य वल्लभ, श्रीवासुदेव दत्त और श्रीमुकुन्द दत्त आदि श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकरों

का जन्म स्थान है ।

श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि

पुण्डरीक विद्यानिधिका जन्म ब्राह्मणकुलमें हुआ था । पिताका नाम श्रीराणेश्वर ब्रह्मचारी एवं माताका नाम श्रीगंगादेवी था । ये ब्रजलीलाके वृषभानु महाराज हैं । ये चन्द्रशालाके जमींदार थे । नवद्वीपमें भी इनका एक भवन और सम्पत्ति थी । प्रसिद्ध श्रीमाधवेन्द्र पुरीके ये शिष्य थे । श्रीगदाधर पण्डितके पिता श्रीमाधवमिश्रसे इनका बन्धुत्व था । पुण्डरीक राजर्षिके समान थे । किन्तु जमींदारीके कार्यों और भोग-विलासोंमें रहने पर भी ये उच्चकोटिके परम भागवत थे । श्रीमन्महाप्रभुजी इनको 'बाप' कहा करते थे । किसी समय महाप्रभुजीने गदाधर पण्डितको इनके दर्शनोंके लिए भेजा । पुण्डरीक विद्यानिधिको ऊपरसे भोगी-विलासीके रूपमें देखकर वे लौट गये । बादमें श्रीमुकुन्दके साथ पुनः भेजने पर श्रीमद्भागवतके 'अहो बकी यं - - - - ' श्लोकको श्रवण करते ही भावमें विभोर होकर जमीन पर लोटपोट होकर मूर्च्छित हो गये । इनके राजकीय वस्त्र फट गये, सारा शरीर धूलसे भर गया, शरीरकी सुध-बुध भी नहीं रही । इनको ऐसा देखकर गदाधर पण्डित बड़े विस्मित हुए और इनसे वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण की ।

महाप्रभुजी इनको प्रेमनिधि नामसे भी पुकारते थे । श्रीस्वरूप दामोदरके ये प्रिय सखा थे । एक दिन ये जगन्नाथ दर्शनके लिए गये, जगन्नाथजी मड़ुआ (माड़युक्त) वस्त्र धारण किये हुए थे । पुण्डरीक विद्यानिधिने मड़ुआ वस्त्रोंको अपवित्र समझकर कुछ सन्देह किया । रातको स्वप्नमें श्रीजगन्नाथ और बलदेव दोनोंने ही इनको पकड़कर, इनके गालोंको चपत लगा-लगाकर फुला दिया । चपत लगाते समय जगन्नाथ तथा बलदेव दोनों ही हँस रहे थे । सवेरे उठने पर इनके दोनों गाल फूले हुए थे । श्रीजगन्नाथजीकी ऐसी

महती कृपा उपलब्धि कर ये गद्-गद् होकर रोने लगे । अहो ! जगन्नाथ-बलदेव बड़े दयालु हैं । वे अपने प्रिय बन्धुओंके दोष देखने पर सद्बन्धुकी भाँति उनका संशोधन कर देते हैं ।

श्रीमुकुन्द दत्त

ये महाप्रभुजीके सहपाठी थे । ब्रजलीलामें ये मधुकण्ठ नामक सखा थे । इनका गला बड़ा ही मधुर था । यह पहले चट्टग्रामकी चट्टशालामें रहते थे, बादमें आकर नवद्वीपमें रहे । श्रीमन्महाप्रभुजीके संन्यासके बाद कांचड़ापाड़ामें वास किया था । ये वासुदेव दत्तके कनिष्ठ भ्राता थे। महाप्रभुजीने इनको खड़झटिया बतलाकर प्रेम देनेमें इनकी कुछ उपेक्षा की थी । इन्होंने किसी व्यक्तिके द्वारा महाप्रभुजीके पास सन्देश भिजवाया कि मेरा उद्धार कब होगा ? महाप्रभुजीने उत्तर दिया कि तुम कोटि जन्मोंके बाद मुझे प्राप्त होओगे । इतना सुनते ही मुकुन्दजी कूद-कूद कर नृत्य करने लगे और बोले, 'अब तो मेरा निश्चय हो गया कि कोटि जन्मोंके बाद प्रभुको पाऊँगा ही ।' श्रीमन्महाप्रभु इनके ऐसे प्रेममय भावको देखकर द्रवित हो गये और तुरन्त बुलाकर इन पर कृपा की । ये श्रीवास अंगनमें कीर्त्तनके समय, संन्यासके समय और नीलांचल गमनके समय सर्वदा महाप्रभुजीके साथ रहे ।

चाँदपाड़ा

मुर्शिदाबाद स्टेशनसे ४ कोस उत्तर-पूरबमें यह स्थान है । चाँदपाड़ामें ही श्रीसुबुद्धि रायका जन्म हुआ था । हुसैनशाहने अपनी स्त्रीके कहनेसे श्रीसुबुद्धिरायके मुखमें अपने बधनेका पानी दे दिया था, जिससे इनकी जाति नष्ट हो गयी । ब्राह्मणोंने शुद्धिके लिए इनको गर्म खौलता हुआ घी पीकर प्राण त्यागनेका विधान दिया। श्रीमन्महाप्रभुजीके चरणोंमें शरणागत होने पर उन्होंने इनको मथुरा वृन्दावनमें जाकर हरिनाम करनेका आदेश दिया । ये मथुरा वृन्दावनमें

रहकर हरिनाम करने लगे और एक महात्मा बन गये ।

चाँदपुर एवं सप्तग्राम

सप्तग्रामके अन्तर्गत चाँदपुरमें श्रीलरघुनाथदास गोस्वामीके गुरु एवं हरिदास ठाकुरके प्रिय श्रीयदुनन्दन आचार्यका निवास स्थान था। इन्हींकी संगतिसे रघुनाथ गोस्वामीने निताईगौरके चरणकलमोंको प्राप्त किया था ।

चाँपाहाटी

वर्धमान जिलेके अन्तर्गत इस स्थानमें श्रीवाणीनाथजीका श्रीपाट है । ये श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामीके छोटे भाई थे । ब्रजलीलामें ये कामलेखा सखी हैं । यहीं श्रीवाणीनाथजीके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीगौर-गदाधरजीकी सेवा आज भी होती है । यहीं पर श्रीजयदेव गोस्वामीने अपनी पत्नी पद्मावतीके साथ कुछ दिनों तक निवास किया था । ऐसा कहा जाता है कि ये प्रतिष्ठाके डरसे बल्लालसेन राजाके राज्यको छोड़कर यहाँ कुटी बनाकर भजन करते थे । इन्होंने प्रसिद्ध श्रीगीतगोविन्दकी रचना भी यहीं पर की थी । श्रीस्वरूप दामोदर श्रीमन्महाप्रभुजीको गीत-गोविन्दके पदोंको सुनाया करते थे । महाप्रभुजी इन पदोंको सुनकर भाव-विभोर हो जाते थे ।

चुँचुड़ा

चुँचुड़ाके कामार पाड़ा बाजारमें पञ्चानन तलामें श्रीश्यामसुन्दरका विग्रह है । यह श्रीदासगोस्वामीकी पैतृक श्रीविग्रह है । सप्तग्राममें मुसलमानोंका उपद्रव होने पर श्रीरघुनाथदासके पिता श्रीगोवर्धन मजूमदारने अपने इस श्रीविग्रहको यहीं पर छिपा रखा था, तबसे अभी तक यह विग्रह यहीं पर विराजमान हैं । चुँचुड़ा चौमाथामें श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिके प्रतिष्ठाता आचार्य केशरी नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद १०८ श्रीश्रीमद्भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी

महाराजने श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ एक प्राचीन ठाकुर बाड़ीमें स्थापित किया । वहाँ श्रीवास पण्डितके द्वारा पूजित श्रीगौर-नित्यानन्द विग्रह विराजमान हैं, आज भी इस मठमें उनकी सेवा हो रही है । पहले यह विग्रह श्रीवास पण्डितके द्वारा हालीशहरमें सेवित होते थे, बादमें इन्हें चुँचुड़ामें लाया गया ।

छत्रभोग

चौबीस परगनामें, थाना मथुरापुरके अन्तर्गत जयनगरमजिलपुर रेलवे स्टेशनसे ४ मील दक्षिणमें स्थित है । महाप्रभुजीके समयमें यहाँ पर गंगानदी सैंकड़ों धाराओंमें विभक्त होकर समुद्रमें मिलती थीं । पुरी जाते समय महाप्रभुजी यहीं होकर गये थे । इसके पास ही चक्रतीर्थ है । यहाँ पर जगद्गुरु श्रीलभक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरने श्रीमन्महाप्रभुजीके पादपीठकी स्थापना की है । थोड़ी दूर पर ही 'अम्बूलिंग' नामक प्रसिद्ध तीर्थ भी है ।

झामटपुर

वर्धमान जिलेके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीलकृष्णदास कविराज गोस्वामी और श्रीमीनकेतन रामदासका श्रीपाट है । ईस्टर्न रेलवेके कटवा स्टेशनसे सालार स्टेशर पर उतरकर २ मील चलना पड़ता है । यहीं पर श्रील कृष्णदास कविराज अपने बड़े भाईके साथ रहा करते थे । इनके घर पर कीर्त्तनके समय श्रीअभिराम गोस्वामी, जो अपनी 'चाबुक' से किसीको कृपा-पूर्वक मारकर कृष्णप्रेम प्रदान करते थे, इस संकीर्त्तनमें सम्मिलित हुए । श्रीरामकेतन मीनदास भी यहाँ उपस्थित थे । श्रीमन्महाप्रभुजीकी महिमा कीर्त्तनके माध्यमसे कीर्तित हो रही थी । श्रीअभिराम ठाकुर नित्यानन्द प्रभुकी कुछ महिमाका गान करने लगे । इस पर श्रीलकृष्णदास कविराजके बड़े भाईने अभिराम गोस्वामीको व्यवधान पहुँचाकर श्रीनित्यानन्द प्रभुके सम्बन्धमें कुछ अवज्ञा सूचक बातें कहीं । श्रीअभिराम गोस्वामीने

क्रुद्ध होकर कीर्त्तन स्थलका त्याग कर दिया। इस पर श्रीकविराज गोस्वामी अपने भाई पर रुष्ट हुए एवं उनको हमेशाके लिए त्याग कर वृन्दावनमें पधारे। श्रीनित्यानन्द प्रभुने अपने प्रति ऐसी निष्ठा देखकर, कृष्णदास कविराज पर महती कृपा की और उन्हें श्रीवृन्दावन धाम, श्रीराधा-गोविन्द, श्रीराधागोपीनाथ और श्रीराधामोहनका साक्षात् दर्शन कराया था तथा प्रेमाभक्ति प्रदान कर भक्ति ग्रन्थ सृजन करने की शक्ति संचरित की थी।

ढाका—(श्रीढाकेश्वरी पीठ)

श्रीवीरचन्द्र प्रभु यहाँके नवावसे मिले थे। उन्होंने नवावसे राजभवनके तोरणके ऊपरी भागमें लगा एक सुचिह्नित प्रस्तर खण्ड माँगा। राजाने प्रभुको वह प्रस्तर खण्ड प्रदान कर दिया, उसी पत्थरसे श्रीश्यामसुन्दर विग्रह प्रकाशित हुए थे। इस अंचलमें वीरचन्द्र प्रभुने भगवद् भक्तिका प्रचार किया था।

दक्षिण ढाका

श्रीजगन्नाथमिश्र और उनके पिता श्रीउपेन्द्र मिश्रका जन्म यहाँ हुआ था। श्रीमन्महाप्रभुने यहाँ जाकर अपनी पितामहीको दर्शन दिये थे। इस स्थानको गुप्त वृन्दावन भी कहते हैं।

तमलुक-(ताम्रलिप्ति)

मेदिनीपुर जिलेमें यह प्राचीन नगर है। जो रूपनारायण नदके तट पर स्थित है। प्राचीनकालमें समुद्रके किनारे यह प्रसिद्ध बन्दरगाह था। प्रसिद्ध राजाओंकी राजधानी थी। महाभारत कालमें मयुरध्वज राजाने पाण्डवोंसे यहाँ युद्ध किया था। राजाने उनको पहिचानकर श्रीकृष्णसे सदैव दर्शन देते रहने प्रार्थना की थी। श्रीकृष्ण जिष्णुहरि (अर्जुन और हरि) विग्रह रूपमें यहाँ अब तक विराजित हैं। जैन धर्मके प्रसिद्ध २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथने यहाँ आकर वैदिक कर्म-

काण्डके विरुद्ध प्रचार किया था। बौद्धोंका प्रधान संघारम्भ यहीं पर था। सम्राट अशोक ताम्रलिप्तिको मौर्य साम्राज्यके अन्तर्गत लाये थे। यहाँ एक अशोक स्तम्भ भी स्थापित किया। श्रीमन्महाप्रभुके समय श्रीवासुदेव घोषका वासस्थान भी यहीं पर था। वासुदेव घोष महाप्रभुजीके संन्यासके बाद गौरशून्य नदीयामें न रह सके और तमलुकमें आकर निवास करने लगे। यहाँ पर वे श्रीमन्महाप्रभुजीका श्रीविग्रह स्थापित कर उनका अर्चन-पूजन करते थे।

तालखरी

यशोहरसे १२ मील उत्तरमें तालखरी स्थान है। यहाँ पर श्रीलोकनाथ गोस्वामीका आविर्भाव हुआ था, जिन्होंने बादमें वृन्दावन के छत्रवनके अन्तर्गत उमराव गाँवमें किशोरीकुण्डसे श्रीराधाविनोद जीको प्राप्त कर उनकी सेवा प्रकाशित की थी। इन्होंने प्रतिष्ठाके भयसे श्रीकृष्णदास कविराजको श्रीचैतन्य चरितामृतमें अपना नाम उल्लेख करनेके लिए निषेध किया था। इन्हींके शिष्य श्रीनरोत्तम ठाकुर थे। जिन्होंने पूर्वीभारतमें सर्वत्र वैष्णव धर्मका प्रचार किया था।

त्रिवेणी

सप्तग्राममें रहते समय नित्यानन्द प्रभुजी त्रिवेणी घाट पर ही स्नान करते थे। यहाँ गंगा, जमुना और सरस्वतीका संगम स्थल है।

दाँईहाट

बैण्डिल-बड़हरवा रेलवे लाइन पर दाईहाट स्टेशनसे २ मीलकी दूरी पर स्थित इस स्थान पर श्रीवासुदेव घोषके भ्राता श्रीमुकुन्द घोषका श्रीपाट है। इनके द्वारा सेवित श्रीरसिकराय आज भी यहाँ पर विराजमान हैं। यहाँ पर श्रीबंशीवदनानन्दजीका भी श्रीपाट है।

बंशीवदनानन्द

पूर्वलीलामें ये कृष्णप्रिया बंशी थे। श्रीधाम नवद्वीपके अन्तर्गत कुलिया पहाड़पुर नामक स्थानमें इनका श्रीपाट है। श्रीमन्महाप्रभुजीके संन्यास लेकर पुरी गमनके पश्चात् श्रीधाम नवद्वीपमें श्रीशचीमाता एवं श्रीविष्णुप्रिया देवीके रक्षकके रूपमें ये नियुक्त हुए थे। इन्होंने श्रीविष्णुप्रिया देवीकी अनुमति लेकर श्रीगौरांगदेवके श्रीविग्रहकी स्थापना की थी।

देनुड़

श्रीमन्महाप्रभुजीके संन्यास गुरु श्रीकेशवभारतीकी यह जन्मभूमि है। ये संन्यास ग्रहण करनेके पश्चात् खाटुन्दि और अन्तमें कटवामें आश्रम बनाकर भजन करते थे। कटवामें उनकी समाधि भी है। यहीं पर श्रीवृन्दावनदास ठाकुरने श्रीचैतन्य भागवतकी रचना और निताई-गौर विग्रहकी स्थापना की थी। यह स्थान उनका मातूलालय था। श्रीगदाधर पण्डित द्वारा हस्तलिखित श्रीमद्भागवतकी पुस्तक पर श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके हस्तलिखित दो चार शब्दोंके अर्थ लिखे हैं, जो यहाँ आज तक सुरक्षित है।

देवग्राम

मुर्शिदाबादके अन्तर्गत यह स्थान श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर की जन्मभूमि है।

श्रीविश्वनाथचक्रवर्ती ठाकुर

१५७६ शकाब्दमें मुर्शिदाबाद जिलेके सागरदीघि थानेके अन्तर्गत देवग्राममें इनका जन्म हुआ था। इनके पिताका नाम श्रीरामनारायण चक्रवर्ती था। प्रारम्भिक शिक्षा इनकी देवग्राममें हुई तथा सैदाबादमें विधिवत् भक्तिका अनुशीलन किया। इनके दीक्षागुरु

का नाम श्रीराधारमण चक्रवर्ती तथा परमगुरुका नाम श्रीकृष्णचरण चक्रवर्ती था। श्रीकृष्णचरण चक्रवर्ती श्रीराधारमणके पिता थे। श्रीकृष्णचरण सैदाबाद निवासी रामकृष्ण आचार्यके पुत्र तथा बालुचरके गंगानारायणके दत्तक पुत्र थे। ये सैदाबादमें वासकर भक्ति-शास्त्रोंका अध्ययन करते थे। श्रीलविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुरने इन्हींके पास भक्ति-शास्त्रोंका अध्ययन किया था। उसी समय इन्होंने बिन्दु, किरण और कणा तीन लघु ग्रन्थोंका प्रणयन किया था। इन्होंने विवाह तो किया था, किन्तु घरमें तनिक भी आसक्ति नहीं थी। गृहत्यागके बाद ये वृन्दावनमें रहकर भजन करते थे। अपने गुरुजीकी आज्ञासे स्वदेश लौटकर रात भर अपनी पत्नीके पास रहे और सारी रात अपनी साध्वी पत्नीको श्रीमद्भागवत-रसामृतका पान कराया। सबेरे पुनः वृन्दावनके लिए प्रस्थान कर गये।

चक्रवर्ती ठाकुर तत्कालीन विद्वत् समाजमें महा-महोपाध्यायके रूपमें एवं वैष्णव-समाजके कर्णधारके रूपमें प्रसिद्ध थे। ये एक प्रगाढ़ पण्डित, महान दार्शनिक, परमभक्त, रसिक, श्रेष्ठकवि और वैष्णव चूड़ामणि थे। विश्वके जीवोंको भक्तिपथ दिखलानेके कारण ये 'विश्वनाथ' हैं और भक्तचक्रमें रहनेके कारण 'चक्रवर्ती' हैं। कहा जाता है कि जहाँ ये श्रीमद्भागवतकी टीका लिखते थे, वहाँ वर्षाका पानी नहीं पड़ता था। श्रीधामवृन्दावनमें इनके द्वारा प्रतिष्ठित श्रीगोकुलानन्दजी विराजित हैं, ये माघी शुक्ला पञ्चमीमें श्रीराधाकुण्ड के तट पर अप्रकट हुए थे। श्रीगोकुलानन्द मन्दिरके निकट ही इनकी समाधि है।

इनके द्वारा रचित प्रधान ग्रन्थ ये हैं—श्रीमद्भागवतकी 'सारार्थ-दर्शिनी' टीका, गीताकी 'सारार्थवर्षिणी' टीका, उज्ज्वल नीलमणिकी 'आनन्दचन्द्रिका', भक्तिरसामृतसिन्धुकी 'भक्तिसार-प्रदर्शिनी' टीका, गोपाल-तापनीकी 'भक्तिहर्षिनी', ब्रह्मसंहिताकी टीका, दानकेलिकौमुदी की 'महती' टीका, आनन्दवृन्दावन चम्पुकी 'सुखवर्तनी', अलंकार

कौस्तुभकी 'सुवोधिनी', हंसदूतकी टीका, श्रीचैतन्यचरितामृतकी संस्कृत टीका तथा प्रेमभक्ति चन्द्रिकाकी टीका।

स्वरचित मूल-ग्रन्थ- श्रीकृष्णभावनामृत, श्रीगौरांगलीलामृत ऐश्वर्यकादम्बिनी, माधुर्यकादम्बिनी, स्तवामृत लहरी, सिन्धुविन्दु, उज्ज्वल-किरण, भागवतामृतकणा, रागवर्त्मचन्द्रिका, चमत्कार-चन्द्रिका, क्षणदागीतचिन्तामणी आदि प्रमुख हैं।

धारेन्दा बहादुर

मेदिनीपुर जिलेमें खड़गपुर रेलवे स्टेशनके पास ही श्रीश्यामानन्द प्रभुजीका श्रीपाट है। १४५५ शकाब्दमें यहीं पर श्रीश्यामानन्दप्रभु का आविर्भाव हुआ था।

श्रीश्यामानन्द

सदगोप कुलमें इनका जन्म हुआ था। इनके पिताका नाम श्रीकृष्णमण्डल एवं माताका नाम श्रीमती दुरिकादेवी था। इनके बचपनका नाम दुःखी कृष्णदास था। बहुतसे बड़े भाई एवं बहिनोंकी मृत्युके पश्चात् इनका जन्म हुआ था। कालचक्रसे बचनेके लिए मातापिताने इनका नाम दुःखी रखा, बादमें इनका नाम कृष्णदास हुआ। छोटी उम्रमें ही अपने पिताका आदेश लेकर कालनाके प्रसिद्ध श्रीगौरीदास पण्डितके शिष्य श्रीहृदय चैतन्यसे वैष्णवी दीक्षा ग्रहण की। श्यामानन्दजीने पहले गौड़मण्डलका दर्शनकर भारत वर्षके सभी तीर्थस्थानोंमें भ्रमण किया। तत्पश्चात् वृन्दावनमें श्रीजीव गोस्वामीसे भक्ति-शास्त्रोंका अध्ययन किया। उस समय वृन्दावनके झाड़ूमण्डल नामक स्थानमें रहकर वे साधन-भजन करते थे। एक दिन प्रातःकाल निकटस्थ रासमण्डलमें झाडू देते समय श्रीमतीराधिका जीके श्रीचरणोंका एक नूपुर मिला। ये उसे लेकर श्रीलजीवगोस्वामी के पास गये। श्रीजीवगोस्वामीने इनको श्रीराधिकाजीके अतिरिक्त किसीको भी देनेके लिए निषेध किया। श्रीललिता-विशाखाजी इनके

पास नूपुरकी खोजमें आयीं, किन्तु इन्होंने कहा-- 'जिनका नूपुर है, वे आवें तो मैं उन्हींके चरणोंमें अपने हाथोंसे नूपुर पहना दूँगा।' ललिताजीने कहा, 'तुम्हें लज्जा नहीं आती। बाबाजी होकर भी किसी कुल वधुके पैरोंमें नूपुर पहनाओगे।' किन्तु ये अपनी बात पर अटल रहे। अन्तमें यह बात तय हुई कि तुम्हारी आखों पर पट्टी बाँध दी जायेगी, उस स्थितिमें तुम उनके चरणोंमें नूपुर पहना सकते हो। ऐसा ही हुआ। श्रीमतीराधिकाजीने अपनी सखियोंके साथ दर्शन देकर उनका जीवन कृतार्थ कर दिया। श्रीजीव गोस्वामीने प्रसन्न होकर इनका नाम श्यामानन्द दास कर दिया। श्यामाको आनन्द देने वाले श्यामसुन्दरके दासको श्यामानन्द दास कहते हैं। श्यामानन्द प्रभुने उस नूपुरको अपने ललाट पर स्पर्श किया था तबसे उनके ललाट पर नूपुराकृत तिलक हो गया। ये नरोत्तम ठाकुर एवं श्रीनिवासाचार्यके साथ वैष्णव ग्रन्थोंको लेकर गौड़देशमें आ रहे थे। राजा वीरहम्बीरने उन ग्रन्थोंको चुरा लिया था।

(विस्तृत विवरणके लिए "वन विष्णुपुर" देखें)

इन्होंने अपने शेष जीवनमें उड़ीसाके नृसिंहपुर नामक ग्राममें रहकर विपुलरूपमें वैष्णव धर्मका प्रचार किया। इनके असंख्य शिष्योंमें रसिकानन्दजी प्रधान थे।

नवग्राम

(लाउड़ श्रीहट्ट, श्रीअद्वैताचार्यजीका जन्म-स्थान)

(विस्तृत वर्णनकेलिए 'शान्तिपुर' देखें)

नवहट्ट या नैहाटी

यह कटवासे ३ मील उत्तरमें सनातन गोस्वामीके संस्कृत शास्त्र आदिके शिक्षागुरु, अद्वितीय पौराणिक श्रीसर्वानन्द बाचस्पतिका स्थान है। श्रीरूप-सनातनके पूर्वज श्रीपद्मनाभ यहीं पर वास कर श्रीजगन्नाथजीकी सेवा एवं रथयात्रा आदि किया करते थे। श्रीसनातन

गोस्वामीके पिता श्रीकुमारदेव कुछ पारिवारिक असुविधाके कारण यहाँसे वाकला चन्द्रद्वीप चले गये थे।

नित्यानन्दपुर

हुगली जिलेमें सप्तग्रामके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीनित्यानन्द प्रभुने श्रीवसुधा एवं श्रीजाह्नवा देवीके साथ विवाह कर कुछ दिनों तक निवास किया था।

पंचकुटी

यह बाँकुड़ाके अन्तर्गत एक ग्राम है। श्रीनिवास आचार्यके वन-विष्णुपुरके निकटके इस स्थान पर पहुँचने पर इनकी ग्रन्थोंसे भरी हुई गाड़ीको डांकुओंने चुरा लिया था।

पश्चिमपाड़ा

यह तेलीया बुधुरीके पश्चिममें स्थित है। यहाँ श्रीगोविन्द कविराजका वासस्थान था। श्रीगोविन्द कविराज श्रीनित्यानन्द प्रभुजीकी शाखामें हैं। वे श्रीनिवास आचार्यके शिष्य एवं श्रीरामचन्द्र कविराजके कनिष्ठ सहोदर भ्राता थे। इनके पिताका नाम श्रीचिरंजीव सेन एवं पत्नीका नाम महामाया देवी था। पहले ये शाक्त थे, बादमें अपने भाई और माताकी कृपासे वैष्णव-धर्ममें दीक्षित हुए। विशेषकर अत्यन्त कठिन व्याधिग्रस्त होने पर अपने भाईके साथ श्रीश्रीनिवासाचार्यके पास उपस्थित हुए और दीक्षा ग्रहण की। दीक्षाके बाद ही व्याधिमुक्त होने पर उनका पहला पद रचित हुआ "भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन अभयचरणारविन्दरे।" वे देह-व्याधिके साथ ही भव-व्याधिसे भी मुक्त हो गये। तबसे इन्होंने बहुतसे भक्ति पदोंकी रचना की एवं सर्वत्र इनकी प्रसिद्धि हुई। श्रील जीवगोस्वामीने भी इनकी असाधारण काव्य प्रतिभासे मुग्ध होकर इनको 'कविराज' की उपाधि प्रदान की थी। श्रीवीरचन्द्रगोस्वामीने भी इनके काव्यकी प्रसंशा

की थी। इनका कृष्णरूपके लिए एक पद है–

अंजन गंजन जगजन रंजन, जलद पुंज जिनि वरणा। (क)
मुकलित मल्ली, मधुर मधु-माधुरी मालति मञ्जुलमाल ॥(ख)

कितना सुमधुर रूप माधुरीका वर्णन है-- और भी एक–

कुवलय कन्दल कुसुमकलेवर कालिम-कान्ति कलोल ।(ग)

इसमें कितना सुन्दर अनुप्रास अलंकार है।

पानीहाटी

यह चौबीस परगना जिलेमें गंगाके तटपर स्थित है। यहाँ श्रीरघुनाथदास गोस्वामीने श्रीनित्यानन्द प्रभुके आदेशसे चिड़वा-दहीका दण्ड महोत्सव किया था। गंगाघाट पर जिस वटवृक्षके नीचे श्रीनित्यानन्द प्रभुजी बैठे थे, वह वट-वृक्ष आज भी मौजूद है। पास ही मालती-माधवी कुञ्जके नीचे श्रीराघव पण्डितका समाज है। महाप्रभुजीके लिए राघवकी झाली और इनकी बहिन दमयन्तीकी सेवा-प्रवणताका श्रीचैतन्य-चरितामृतमें सुन्दर वर्णन है।

श्रीराघव पण्डित

ये श्रीमन्महाप्रभुजीके प्रधान परिकरोंमें-से एक हैं। व्रजलीलामें ये धनिष्ठा थे, इनके घरके निकट ही एक जम्बीर नीबूके वृक्षमें कदम्बके फूल खिलते थे, जिसकी माला गूथकर ये श्रीठाकुरजीकी सेवा करते थे। इनकी बहिन दमयन्ती बहुत दिनों तक बड़े परिश्रमसे श्रीमन्महाप्रभुजीके लिए तरह-तरहके सूखे एवं स्वादिष्ट खाद्य-पदार्थ प्रस्तुत करती थीं। रथयात्राके समय स्वयं श्रीराघव पण्डित उसे ले जाकर श्रीपुरीधाममें श्रीमन्महाप्रभुके समक्ष प्रस्तुत करते थे। गोविन्द सालभर तक प्रतिदिन उसमें से कुछ-कुछ श्रीमन्महाप्रभुको खिलाया करते थे। कभी-कभी ये स्वयं अपने हाथोंसे रसोई बनाकर श्रीमन्महाप्रभुको खिलाते थे। ये समस्त गौरभक्तोंके बड़े ही प्रिय थे।

पिछलदा

मेदिनीपुर जिलेमें तमलुक शहरसे १४ मील दूर नरघाट है, वहींसे हल्दी नदी पारकर निकट ही पिछलदा नामक छोटासा ग्राम है। श्रीचैतन्य महाप्रभुजी जिस समय प्रथम बार श्रीजगन्नाथ पुरीसे वृन्दावन जानेके लिए समुद्र पथसे जा रहे थे, उस समय वे पहले पिछलदा पहुँचे। यहाँसे, नौका द्वारा पानीहाटी आये थे। आजकल यहाँ श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति द्वारा स्थापित 'पादपीठ' पिछलदा गौड़ीय मठ है।

पुटिया

श्रीनिवास आचार्य प्रभुकी सन्तानों द्वारा प्रेरित वैष्णवकी कृपासे वहाँके राजा श्रीवीरेन्द्र नारायण वैष्णव-धर्ममें दीक्षित हुए थे।

यहींके किसी राजाकी राजकन्या श्रीशचीदेवी वृन्दावनमें श्रीगोविन्ददेवके पुजारी परम-वैष्णव हरिदास गोस्वामीसे दीक्षा ग्रहण कर श्रीवृन्दावनमें भजन करती थीं। श्रीगुरुदेवकी आज्ञासे वह कुछ वर्षों तक श्रीराधाकुण्डमें रहकर कठोर साधन-भजन करती रहीं। तत्पश्चात् इन्होंने श्रीजगन्नाथ पुरीमें श्रीसार्वभौम भट्टाचार्य भवनके खण्डहरोंमें कुटी बनाकर भजन किया। ये श्रीगुरुदेवकी आज्ञासे वहाँ पर श्रीमन्महाप्रभु और श्रीसार्वभौम भट्टाचार्यकी स्मृतिमें एक सुन्दर मन्दिर निर्माण कराना चाहती थीं। एक बार गंगा दशहराके दिन इनकी गंगास्नानकी इच्छा हुई। रातमें जगन्नाथजीके चरणोंमें-से कल-कल करती हुई गंगा निकलकर इनके आश्रम तक पहुँचीं। रातमें इन्होंने उसमें स्नान किया और धारामें प्रवाहित होकर श्रीमन्दिरमें श्रीजगन्नाथजीके श्रीचरणों तक पहुँच गयीं। प्रातः श्रीमन्दिरका कपाट खुलने पर पुजारियोंने श्रीशचीदेवीको देखा और इनको चोर समझकर कारागारमें बन्द कर दिया। जगन्नाथजीने राजा तथा प्रधान पुजारीको स्वप्नादेश देकर कहा- 'अत्यन्त आदरके साथ शचीदेदेवीको

उनके स्थान पर पहुँचाओ और तुमलोग उनसे दीक्षा लेकर उनकी अभिलाषानुसार वहाँ सुन्दर मन्दिर निर्माणकर सेवा-पूजाकी व्यवस्था करो।' शचीदेवीका यह चमत्कार देखकर सभी लोगोंको आश्चर्य हुआ और सभी इनके शिष्य हो गये। तबसे इनका नाम श्रीगंगा माता गोस्वामिनी हुआ। जयपुरके श्रीश्यामराय (श्रीविग्रह) अपने ब्राह्मण पुजारीको स्वप्न देकर स्वयं श्रीपुरीधाममें श्रीगंगामाताके पास ले जानेको कहा। ब्राह्मण श्रीश्यामरायको लेकर श्रीपुरीधाम पहुँचा। श्रीश्यामरायने स्वयं गंगामाता गोस्वामिनीकी सेवा ग्रहण की। महाराजाने श्रीगंगामाताकी आज्ञासे श्रीसार्वभौम भट्टाचार्यके खण्डहरको पुनः एक भव्य राज-प्रसाद जैसा बनाकर उसमें पूर्वकी स्मृतियाँ सुरक्षित कर दीं। आज भी श्रीश्यामराय यहाँ सेवित हो रहे हैं।

पूर्वस्थली

श्रीनवद्वीप धामके पश्चिममें पूर्वस्थली है। प्राचीन नाम शंकरपुर था।

फुलिया

नदीया जिलेके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीहरिदास ठाकुरका श्रीपाट है, पास ही गंगा नदी है। इसी जगह गुफामें हरिदास ठाकुर तीन लाख हरिनाम किया करते थे। श्रीचैतन्य महाप्रभुजी भी संन्यास लेनेके पश्चात् यहाँ पर आये थे।

माधाई तला

कटवामें महाप्रभुजीके मन्दिरसे एक मील दूर यह स्थान है। यहाँ पर जागाई-माधाई दोनों भाइयोंमें-से श्रीमाधाईकी समाधि है।

माधाई घाट

नवद्वीप मायापुरमें श्रीजगन्नाथ भवनके पास ही यह एक गंगा

का घाट है। महाप्रभुजीकी कृपा होने पर श्रीमाघाई स्वयं अपने हाथोंसे इस घाटकी सफाई करते थे।

जगाई-माधाई

इन दोनों भाइयोंका नवद्वीपके एक ब्राह्मण परिवारमें जन्म हुआ था। इनका नाम जगदानन्द भट्टाचार्य एवं माधवानन्द भट्टाचार्य था। कुसंगमें पड़कर ये मद्यपान करने लगे और धीरे-धीरे ये बड़े अत्याचारी हो गये। इनके डरके मारे बूढ़े, बच्चे, स्त्रियाँ आदि कोई भी इस घाट पर स्नानके लिए नहीं आते थे। एकबार श्रीनित्यानन्द प्रभु एवं श्रीहरिदास ठाकुरने नाम प्रचार करते हुए इनको देखा और इन्हें श्रीकृष्णनाम करनेके लिए कहा। इस बात पर ये दोनों बड़े उत्तेजित हो गये और मद्य-माण्डका टूटा हुआ टुकड़ा श्रीनित्यानन्द प्रभुके मस्तक पर दे मारा। फलस्वरूप वे रक्तसे लतपत हो गये, ऐसा सुनते ही घटना स्थल पर महाप्रभुजी अपने परिकरोंके साथ पधारे। उन्होंने अपने चक्रको आह्वान किया और तत्काल ही उनके हाथोंमें चक्र आ गया। ऐसा देखकर नित्यानन्द प्रभुजीने उनका वध न करनेके लिए श्रीमन्महाप्रभुजीसे प्रार्थना की। श्रीनित्यानन्द प्रभुजी द्वारा क्षमा दान करने पर श्रीमहा प्रभुजीने इनको क्षमा कर इन्हें कृष्णप्रेम दान कर दिया। वह कृष्ण-कृष्ण कहकर रोने लगे, इनका जीवन बदल गया और अब ये दोनों परम वैष्णव हो गये। माधाई प्रतिदिन घाटको साफ करता गंगा स्नानको जानेवाले भक्तोंकी चरणधूलि लेता और कृष्णनाम करता।

महेश

इसे श्रीरामपुर महेश भी कहते हैं। यहाँ श्रीमहाप्रभुजीके परिकर श्रीकमलाकर पिल्लाई और श्रीध्रुवानन्द ब्रह्मचारीका श्रीपाट है। श्रीकमलाकर पिल्लाईकी कन्या श्रीनारायणीदेवीका विवाह श्री

वीरचन्द्र प्रभुके साथ हुआ था। यहाँकी रथयात्रा प्रसिद्ध है।

मेखला

चट्टग्रामसे १२ मील उत्तरमें यहाँ श्रीगौर परिकर श्रीपुण्डरीक विद्यानिधिका श्रीपाट है। श्रीचैतन्य महाप्रभु इनको वृषभानु महाराज मानकर पिता सम्बोधन करते थे। राजकीय वैभवमें रहते हुए भी ये श्रीमद्भागवतका एक श्लोक सुनकर पलंगसे नीचे गिरकर हा कृष्ण ! हा कृष्ण ! कहते हुए रोने लगे। श्रीमन्महाप्रभुजीके परामर्शसे श्रीगदाधर पण्डितने इनसे दीक्षा ली थी। जगन्नाथजीको माड़युक्त नवीन वस्त्रधारण करते हुए देखकर इन्होंने संशय किया था कि ठाकुरजी अपवित्र वस्त्र कैसे पहनते हैं ? उसी रातको कृष्ण-बलदेवने थप्पड़ मारकर उनके दोनों गालोंको फुला दिया। दूसरे दिन गालों पर सूजन देखकर उसे जगन्नाथजीका दिया हुआ दण्ड मानकर आनन्दसे क्रन्दन करने लगे। ये श्रीमाधवेन्द्र पुरीके शिष्य थे। दिनमें कभी भी गंगा स्नानके लिए नहीं जाते थे। क्योंकि दिनमें लोग स्नान करते समय शरीरका मैल, कपड़े इत्यादि धोते तथा उसमें कुल्ला करते, ऐसा देखकर इनको बहुत दुःख होता था। इसलिए वे रातमें गंगाके तटपर जाकर गंगाको प्रणाम करते और आचमन कर लेते थे। श्रीगंगाजीमें कभी भी अपना पैर तक नहीं धोते थे।

यशोड़ा

नदीया जिलेमें चाकदहके निकट इस स्थान पर श्रीमन्महाप्रभुजी के परिकर श्रीजगदीशजीका श्रीपाट है। यह स्थान गंगाके तट पर बसा हुआ है। श्रीजगदीश पण्डित पुरीधामसे श्रीजगन्नाथजीके श्री विग्रहको स्वयं कन्धे पर उठाकर यहाँ लाये थे। उस समय एक वटवृक्षके नीचे विश्राम किया था। वह वटवृक्ष आज भी विद्यमान है।

याजीग्राम

वर्धमान जिलेके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीनिवास प्रभुजीका श्रीपाट है ।

श्रीनिवासाचार्य प्रभु

इनका आविर्भाव गंगाके तट पर श्रीचौखन्दी नामक ग्राममें एक ब्राह्मण वंशमें हुआ था । पिताका नाम श्रीचैतन्य था। बाल्य-कालमें व्याकरणादिका अध्ययन करने पर श्रीचैतन्य महाप्रभुजीकी महिमा सुनकर उनके भक्तोंकी नगरी श्रीखण्डमें श्रीरघुनन्दन आदिके दर्शन करके श्रीचैतन्य महाप्रभु एवं उनके परिकरोंके दर्शन करनेके लिए श्रीक्षेत्रकी यात्रा की, किन्तु रास्तेमें ही श्रीमहाप्रभुजीकी अप्रकट लीला आविष्कारका दुःखद्-संवाद सुनकर अचेत हो गये । कुछ दूर चलने पर श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामीकी अप्रकट होनेकी बात सुनकर मूर्च्छित हो गये । वहींसे ये गौड़देशकी ओर लौट गये । रास्तेमें श्रीनित्यानन्द प्रभुके अप्रकट होनेका समाचार सुनकर, वहाँसे किसी प्रकार नवद्वीप लौटे, पुनः वहाँसे श्रीखण्ड होते हुए वृन्दावन पहुँचे । वृन्दावनमें श्रीगोपाल भट्टके चरणोंमें वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण कर श्रीनरोत्तम और श्रीश्यामानन्दके साथ श्रीजीव गोस्वामीके निकट-श्रीमद्भागवत्, षट्संदर्भ एवं गोस्वामियोंके रचित श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु इत्यादि समस्त भक्ति ग्रन्थोंका अध्ययन किया । पुनः श्रीजीव गोस्वामी द्वारा दिये गये समस्त ग्रन्थोंको लेकर श्रीनरोत्तम और श्रीश्यामानन्द प्रभुके साथ बंगालमें उनके प्रचारके लिए लौट रहे थे। बंगालकी सीमामें वनविष्णुपुरके पास स्थानीय डकैतोंके सरदार राजा वीरहम्बीरने रत्नोंसे भरी गाड़ी समझकर उन ग्रंथोंको चुरा लिया। बादमें श्रीनिवासाचार्यकी भक्ति-प्रतिभासे राजा वीरहम्बीर बड़े प्रभावित हुए और उन ग्रन्थोंको लौटा दिया तथा इनसे वैष्णवी-दीक्षा ग्रहण की। श्री निवासाचार्य ग्रन्थोंको लेकर बंगदेश लौटे। वहाँ श्रीखण्डमें नरहरिठाकुरने

इनका विवाह करा दिया । वे पुनः वृन्दावन गये और दर्शनकर गौड़ देश लौटे और बंगालमें सर्वत्र ही शुद्धाभक्तिका प्रचार करने लगे ।

रामकेलि या कानाई नाटशाला

यह मालदह जिलेमें स्थित श्रीगौड़देशकी राजधानी थी । यहीं पर श्रीरूप-सनातनजी बादशाह हुसैनशाहके मंत्री थे । यह श्रीजीव गोस्वामीकी जन्म-भूमि भी है । यहाँ रामकेलिके उत्तरमें सनातनदीघि और इसके पश्चिम किनारे पर इनका वास-भवन था । यहाँ श्रीरूपगोस्वामी द्वारा निर्मित श्रीरूपसागर विराजमान है । इसके पूर्व दिशामें इनका भवन था । श्रीमन्महाप्रभुजी वृन्दावन जाते समय जिस स्थान पर बैठे थे आज भी वहाँ तमाल और केलि-कदम्बका वृक्ष है । पासमें ही श्रीश्यामकुण्ड और श्रीराधाकुण्ड विराजमान हैं। श्रीसनातन गोस्वामी द्वारा स्थापित श्रीमदनमोहनजीका भव्य मन्दिर आज भी दर्शनीय है । यहाँ श्रीललिता, विशाखा, इन्दुरेखा, सुदेवी एवं रंगदेवी आदि कुण्ड भी हैं । यह सभी कृष्णलीलाकी स्मृतियाँ श्रीरूप-सनातन गोस्वामियोंके द्वारा प्रकाशित की गयी थीं । जन-समुदायके साथ श्रीचैतन्य महाप्रभु श्रीवृन्दावन जानेके लिए जब यहाँ पधारे, तो श्रीलसनातन गोस्वामीने श्रीचैतन्य महाप्रभुसे कहा था कि वृन्दावन जाते समय इतने बड़े समुदायको साथ ले जाना उचित नहीं है । चूँकि वृन्दावनके विषयमें जो भाव हृदयमें हैं, वे भाव संकुचित हो जायेंगे । उनकी बात सुनकर महाप्रभुजी वहींसे पुनः जगन्नाथ पुरी लौट गये । अगले वर्ष झाड़ीखण्ड मार्गसे केवल श्रीबलभद्र भट्टाचार्य और एक ब्राह्मणको साथ लेकर वृन्दावन गये।

श्रीरूप-सनातन गोस्वामी

श्रीरूप और सनातन गोस्वामी दोनों ही श्रीमन्महाप्रभुजीके अन्तरंग लीला-परिकर हैं । पूर्वलीलामें श्रीसनातन गोस्वामी श्रीरति

या लवङ्ग मञ्जरी तथा रूपगोस्वामी श्रीरूप मञ्जरी हैं । श्रीचतुःसन भी श्रीसनातन गोस्वामीमें विद्यमान हैं । ये यजुर्वेदीय भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे । इनके पूर्वज दक्षिण भारतके कर्नाटक प्रदेशमें रहते थे । ये तीन भाई थे, छोटे भाईका नाम अनुपम था । ये बचपनसे बड़े कुशाग्र बुद्धिके थे । श्रीसनातनजीके बाल्यकालका नाम अमर एवं रूपगोस्वामीका नाम सन्तोष था । छोटी आयुमें ही श्रीनवद्वीपके अध्यापक शिरोमणि विद्यावाचस्पतिके निकट समस्त शास्त्रोंका अध्ययन किया था । श्रीमद्भागवतके प्रति इनकी विशेष रुचि थी । युवावस्थामें ही ये तीनों भाई तत्कालीन गौड़ प्रदेशके बादशाह-हुसैनशाहके विशिष्ट राज-कर्मचारी बन गये । बादशाहने श्रीसनातनको प्रधानमन्त्री एवं श्रीरूपगोस्वामीको प्राइवेट-सेक्रेटरीके रूपमें नियुक्त कर इनको क्रमशः श्रीसाकर मल्लिक एवं दवीरखासकी शाही उपाधियोंसे विभूषित किया था । अत्यन्त दक्षताके साथ ये राज्यका सारा काम-काज संभालते थे । इसलिए बादशाह इनपर सम्पूर्ण रूपसे निर्भर रहता था । श्रीमन्महाप्रभुजी वृन्दावन जानेके बहाने जब इस ग्राम (रामकेलि) में पधारे थे, तब रूप-सनातन दोनों भाईयोंने राजवेशको छोड़कर दीन-हीन वेशमें उनके श्रीचरण-कमलोंका दर्शनकर अपने जीवनको कृतार्थ किया । महाप्रभुको दर्शनकर इनका पूर्वसिद्ध विषय-वैराग्य और प्रबल भगवद्-अनुराग अत्यधिक उद्वेलित हो उठा । उनका मन राज्यकार्यसे सम्पूर्ण विरक्त हो गया । अब उनका समय श्रीमद्भागवतके अनुशीलन एवं भगवद् आराधनामें बीतने लगा । कुछ ही दिनों बाद उनको विदित हुआ कि श्रीचैतन्य महाप्रभुजी वृन्दावन पहुँच गये हैं, तब श्रीरूप गोस्वामीने अपने छोटे भाई अनुपमके साथ राज्यकार्य छोड़कर वृन्दावनकी यात्रा की । उधर महाप्रभुजी वृन्दावनसे प्रयाग होते हुए पुरी लौट रहे थे, प्रयागमें दोनोंकी भेंट हुई, महाप्रभुजीने प्रयागमें दस दिन तक अवस्थान कर रूपगोस्वामीको भक्तिरस-तत्त्व एवं प्रेम-तत्त्वकी शिक्षा

दी तथा उनके हृदयमें शक्तिका संचारकर वृन्दावनके लुप्ततीर्थोंका उद्धार तथा भक्ति शास्त्रोंका प्रणयन करनेके लिए भेजा ।

इसके पश्चात् श्रीमन्महाप्रभु काशी पधारे । उधर श्रीसनातन राज्यकार्यसे उदासीन होकर संसारका त्याग करना ही चाह रहे थे, इसी बीच श्रीरूपगोस्वामीका रहस्यपूर्ण संदेशा पढ़कर बादशाहके कारागारसे निकलकर काशी पहुँचे । श्रीमहाप्रभुजीसे इनकी वहीं पर भेंट हुई । महाप्रभुजीने कुछ दिनों तक वहाँ रहकर उनको जीवतत्त्व, भगवद्तत्त्व, मायातत्त्व तथा सम्बन्ध तत्त्व, भक्ति रूप अभिधेय तत्त्व, और कृष्ण प्रेम रूप प्रयोजन तत्त्वकी विशद् रूपमें शिक्षा दी तथा इनके हृदयमें शक्ति संचारित कर इन्हें वृन्दावन भेजा । इनको भी महाप्रभुजीने वृन्दावनके लुप्त तीर्थोंको पुनः प्रकाशित करने, भक्ति शास्त्रोंका प्रणयन, वृन्दावनके प्राचीन विग्रहोंकी सेवाका प्रकाश करनेके लिए आदेश दिया । महाप्रभुजीके निर्देशानुसार इन्होंने वृन्दावनके लुप्ततीर्थोंका उद्धार किया । श्रीमदनमोहन देवकी सेवाको प्रकाशित किया । हरिभक्तिविलास, श्रीवृहत्भागवतामृतम्, दशम स्कन्ध श्रीमद्भागवतकी टीका लिखकर श्रीमन्महाप्रभुजीकी मनोऽभीष्ट सेवा की ।

उधर श्रील रूपगोस्वामीने श्रीमहाप्रभुजीकी मनोऽभीष्ट सेवाके लिए श्रीराधागोविन्द देवकी सेवा प्रकट की । वृन्दावनके लुप्त तीर्थोंका प्रकाश किया । विशेषतः श्रीभक्तिरसामृतसिन्धु, श्रीउज्ज्वल-नीलमणि, श्रीललितमाधव, श्रीविदग्धमाधव, लघुभागवतामृतम्, स्तवमाला, उद्धव-संदेश, हंसदूत, दानकेलिकौमुदी, राधाकृष्ण-गणोद्देश-दीपिका आदि अमूल्य भक्ति ग्रन्थोंकी रचना की । श्रीगौड़ीय-वैष्णव सम्प्रदाय इन दोनों महापुरुषोंका चिरऋणी रहेगा ।

अनुपम

ये रूप-सनातनके छोटे भाई थे । ये भी हुसैनशाह बादशाहके

एक उच्च राज्याधिकारी थे । ये श्रीरूपगोस्वामीके साथ ही संसारका सर्वतोभावेन परित्याग कर श्रीवृन्दावन आये थे । श्रीरूपगोस्वामीके साथ श्रीमन्महाप्रभुजीका दर्शनके लिए पुरी धाममें गये थे । ये श्रीरामचन्दजीके उपासक थे । रूपगोस्वामीने इनको श्रीकृष्ण-तत्त्वकी माधुरीका श्रवण कराकर कृष्ण भजनके लिए उपदेश दिया । इन्होंने कृष्ण भजन करना स्वीकार भी कर लिया, किन्तु रात भर रोते रहे और सारी रात बड़ी व्याकुलताके साथ काटी । दूसरे दिन प्रातःकाल श्रीरूपगोस्वामीसे कहा, "मैं श्रीरामचन्द्रजीका भजन छोड़कर जीवित नहीं रह सकता । इधर आपके आदेशका उल्लंघन भी नहीं कर सकता । ऐसी स्थितिमें मेरा मरना ही श्रेयस्कर है ।" रूप गोस्वामीने प्रसन्न होकर निष्ठाके साथ श्रीराम-भजन करनेके लिए परामर्श दिया । रास्तेमें ही उनका परलोक गमन हो गया । प्रसिद्ध श्रीजीवगोस्वामी इन्हींके पुत्र थे ।

जीव गोस्वामी

ये श्रीरूप-सनातनके छोटे भाई वल्लभ (अनुपम) के पुत्र थे। जब ये छोटेसे बालक थे, तब रामकेलिग्राममें अपने दोनों ताऊओंके साथ इन्होंने श्रीमन्महाप्रभुजीका दर्शन किया था । श्रीरूपगोस्वामीने बालकको महाप्रभुजीके चरणोंमें लिटा दिया । महाप्रभुजीने इनके मस्तक पर अपने कर-कमलोंको अर्पित किया था । ये व्याकरण एवं अन्यान्य शास्त्रोंका छोटी आयुमें ही अध्ययन कर श्रीनवद्वीप धाममें पधारे । श्रीनित्यानन्द प्रभुजीने इनको श्रीनवद्वीप धामकी परिक्रमा तथा श्रीविष्णुप्रियाके दर्शन कराकर श्रीरूप-सनातनके पास श्रीवृन्दावन धाम भेज दिया । ये काशीमें कुछ दिन ठहरकर श्रीसार्वभौम भट्टाचार्यके शिष्य श्रीमधुसूदन वाचस्पतिके पास वेदान्तका विशेषतः श्रीमन्महाप्रभुने सार्वभौम भट्टाचार्यको जिस वेदान्तकी शिक्षा दी थी, उसका अध्ययन कर श्रीरूपगोस्वामीके श्रीचरणोंमें उपस्थित

हुए । श्रीरूप-सनातन गोस्वामीने इन्हें समस्त भक्ति शास्त्रोंकी शिक्षा दी । श्रीरूपगोस्वामीने इन्हें दीक्षा देकर स्वलिखित ग्रन्थोंका अध्ययन कराया ।

जीवगोस्वामी तत्कालीन विश्वके सर्वश्रेष्ठ विद्वान् थे । श्रीव्रज-मण्डल, गौड़मण्डल एवं क्षेत्रमण्डल तीनों धामोंके वैष्णवगण इनके अनुशासनमें रहते थे । इन्होंने श्रीनरोत्तम ठाकुर, श्रीनिवासाचार्य एवं श्रीश्यामानन्द प्रभुको समस्त भक्तिशास्त्रोंका अध्ययन कराया था । इनके षट्संन्दर्भ, सर्वसंवादिनी, हरिनामामृत व्याकरण, गोपालचम्पू, माधव-महोत्सव, क्रम-सन्दर्भ, रसामृत-टीका, उज्ज्वल टीका एवं ब्रह्म-संहिताकी टीका आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं ।

वक्रेश्वर

वीरभूम जिलेमें सिउड़ीसे १३ मील दक्षिण-पश्चिममें अवस्थित है । इसे गुप्तकाशी भी कहते हैं । अष्टवक्र ऋषिने यहाँ तपस्या की थी । उत्तरमें वक्रेश्वर नद एवं पापहरा नदी है । मन्दिरके प्रांगणमें श्वेतगंगा तथा वक्रेश्वर नामक एक शिवलिंग भी है । यहाँ श्रीनित्यानन्द प्रभुभी पधारे थे ।

वनविष्णुपुर

बाकुड़ा जिलेके अन्तर्गत राजा वीरहम्वीरकी यह राजधानी थी। राजा वीरहम्बीरने श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तम ठाकुर एवं श्रीश्यामानन्द प्रभुके साथ गौड़ीय ग्रन्थोंसे भरी हुई बैलगाड़ीको रत्नोंसे भरी गाड़ी समझकर रातमें उसे चुरा लिया था। बादमें श्रीनिवासाचार्यसे राजसभामें श्रीमद्भागवतका परम मधुर प्रवचन सुनकर राजाने उनके ग्रन्थ लौटा दिये तथा उनसे दीक्षा लेकर परम वैष्णव बन गये । जीव गोस्वामीने राजाका नाम चैतन्यदास रखा था । राजा हम्बीरके समय यह स्थान हर दृष्टिसे समृद्ध था । यहाँ श्रीश्यामरायका मन्दिर, कालाचन्द्र मुरली मनोहर, मदनगोपाल एवं इन सबसे प्रसिद्ध मदनमोहनजीका मन्दिर

है । एक बार शत्रुओंके आक्रमणके समय श्रीमदनमोहनजीने समस्त आक्रमणकारियोंको दलमादल नामक कमानमें अग्नि प्रज्वलित कर भगा दिया । अब श्रीमदनमोहनजी परलोकगत श्रीगोकुलमित्रके कलकत्तेके राजभवनमें विराजमान हैं । कहा जाता है कि वहाँके किसी राजाने अर्थाभावके कारण मदनमोहनजीको गिरवी रख दिया था । तबसे ये कलकत्तेके बागबाजारमें ही विराजमान हैं ।

वराहनगर

यहाँ श्रीभागवताचार्यका श्रीपाट है । इनकी समाधि भी यहीं है । यहाँ पर श्रीचैतन्य महाप्रभु पधारे थे और श्रीभागवताचार्य द्वारा लिखित श्रीमद्भागवतका सुसिद्धान्त पूर्ण पद्यानुवाद 'श्रीकृष्णप्रेम तरंगिनी' को देखकर बड़े प्रसन्न हुए ।

वल्लभपुर

श्रीमन्महाप्रभुजीके परिकर काशीश्वर पण्डित एवं श्रीरुद्र पण्डितका यहाँ पर श्रीपाट है । इनके द्वारा सेवित श्रीराधावल्लभजी आज भी सेवित हो रहे हैं । श्रीकाशीश्वर पण्डित महाप्रभुजीके भक्त थे, ये महाप्रभुजीकी आज्ञासे वृन्दावनमें गौर-गोविन्द विग्रहकी प्रतिष्ठाकर उनकी सेवा करते थे । ये व्रजकी 'केलिमञ्जरी' हैं । श्रीरूप-सनातन गोस्वामीसे इनकी बड़ी प्रीति थी । ये पहले पुरीधाममें चैतन्य महाप्रभुके निकट रहते थे, महाप्रभुजीको छोड़ना नहीं चाहते थे । महाप्रभुजीने अपना एक श्रीविग्रह देकर इनको वृन्दावन जानेकी आज्ञा दी । तब ये वृन्दावन पधारे । पं० रुद्र पूर्वलीलामें वरुथक नामक उपगोपाल थे ।

वाकला चन्द्रद्वीप

श्रीसनातन गोस्वामीके पिता श्रीकुमारदेवने नैहाटि ग्राम छोड़कर यहीं पर वास किया था । यहीं पर श्रीसनातन (अमर), श्रीरूप

(सन्तोष) और बल्लभ (अनुपम) का जन्म हुआ था । श्रीचन्द्रशेखरका भी यहाँ पर श्रीपाट है ।

श्रीचन्द्रशेखर आचार्य

इनका नाम आचार्य रत्न भी है । महाप्रभुने इनके भवनमें देवीभावसे नृत्य किया था । ये महाप्रभुके मौसा लगते थे । श्रीहट्टमें इनका जन्म हुआ था, बादमें ये नवद्वीप धाममें बस गये थे । ये श्रीमन्महाप्रभुजीके संकीर्त्तनमें सम्मिलित होते थे । श्रीचैतन्य महाप्रभुके संन्यासके समय उनके साथ ही कटवामें उपस्थित थे, इन्होंने ही महाप्रभुजीके संन्यास लेनेका संवाद शान्तिपुर एवं नवद्वीपमें दिया था ।

बागना पाड़ा

कालनासे नवद्वीपकी ओर जाने पर यह पहला रेलवे स्टेशन है । श्रीबंशीवदन एवं रामाई ठाकुरका यहाँ पर श्रीपाट है । श्री बंशीवदनके पुत्र ही ये श्रीरामाई ठाकुर या श्रीरामचन्द्र गोस्वामी थे।

(विस्तृत वर्णनके लिए 'दाईहाट' में देखें)

बालसाग्राम (राधानगर)

रामपुर हाटसे ५ मील पूर्वमें अवस्थित इस स्थान पर मीनकेतन रामदासका श्रीपाट है ।

मीनकेतन रामदास

ये श्रीनित्यानन्द प्रभुकी शाखामें हैं। ये कृष्णदास कविराजके घरपर अहोरात्र श्रीनाम-संकीर्तनका निमंत्रण पाकर वहाँ पधारे । उपस्थित समस्त वैष्णवोंने इनकी वन्दना की । परन्तु वहाँके पुजारी गुणार्णव मिश्रने न तो इनकी अभ्यर्थना की और न हीं उनके साथ सम्भाषण किया । इससे ये बड़े असन्तुष्ट होकर बोले—यह द्वितीय

लोमहर्षण सूत है, (बलदेव प्रभुजीकी अभ्यर्थना न करने पर जिसका सिर काट दिया गया था) यहीं पर श्रीकृष्णदास कविराजके बड़े भाई द्वारा नित्यानन्द प्रभुके प्रति कुछ अपमान सूचक शब्द तथा अभिराम गोस्वामीका निरादर किया गया था । इन्होंने श्रीकविराजके भाईको इस कृत्यके लिए डाँटा भी था । ये बड़े प्रेमी और सिद्ध भक्त थे ।

बुढ़न

वर्तमान बंगला देशके खुलना जिलेके सातखीरा सबडिवीजनमें यह बुढ़न ग्राम है । किन्तु यह ग्राम पहले अविभक्त बंगालके यशोहर जिलेमें पड़ता था । बेनापोलसे ३ कोस उत्तरमें यह स्थित है । यहाँ श्रीहरिदास ठाकुरकी जन्म-भूमि है । बादमें ये शान्तिपुरके निकट फुलिया ग्राममें भजन करते थे तथा अद्वैताचार्यके पास आते जाते थे ।

बुधुई पाड़ा

श्रीनिवासाचार्यकी ज्येष्ठ कन्या हेमलताका विवाह इसी ग्रामके श्रीरामकिशन चट्टराजके पुत्र श्रीगोपीजन वल्लभके साथ हुआ था। हेमलता देवीके शिष्य यदुनन्दन दास भी यहीं रहा करते थे । इन्होंने बहुतसे वैष्णव-ग्रन्थोंका भाषानुवाद किया है । बुधुई पाड़ा अब गंगाके गर्भमें लीन हो गया है । वहाँके लोग नैयालिस पाड़ामें स्थानान्तरित हो गये हैं ।

बुधुरी

इसको तेलिया बुधुरी भी कहते हैं । यहाँ पर श्रीरामचन्द्र कविराज एवं गोविन्द कविराजका श्रीपाट है ।

बेनापोल

वर्तमान बंगला देशके यशोहर जिलेमें वनग्राम स्टेशनके निकट

ही बेनापोल है, यहीं पर श्रीहरिदास ठाकुर तीन लाख हरिनाम जप करते थे ।

श्रीहरिदास ठाकुर

रामचन्द्र खान नामक एक दुष्ट एवं ईर्ष्यालु जमीदारने लक्षहीरा नामक एक वेश्या भेजकर इनको भजनच्युत करनेकी चेष्टा की, किन्तु तीन रात तक इनके मुखसे शुद्ध श्रीहरिनाम सुनकर उसका हृदय निर्मल हो गया और वह रोती-रोती इनके चरणोंमें गिरकर क्षमा माँगने लगी । हरिदास ठाकुरने उसको क्षमा कर दिया, उसने अपना घर-वार, समस्त सम्पत्ति, इत्यादि सबकुछ दान कर दिया और दीन-हीन निष्किंचन होकर भगवत्-भजन करनेकी दृढ़ अभिलाषा व्यक्त की । हरिदास ठाकुरने उसे वैष्णवी-दीक्षा दी । वे गंगा तट पर स्थित अपने आश्रममें ही उसे भजन करनेका आदेश देकर स्वयं वहाँसे चले गये । कुछ दिनोंमें ही वह परम तपस्वी भजनानन्दी बन गयी । बहुत दूर-दूरसे सज्जन और साधु-महात्मा यहाँ इसके दर्शनके लिए आने लगे ।

मुसलमानोंने श्रीहरिदास ठाकुरको हरिनाम छुड़ानेके लिए कोड़े मारते हुए एक-एक करके बाइस बाजारोंमें घुमाया और इनके प्राण लेनेकी चेष्टा की । इनको निर्जीव समझकर मुसलमानोंने गंगा नदीमें फेंक दिया । किन्तु गंगाजलके स्पर्शसे पूर्ववत् शरीर पाकर हरिनाम करते हुए पुनः अपने आश्रम पर पहुँचे । इससे मुसलमान शासकोंको बड़ा आश्चर्य हुआ । फिर हरिदास ठाकुरको जिन्दा पीर समझकर हरिनाम करनेकी अनुमति प्रदान कर दी ।

ये हिरण्य एवं गोवर्धनके राज-दरवारमें आते जाते थे । गोवर्धनके पुत्र श्रीरघुनाथ दासको ये बहुत स्नेह करते थे । बालक रघुनाथ पर इनके संगका बहुत प्रभाव पड़ा । एक दिन हिरण्य-गोवर्धनकी राजसभामें श्रीभगवन्नामकी महिमाके सम्बन्धमें दो

विरोधी दलोंमें विवाद चल रहा था। एक कहता था कि हरिनामसे मुक्ति होती है और दूसरा दल कहता था कि हरिनामसे मुक्ति नहीं हो सकती। इस विवादने बहुत जोर पकड़ लिया। इसी बीच श्रीहरिदास ठाकुर वहाँ पधारे। उपस्थित लोगोंने श्रीहरिदास ठाकुरका इस विषयमें मन्तव्य जानना चाहा। हरिदास ठाकुरने सीधे-सरल शब्दोंमें इसका उत्तर दिया। नामाभाससे ही अवाञ्छित रूपसे मुक्ति मिल जाती है। शुद्ध कृष्णनामसे कृष्णप्रेमकी प्राप्ति होती है। इस पर एक ब्राह्मण क्रोधित होकर श्रीहरिदास ठाकुरसे कहने लगा– 'यदि हरिनामसे मुक्ति न मिले तो तुम्हारी नाक गल जाये अन्यथा मेरी नाक गल जाये।' सभी लोग हाहाकार कर उठे। श्रीहरिदास दुःखित होकर सभासे चले गये। राजसभासे उस ब्राह्मणको भी निकाल दिया गया। आश्चर्यकी बात कि दो-एक दिनमें ही उस अपराधी ब्राह्मणकी नाक कुष्ठ-व्याधिसे गल गयी। इस प्रकार हरिदास ठाकुरके जीवन-चरित्रमें बहुतसे चमत्कार देखे जाते हैं। इन्हें श्रीब्रह्माजी एवं श्रीप्रह्लादजीका सीम्मलित अवतार भी माना जाता है। अन्तिम जीवनमें ये श्रीचैतन्य महाप्रभुके सन्निकट पुरी पहुँचे। महाप्रभुजीने इनको पास ही सिद्ध वकुलमें एक कुटी बनवाकर भजन करनेका एक स्थान दे दिया। श्रीरूप-सनातन गोस्वामी जगन्नाथपुरीमें इन्हींके समीप रहते थे। इनके अप्रकट होनेके समय श्रीमन्महाप्रभुजी अपने परिकरोंके सहित वहाँ पधारे। अपने हाथोंसे इनकी समाधि दी और इनका विरहोत्सव मनाया था।

ब्रजराजपुर

बाँकुड़ा जिलेके अन्तर्गत इस स्थान पर श्रीदास गदाधरका श्रीपाट है। ये नित्यानन्द प्रभुजीके परिकर थे। ये पहले गंगाके किनारे 'एड़िया दह' में रहते थे बादमें महाप्रभुके निकट पुरीधाममें रहने लगे। जब महाप्रभुजीने नित्यानन्द प्रभुको प्रेम प्रचारके लिए

बंगाल भेजा, उस समय दास गदाधरको भी इन्हींके साथ भेजा था। ये बड़े तेजस्वी एवं स्पष्ट वक्ता थे। एक दिन इन्होंने अपने गाँवके मुसलमान काजीको हरिनाम करनेका आदेश दिया। गदाधरदासकी कृपासे काजी वैष्णव बन गया। नवद्वीपमें ये शचीमाता व विष्णुप्रिया देवीकी देखभाल करते थे। अब भी उनका देवालय, भवन और उनकी समाधि एड़ियामें वर्तमान है।

शंखनगर

सप्तग्रामके सातों गाँवोंमें-से यह एक है। सरस्वती नदीके किनारे वर्तमान मगरार नामक ग्रामके पास श्रील रघुनाथदासके चाचा कालिदासका श्रीपाट है। ये बहुत दूर-दूरके प्रसिद्ध वैष्णवोंको खोज-खोजकर उन्हें फल या मिठाई इत्यादि अर्पित करते थे और उनसे कुछ हरिकथा सुनते थे। जब वे वैष्णव श्रीठाकुरजीको भोग लगाकर स्वयं खा लेते और छिलका गुठली-पत्ते-दौने फेंक देते तब ये छिपकर उन्हें खाते अथवा चाट लेते तथा आनन्दसे नाचने लगते।

एक बार एक किसी दूरस्थ गाँवमें पहुँचे। संन्ध्याका समय था, वे झड़ूठाकुर नामक एक शूद्र कुलमें आविर्भूत भक्तको पके हुए कुछ मीठे आम भेंटकर उनसे हरिकथा सुनने लगे। कुछ रात बीतने पर उनसे विदा लेकर कहीं पासमें ही छिपकर बैठ गये। झड़ूठाकुरकी पत्नीने कुछ आमोंको धोकर ठाकुरजीका भोग लगाया और अपने पतिको खानेके लिए दिये, झड़ूठाकुरके खानेके बाद पुनः उन आमोंको उनकी पत्नीने चूसा और घरके बाहर कूड़ेमें फेंक दिया। कालिदासजी इसी अवसरकी तलाशमें थे, झट कूड़ेसे उठाकर उनको चाटने लगे। श्रीचैतन्य महाप्रभुजी इनके इस गुणसे बहुत प्रसन्न हुए। इसीलिए इन्होंने पुरीके सिंह दरवाजे पर जहाँ प्रतिदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु पैर धोकर मन्दिरमें प्रवेश करते थे, उस

चरणामृतका एकदिन पान किया, चैतन्य महाप्रभुने उनसे कुछ भी नहीं कहा, जबकि दूसरोंको ऐसा करनेके लिए पूर्णरूपेण निषेध करते थे। कालिदासकी वैष्णव-सेवासे प्रसन्न होनेके कारण इनको यह सौभाग्य प्रदान किया था।

शान्तिपुर

श्रीअद्वैताचार्यका यहाँ श्रीपाट है। इसके अतिरिक्त श्रीहर्ष एवं श्रीगोपाल आचार्यका भी श्रीपाट है। यहाँ अब भी श्रीअद्वैताचार्यकी नृसिंह शिला और उनके द्वारा पूजित श्रीमदनगोपालकी विग्रह विराजमान है। यह गंगाके तट पर स्थित है। यहाँ गौर-नित्यानन्द प्रभुजी अद्वैताचार्यसे मिलने आते थे।

श्रीअद्वैताचार्य

ये पञ्चतत्त्वमें-से एक हैं। श्रीमाधवेन्द्र पुरीके शिष्य थे तथा पूर्वलीलामें देवादि देव महादेव हैं। श्रीहट्ट लाउड़ ग्राममें १३५५ शकाब्दमें माघ महीनेकी शुक्ला सप्तमीको वारेन्द्र ब्राह्मण वंशमें अवतीर्ण हुए थे। इनके पिताका नाम कुबेर पण्डित तथा माताका नाम नाभा देवी था। इनका पूर्व नाम कमलाक्ष वेद पञ्चानन था। इनकी पत्नियोंका नाम श्रीसीतादेवी तथा श्रीदेवी था। सीतादेवीके गर्भसे अच्युतानन्द और पांच पुत्र हुए थे। श्रीदेवीके गर्भसे श्यामदास ने जन्म ग्रहण किया था। इनकी आयु १२५ वर्षकी थी। ये श्रीमन्महाप्रभुजीको जगत्‌में श्रीकृष्णरूपमें प्रकाशित करनेके लिए इनकी पूजा करना चाहते थे, किन्तु महाप्रभु इनकी पूजा स्वीकार नहीं की। बल्कि गुरु-बुद्धिसे इनकी ही पूजा करते थे। इससे आचार्य दुःखी होकर शान्तिपुर लौट आये। वहाँ वे अद्वैत-वादियोंके भावानुसार गीताकी व्याख्या करने लगे। श्रीअद्वैताचार्यके मुखसे मायावादी व्याख्या सुनकर भरी सभामें वृद्ध अद्वैताचार्यजीको जमीन पर गिरा दिया और घूसोंसे मारने लगे। अद्वैताचार्य आनन्दसे उछलने-कूदने

लगे। सीतादेवी (अद्वैताचार्यकी पत्नी) ने जैसे-तैसे इनको छुड़ाया। अद्वैताचार्यजी बोले-- 'अब आपकी चोरी पकड़ी गयी।' महाप्रभुजी बहुत लज्जित हुए। अद्वैताचार्यजी महाविष्णुजीके अवतार हैं। श्री शालिग्रामको तुलसी-गंगाजल अर्पितकर स्वयं ब्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्णको राधा-द्युति-सुवलित श्रीगौरांग रूपमें आविर्भूत कराया था। इन्होंने महाप्रभुजीकी समस्त लीलाओंमें महत्वपूर्ण योगदान किया था। ये प्रतिवर्ष रथयात्राके समय श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके दर्शन एवं संग पानेके लिए श्रीजगन्नाथपुरी जाया करते थे। इन्होंने भगवद्-भक्ति-रहित पुत्रोंका परित्याग कर दिया था। केवल सबसे छोटे पुत्र 'अच्युत' को ही एकान्तिक गौरभक्त होनेके कारण एकमात्र पुत्र माना था। श्रीपाद नित्यानन्द प्रभुसे इनका गहरा सख्य-भाव था। ये समस्त शास्त्रोंके ज्ञाता एवं परमभक्त थे।

एकबार शचीमाताने इनको अद्वैताचार्यके बदले द्वैताचार्य कहा था अर्थात् पुत्रको मातासे अगल कर संन्यासी बनाकर कहीं अन्यत्र भेज दिया। इस पर महाप्रभुजी असंतुष्ट हुए और अपनी माताको कृष्णप्रेम नहीं दिया, उपस्थित भक्तोंने महाप्रभुजीसे निवेदन किया कि अपने समस्त भक्तोंको तो प्रेम प्रदान किया है, लेकिन माताजीको क्यों प्रदान नहीं करते ? इस पर महाप्रभुजीने बिगड़कर कहा कि वे अद्वैताचार्यजीके चरणोंमें अपराधी हैं। अतः श्रीशचीदेवीने शान्तिपुर जाकर अद्वैताचार्यसे क्षमा माँगी, तब श्रीअद्वैताचार्यके कहने पर माताजीको प्रेम दिया। ये जाति-पांतिसे ऊपर उठकर किसी भी कुलमें उत्पन्न वैष्णव-मात्रका आदर करते थे। ये भारतके तीर्थोंमें घूमते हुए श्रीधाम वृन्दावनके द्वादश वनोंमें भ्रमणकर मिथिला दर्शनके लिए पधारे, एक दिव्यरूपधारी वृद्ध ब्राह्मण विद्यापतिजीको एकवृक्षकी जड़ पर सिर रखकर रोते रोते निम्न पद गाते हुए देखकर ये बड़े आश्चर्य चकित हुए।

तातल सैकते वारि विन्दुसम, सुत-मित रमणी समाजे।

निधुवने रमणी रसरंगे मातलुँ तोहे भजव कोन बेला ॥
कत चतुरानन मरि-मरि जावत नातुया आदि अवसाना ॥

यह पद सुनते ही उनसे पूछा-आप महापुरुष कौन है ? परिचय पाकर दोनों गलेसे लग गये । सुनते हैं कि बंगलाके प्रसिद्ध कृष्ण-पदकर्त्ता श्रीचण्डीदाससे भी इनका साक्षात्कार हुआ था ।

हरिसे अभेद होनेसे इनको 'अद्वैत' तथा भक्ति तत्त्वके आचार्य होनेसे इनको 'अद्वैताचार्य' कहा जाता है । इन्हींकी टोलमें श्रीविश्व-रूप (निमाइकि बड़े भाई) पढ़ते थे ।

शीतल ग्राम

पूर्वनाम सिद्धल ग्राम था । वर्धमान कटवा रेल लाइन पर कैचर स्टेशनसे एक मील उत्तर पूर्वमें इस स्थान पर द्वादश गोपालोंमें-से एक श्रीधनञ्जय पण्डितका श्रीपाट है । ये पूर्वलीलाके 'वसुदाम' थे । इनका जन्म चट्टग्रामके पाड़ग्राममें हुआ था । इनके पिता श्रीपति बन्धोपाध्याय तथा माता कालिन्दी देवी और पत्नी हरिप्रिया थी । इन्होंने महाप्रभुको अपना सर्वस्व दानकर खाली पात्र ग्रहण किया था । वैष्णव धर्मके प्रचार करनेके लिए अनेकानेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए अन्तमें उक्त शीतल ग्राममें श्रीश्रीगौरनिताई तथा श्रीगोपीनाथ विग्रहकी स्थापना की ।

श्रीखण्ड

वर्धमान कटवा रेलवे श्रीखण्ड स्टेशनसे एक मील दूर श्रीखण्ड ग्राम है । श्रीनरहरि ठाकुरका यहाँ पर श्रीपाट है । इनके अतिरिक्त-मुकुन्द ठाकुर, श्रीरघुनन्दन, श्रीचिरंजीव, सुलोचन, दामोदर कविराज, रामचन्द्रकविराज, गोविन्द कविराज, बलरामदास, रतिकान्त ठाकुर, रामगोपाल दास, पीताम्बरदास, शचीनन्दनदास, जगदानन्द इत्यादि प्राचीन प्रसिद्ध-प्रसिद्ध वैष्णवोंका यह वासस्थान है । यहीं प्रसिद्ध

दर्शनीय स्थान हैं– श्रीनरहरि सरकारका भवन एवं आसन, बड़डांगा की भजन-स्थली, श्रीगोपीनाथ, श्रीगौरांग श्रीरघुनन्दन पुत्र कन्हाई ठाकुर द्वारा स्थापित विष्णुप्रिया, श्यामराय और मदनगोपालके मंदिर आदि ।

श्रीनरहरि सरकार ठाकुर

पूर्वलीलाकी प्राणसखी श्रीमधुमति हैं । १४०५ शकाब्दमें इनका आविर्भाव हुआ था । पिताका नाम नारायण देव, माताका नाम गुइदेवी एवं ज्येष्ठ भ्राता मुकुन्द ठाकुर थे । मुकुन्द ठाकुरके पुत्र प्रसिद्ध रघुनन्दन ठाकुर हैं । नरहरि ठाकुर प्रसिद्ध सुपण्डित, कवि और रसिक वैष्णव थे । श्रीमहाप्रभुजीसे मिलनेके पूर्व ही संस्कृत और वंगभाषामें श्रीराधागोविन्द लीला विषयक पदावलियोंकी रचनायें की थीं । बादमें नरहरि ठाकुर और गदाधर पण्डित निरन्तर महाप्रभुके साथ रहकर प्रभुकी सेवा करते थे । ये महाप्रभुकी सेवा चमर-बीजन द्वारा करते थे । इनके रचित ग्रन्थ–भक्तिचन्द्रिका पटल, श्रीकृष्ण भजनामृतम, श्रीचैतन्य सहस्रनाम, श्रीशचीनन्दनाष्टक, श्रीराधाष्टक हैं। इसके अतिरिक्त इनकी बहुतसी अमृतके समान मधुर पदावलियाँ हैं। इनके द्वारा स्थापित श्रीगौरांग विग्रह आज भी विराजमान है । नरहरिके बड़ेभाई मुकुन्द ठाकुरके पुत्र श्रीरघुनन्दनसे ही इनकी वंश परम्परा चल रही है । किसी समय श्रीगौर-नित्यानन्द प्रभुने श्रीखण्डमें उपस्थित होकर श्रीनरहरि ठाकुरसे मधुपान करानेके लिए कहा, नरहरि ठाकुरने निकटके एक सरोवरके जलको अपने प्रभावसे मधुके रूपमें बदलकर उनकी पिपासा दूर की । आज भी उस सरोवरको मधु पुष्करिणी कहते हैं ।

मुकुन्द सरकार ठाकुर

चैतन्यशाखाके ही नरहरि सरकार ठाकुरके ज्येष्ठ भ्राता थे । इनके पुत्रका नाम रघुनन्दन था । महाप्रभुजीकी आज्ञासे मुकुन्द

ठाकुरने विवाह किया था । ये गौड़देशके बादशाह हुसैनशाहके चिकित्सक थे । एक दिन ये बादशाहके साथ उच्च अट्टालिका पर बैठे थे । राजसेवकको मोरपुच्छके पंखेसे हवा करते देख, भावमें विभोर होकर मूर्च्छित होकर अट्टालिकासे नीचे गिर पड़े । बादशाहके पूछने पर इन्होंने बहाना बनाकर बतलाया कि इन्हें मिर्गीका रोग है । किन्तु बुद्धिमान राजा इनके अन्तर्भावोंको समझ इनके प्रति और भी श्रद्धालु हो उठा । तदनन्तर राजवैद्यका पद छोड़कर महाप्रभुजीके साथ नवद्वीपमें भक्ति शास्त्रका अनुशीलन करने लगे ।

जगन्नाथपुरीमें एक दिन श्रीमन्महाप्रभुने इनसे यूंही पूछा कि रघुनन्दन तुम्हारा पुत्र है या तुम उसके पुत्र हो । इन्होंने बड़ी नम्रतासे कहा कि- 'रघुनन्दन मेरा पिता है ।' महाप्रभुजीने पूछा 'क्यों?' इन्होंने उत्तर दिया-'रघुनन्दनसे मुझे आपके प्रति प्रीति एवं भगवद्-भक्ति प्राप्त हुई है ।' महाप्रभु एवं इनके समस्त भक्त ऐसा सुनकर बड़े प्रसन्न हुए । श्रीमुकुन्द ठाकुरके पुत्रका लालन-पालन नरहरि सरकारने किया । इन्होंने अपनी प्रेममयी भक्तिसे अपने शिशुकालमें अपने कुलदेवता गोपीनाथजीको खीरका लड्डू खिलाया था । इनके प्रभावसे मधुपुष्करिणीके तट पर स्थित एक कदम्बके वृक्षमें प्रतिदिन केवल दो कदम्बके फूल खिलते थे, जिससे वे श्रीगोपीनाथजीकी सेवा करते थे ।

एकबार श्रीअभिराम गोस्वामीने श्रीखण्डमें पहुँचकर रघुनन्दन ठाकुरको प्रणाम किया । अभिराम गोस्वामी जिसको प्रणाम करते वह व्यक्ति मर जाता था । यहाँ तक कि इनके प्रणामको श्रीशालिग्राम भी सहन न कर विदीर्ण हो जाते थे । किन्तु रघुनन्दनने इनके प्रणामको ग्रहणकर अपने बाहुपाशमें इनको बाँध लिया और उन्हें बड़डांगा भजनस्थलीके कीर्त्तनमें ले गये, नृत्यके आवेशमें श्रीनरहरि सरकारके पैरका नूपुर टूटकर दो कोस दूर 'आकाईहाट' नामक स्थान पर उनके शिष्य कृष्णदासके घरमें गिरा । आज भी आकाई-

हाटमें वह नूपुर कुण्डके रूपमें प्रसिद्ध है । श्रीसंकीर्त्तनके जनक श्रीमन्महाप्रभुजीने इनको अपना पुत्र माना था तथा उनको संकीर्त्तन यज्ञके अधिवासके दिन माल्यचन्दनादि देने और पूर्णाहुतिके दिन दधि हरिद्रा भाण्ड फोड़नेका अधिकारी बनाया था ।

चिरंजीवसेन

पूर्वलीलाकी चन्द्रिका या रूपकण्ठी सखी है ये कुमारनगरसे श्रीखण्डमें आकर रहने लगे थे । नरहरि सरकारके शिष्य थे । इनके ही पुत्र प्रसिद्ध पद-रचयिता रामचन्द्र कविराज और गोविन्द कविराज थे ।

दामोदर कविराज

इनको दामोदर सेन भी कहते हैं । ये सुविख्यात कवि और पण्डित थे । इनकी कन्या श्रीसुनन्दाका विवाह श्रीचिरंजीवसेनसे हुआ था ।

रामचन्द्र कविराज

ये श्रीनिवासाचार्यके शिष्य थे । इनके पिताका नाम श्रीचिरंजीव सेन व माताका नाम सुनन्दा देवी था । ये कृष्णलीलाके करुणा मञ्जरी हैं । इनके नाना श्रीदामोदर कविराज श्रीनरहरि सरकार ठाकुरके शिष्य थे । ये अपने पिताके अप्रकट होने पर अपने ननिहाल कुमारनगरमें वास करने लगे । बादमें मुर्शिदाबाद जिलेके अन्तर्गत तेलिया बुधुरी ग्राममें रहते थे । इनके विवाहके समय इनको विवाह वेशमें देखकर श्रीनिवासप्रभुने कहा–"अपने पैसेसे मायाको खरीद कर स्वयं गलेमें फांसी लगाकर मनुष्य अपनेको कृतार्थ समझते हैं ।" यह बात सुनकर दूसरे दिन ही रामचन्द्र गृह त्यागकर श्रीनिवास प्रभुके शिष्य हो गये । इनकी गुरुभक्ति अतुलनीय है । ये विष्णुपुरके राजा वीरहम्बीरके शिक्षागुरु थे । श्रीजीव

गोस्वामीने इनके कवित्वसे प्रभावित होकर इनको कविराजकी उपाधि प्रदान की । ये अष्टकवियोंमें एक है । इनके प्रमुख ग्रन्थ स्मरण-चमत्कार, स्मरण-दर्पण, सिद्धान्तचन्द्रिका एवं श्रीनिवास आचार्य प्रभुका जीवन चरित्र है । वृन्दावनमें श्रीनिवास आचार्यके अन्तर्धान होने पर उनके श्रीअंगकी इन्होंने रक्षा की । विवाह होने पर भी ये कभी संसार आश्रममें नहीं गये । इनकी पत्नीका नाम रत्नमाला था। इनके भाई गोविन्द कविराजके वंशधर आज भी वर्तमान है ।

श्रीगोविन्द कविराज

ये श्रीनिवासाचार्यके शिष्य थे, इनकी माता सुनन्दादेवी पिता चिरंजीवसेन तथा ज्येष्ठ भ्राता श्रीरामचन्द्र कविराज थे । इनका जन्म स्थान तेलिया बुधुरि है । इनकी स्त्रीका नाम महामाया देवी तथा पुत्रका नाम दिव्य सिंह था । इनके पिता चिरंजीवसेन परलोकगत होने पर ये अपनी माता व ज्येष्ठ भ्राताके साथ अपने नाना दामोदर कविराजके घर कुमारनगर आ गये । अपने ज्येष्ठ भ्राताके वर वेशमें सज्जित देखकर इनके प्रति श्रीनिवासाचार्यके कुछ कृपापूर्ण वचन सुनकर वे दूसरे ही दिन सदाके लिए श्रीनिवास प्रभुके चरणोंमें आ गये । किन्तु ये पहले शाक्त थें । भजनकी श्रेष्ठता उपलब्धि होने पर भी इन्होंने शक्ति-उपासनाको नहीं छोड़ा । दैवयोगसे ये कठिन रोगग्रस्त हो गये । अपनी मृत्यु निश्चित समझकर इन्होंने रामचन्द्र कविराजसे श्रीनिवास आचार्य प्रभुके चरण-दर्शनके लिए निवेदन किया, इस पर आचार्य बुधुरि ग्राममें आये और इन्होंने इनके मस्तक पर अपने चरणोंको रख दिया । तबसे इनका जीवन ही बदल गया तथा इन्हें नवीन भागवत जीवन लाभ हुआ । तब इनका प्रथम पद कितना मधुर है-

''भजहुँ रे मन श्रीनन्दनन्दन अभय चरणारविन्द रे ।''

तभीसे इन्होंने अपने मनको राधाकृष्ण विषयक पदावलियोंकी

रचना करनेमें लगा दिया । इनकी प्रमुख रचनायें श्रीराम चरित्रगीत, संगीत माधव नाटक, अष्टकालीय एकानन पद आदि प्रमुख है । इनकी असाधारण काव्य प्रतिभासे चमत्कृत होकर श्रीजीव गोस्वामी आदि प्रमुख वैष्णव इनको पत्रादि दिया करते थे । वृन्दावनवासी गोस्वामियोंने मिलकर इनको कविराज एवं कवीन्द्र उपाधिसे गौर-वान्वित किया । ये गौड़ीय वैष्णवके नित्य-स्मरणीय, वन्दनीय एवं अर्चनीय अष्टकवियोंमें-से एक हैं ।

श्रीसुलोचन

ये श्रीचैतन्य महाप्रभुजीके परिकर थे । पूर्वलीलामें ये चन्द्रशेखरा गोपी थे ।

श्रीबलरामदास

श्रीजाह्नवामाताके मन्त्र शिष्य थे तथा नरहरि सरकारके भजन शिष्य थे । खेतुरीके विख्यात उत्सवमें सम्मिलित हुए थे ।

श्रीरतिकान्त ठाकुर

श्रीखण्डवासी मदन ठाकुरके पौत्र दिग्विजयी पण्डित थे । वहाँके प्रसिद्ध श्रीमदनगोपाल विग्रहके ये प्रतिष्ठाता हैं । श्रीरस कल्पवल्लीके प्रणेता श्रीगोपालदास इनके शिष्य थे । ये श्रीगौरशतकके प्रणेता थे ।

श्रीरामगोपालदास

श्रीरामगोपालदास खण्डवासी श्रीरघुनन्दनके वंशमें रतिकान्त ठाकुरके शिष्य हैं । ये 'रसकल्पवल्ली' पदावलीके रचयिता हैं । ये द्वादश कोरकोंमें पूर्ण हैं ।

सप्तग्राम

सप्तग्राम श्रीरघुनाथदास गोस्वामी एवं उद्धारणदत्त ठाकुरका

श्रीपाट है । सप्तग्राम कहनेसे सात ग्रामोंके समूहका बोध होता है। सप्तग्राम, वेशवाटी, शिवपुर, वासुदेवपुर, कृष्णपुर, नित्यानन्दपुर और शंखनगर वर्तमान त्रिवेणी ग्राम भी सप्तग्रामके अन्तर्गत था । यह बहुत ही समृद्ध नगर था । सप्तग्रामके अन्तर्गत कृष्णपुरमें श्रीरघुनाथदास गोस्वामीका, शंखनगरमें श्रीकालीदास लाहिड़ीका, चाँदपुरमें श्रीबलराम आचार्य एवं रघुनाथदासके कुलगुरु श्रीयदुनन्दन आचार्यका निवास स्थान था । उद्धारणदत्त ठाकुरका यथार्थ नाम दिवाकर था । पत्नीके परलोक गमनके बाद २६ वर्षकी आयुमें गृह त्यागकर श्रीनित्यानन्द प्रभुजीके साथ भक्तिधर्मके प्रचारके लिए सर्वत्र भ्रमण करते थे । सप्तग्राममें ही हिरण्यदास एवं गोवर्धनदास नामक दोनों भाई निवास करते थे । ये दोनों बहुत बड़े वैभव-सम्पन्न जमींदार थे । इन गोवर्धनदासके पुत्र ही श्रीरघुनाथदास गोस्वामी हैं । श्रीविष्णुप्रिया देवीके पिता श्रीसनातन मिश्र हिरण्य-गोवर्धनके गुरुदेव थे । नित्यानन्द प्रभु भी सप्तग्राममें पधारे थे ।

सैदाबाद

मुर्शिदाबाद जिलेमें गंगाके किनारे कासिमबाजारसे एक मील पश्चिममें स्थित है । यहाँ श्रीहरिराम आचार्य प्रभुका श्रीपाट है । ये रामचन्द्र कविराजके शिष्य थे । यहीं पर श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुरने भक्ति-शास्त्रका अध्ययन किया था ।

❋❋❋

श्रीनवद्वीपाष्टकम्

(श्रीरूपगोस्वामि-विरचित)

श्रीगौड़देशे सुरदीर्घिकाया-, स्तीरेऽतिरम्ये पुर-पुण्यमय्याः ।
लसन्तमानन्दभरेण नित्यं, तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥१॥

श्रीगौड़देशमें पुण्यतोया भगवती-भागीरथीके सुरम्य तट पर सदा-सर्वदा परमानन्द पूर्वक विराजमान श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥१॥

यस्मै परव्योम वदन्ति केचित्, केचिच्च गोलोक इतीरयन्ति ।
वदन्ति वृन्दावनमेव तज्ज्ञा-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥२॥

जिनको कोई-कोई परव्योम-वैकुण्ठ, कोई-कोई गोलोक एवं तत्त्वज्ञजन श्रीवृन्दावनके रूपमें जानते हैं, उन्हीं श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्य निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥२॥

यः सर्व-दिक्षु स्फुरितैः सुशीतै-, र्नानाद्रुमैः सूपवनैः परीतः ।
श्रीगौर-मध्याह्न-विहार-पात्रै-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥ ३॥

जहाँ चतुर्दिक प्रकाशमान शीतल मन्द एवं सुगन्धित पवन प्रवाहित होता रहता है । जो धाम अपने नाना प्रकारके हरे-भरे पुष्पित वृक्षोंसे सुशोभित रहकर श्रीगौरसुन्दरके मध्याह्न विहारके लिए सुयोग दान करते हैं, उन श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥३॥

श्रीस्वर्णदी यत्र विहार-भूमिः, सुवर्ण-सोपान-निबद्ध-तीरा ।
व्याप्तोर्मिभिर्गौर-वगाह-रूपै-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥४॥

जहाँ भगवती-भागीरथी परमानन्दसे उल्लसित होकर अपनी तरंग-मालाओंसे विहार करती हैं, जिनका तटप्रदेश सुवर्ण-सोपानोंसे परिबद्ध है, उन श्रीनवद्वीप धामका नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥४॥

महान्त्यनन्तानि गृहाणि यत्र, स्फुरन्ति हैमानि मनोहराणि ।
प्रत्यालयं यं श्रयते सदा श्री-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥५॥

जहाँ सुवर्णमय अगणित देदीप्यमान सुन्दर-सुन्दर अट्टालिकाएँ विद्यमान

हैं, जहाँ श्रीलक्ष्मीदेवी प्रत्येक गृहमें अधिष्ठित है, उन श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥५॥

विद्या-दया क्षान्ति-मुखैः समस्तै, सद्भिर्गुणैर्यत्र जनाः प्रपन्ना ः ।

संस्तूयमाना ऋषि-देव-सिद्धै-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥६॥

जहाँकि सभी निवासी विद्या, दया, क्षमा, यज्ञ आदि सर्व सद्‌गुणोंसे विभूषित होते हैं ; ऋषि-महर्षि, देवता और सिद्धगण भी जिनकी स्तुति करते हैं, उन श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्यकाल स्मरण करता हूँ ॥६॥

यस्यान्तरे मिश्र-पुरन्दरस्य, सानन्द-साम्यैकपदं निवासः ।

श्रीगौर-जन्मादिक-लीलयाढ्य-, स्तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥७॥

जिनके मध्यस्थलमें श्रीश्रीगौरसुन्दरकी जन्म-लीला सम्पन्न होती है और जहाँ एक मात्र स्वानन्दलभ्य श्रीजगन्नाथ मिश्रका भवन विद्यमान है, उन श्रीनवद्वीप धामका मैं नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥७॥

गौरो भ्रमन् यत्र हरिः स्वभक्तैः, संकीर्तन-प्रेम-भरेण सर्वम् ।

निमज्जयत्युल्लसदुन्मदाब्धौ, तं श्रीनवद्वीपमहं स्मरामि ॥८॥

जहाँ पर श्रीगौरहरिने भक्त-मण्डलीके साथ भ्रमण करते हुए प्रेममय उच्च संकीर्त्तनके माध्यमसे सबको उन्नतोज्वल भाव-समुद्रमें निमग्न कर दिया था, मैं उन श्रीनवद्वीप धामको नित्य-निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥८॥

एतन्नवद्वीप-विचिन्तनाढ्यं, पद्याष्टकं प्रीतमनाः पठेद् यः ।

श्रीमच्छचीनन्दन—पादपद्मे, सुदुर्लभं प्रेम समाप्नुयात् सः ॥९॥

जो लोग श्रीनवद्वीप धामके सुचिन्तापूर्ण इस पुनीत पद्याष्टकका प्रीतिपूर्वक पाठ करते हैं, वे श्रीशचीनन्दनके चरण-कमलोंमें सुदुर्लभ प्रेमरत्न लाभ करते हैं ॥९॥

॥ इति श्रीमद्‌रूप गोस्वामि-विरचित श्रीनवद्वीपाष्टकम् सम्पूर्ण ॥

श्रीनवद्वीप धामकी महिमा

(श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती कृत)

श्रीनवद्वीप-शतकमूसे गृहीत

श्रुतिश्छान्दोग्याख्या वदति परमं ब्रह्मपुरकं,

स्मृतिर्वैकुण्ठाख्यं वदति किल यद्विष्णुसदनम् ।

सितद्वीपञ्चान्ये विरलरसिकोऽयं व्रजवनं,

नवद्वीपं वन्दे परम-सुखदं तं चिदुदितम् ॥

छान्दोग्य उपनिषद् जिनको 'परब्रह्मपुर' कहते हैं, स्मृतियाँ जिन्हें 'विष्णुसदन-वैकुण्ठ' बतलाती हैं, दूसरे-दूसरे महाजन 'श्वेतद्वीप' के रूपमें जिनका वर्णन करते हैं एवं विरल-रसिक-भक्त जिनका 'श्रीवृन्दावन' के नामसे उल्लेख करते हैं, चिच्छक्ति द्वारा प्रकटित परमसुखद उन श्रीनवद्वीप धामकी मैं वन्दना करता हूँ ॥

कदा नवद्वीप-वनान्तरेष्वहं परिभ्रमन् गौरकिशोरमद्भुतम् ।

मुदा नटन्तं नितरां सपार्षदं परिस्फुरन् वीक्ष्य पतामि मूर्च्छितः ॥

अहो ! मेरा ऐसा कब सौभाग्य उदित होगा जब मैं श्रीनवद्वीप धामके अन्तर्भागमें अर्थात् अन्तर्द्वीपमें परिभ्रमण करते-करते परमाद्भुत श्रीगौरकिशोरको परिकरोंके सहित अतिशय प्रेमसे नृत्य करते हुए देखकर आनन्दसे मूर्च्छित हो जाऊँगा ?

यत्सीमानमपि स्पृशेन्न निगमो दूरात् परं लक्ष्यते

किञ्चिद् गूढ़तया यदेव परमानन्दोत्सवैकावधिः ।

यन्माधुर्य्यकलाप्यवेदि न शिव-स्वायम्भूवाद्यैरहं

तच्छ्रीमन्नवखण्डधामरसदं विन्दामि राधापतेः ॥

वेद जिनकी सीमाको स्पर्श करनेमें भी असमर्थ हैं, केवल दूरसे जिनका निर्देशमात्र करते हैं ; अनिर्व्वचनीय परमानन्द महामहोत्सव अपनी अन्तिम सीमा तक निगूढ़ भावसे जहाँ नित्य विद्यमान रहता है, शिव-स्वयम्भू आदि देवगण जिनकी माधुरीराशिके एक कणको भी अवगत नहीं होते,

उस श्रीराधिका-रमणके प्रेमको सहज ही प्रदान करने वाले श्रीनवद्वीप धामको मैं कब प्राप्त होऊँगा ?

स्वयं-पतित-पत्रकाण्यमृतवत् क्षुधा भक्षयन्
तृषा त्रिदिववन्दिनी-शुचिपयोऽञ्जलीभिः पिवन् ।
कदा मधुर-राधिका-रमण-रास-केलिस्थलीं
विलोक्य रसमग्नधीरधिवसामि गौराटवीम् ॥

अहो ! मेरा ऐसा कब सौभाग्य होगा, जब मैं वृक्षोंसे अपने-आप गिरे हुए पत्तोंको अमृतके समान भक्षण कर अपनी भूख मिटाऊँगा, श्रीसुरधुनीके सुरस, सुशीतल, पुनीत सलीलका पानकर अपनी प्यास बुझाऊँगा और श्रीराधिकारमणके मधुर रासकेलिके पीठका दर्शन कर प्रेमरसमें निमग्न होकर गौराटवी श्रीनवद्वीप-काननमें निवास करूँगा ?

सर्वसाधनहीनोऽपि नवद्वीपैक-संश्रयः ।
यः कोऽपि प्राप्नुयादेव राधाप्रिय-रसोत्सवम् ॥

सर्व प्रकारके साधनोंसे हीन होने पर भी जो कोई व्यक्ति यदि श्रीधाम नवद्वीपका धामापराध-शून्य होकर ऐकान्तिक रूपमें आश्रय ग्रहण करते हैं, वे निश्चय ही श्रीवार्षभानवी रासरासेश्वरी श्रीमतीराधिकाके प्रिय रासोत्सवको प्राप्त होते हैं ।

सा मे न माता स च मे पिता न, स मे न बन्धुः स च मे सखा न ।
स मे न मित्रं स च मे गुरुर्न यो मे न राधावनवासमिच्छेत् ॥

हमारे वे पिता 'पिता' नहीं हैं, वह माता भी 'माता' नहीं हैं, वह बन्धु भी 'बन्धु' नहीं है, वह सखा भी 'सखा' नहीं है, वह मित्र (उपकारक) भी 'मित्र' नहीं है और वह गुरु भी 'गुरु' नहीं है, जो हमारे प्रिय 'राधावन' अर्थात् श्रीनवद्वीप-वासके प्रतिकूल हैं ।

आराधितं नववनं व्रजकाननं ते, नाराधितं नववनं व्रजएव दूरे ।
आराधितो द्विजसुतो व्रजनागरस्ते, नाराधितो द्विजसुतो न तवेह कृष्णः॥

यदि तुमने श्रीनववन अर्थात् श्रीनवद्वीपकी आराधना की है,तो तुम्हारी व्रजकानन अर्थात् श्रीवृन्दावनकी आराधना करनी हो गयी और यदि तुमने नवद्वीपकी आराधना नहीं की, तो श्रीव्रजधाम तुमसे बहुत दूर अवस्थित

है ; यदि तुमने जगन्नाथसुत श्रीगौरसुन्दरकी आराधना की है, तो तुमने व्रजनागर श्रीकृष्णकी आराधना कर ली और यदि तुमने मिश्रनन्दनकी आराधना नहीं की, तो इस जगत्में तुम्हारी गोपेन्द्रनन्दनकी आराधना भी नहीं हुई ।

सकलविभव-सारं सर्वधर्म्मैकसारं सकल-भजन-सारं सकल-सिद्धयैक-सारम्।
सकल-महिमसारं वस्तुखण्डे नवाख्ये सकल-मधुरिमाम्भोराशि-सारं विहारः॥

इस नौ खण्डमय श्रीनवद्वीप धाममें विचरण करना ही समस्त अखिल वैभवोंका सार, सर्वधर्मोंका एकमात्र सार, समस्त भजनका सार, समस्त सिद्धियोंका एकमात्र सार, समस्त महिमाओंका सार तथा सर्वप्रकारके माधुर्य्य-समुद्रका एकमात्र सार है ।

संसारसिन्धु-तरणे हृदयं यदि स्यात् संकीर्त्तनामृतरसे रमते मनश्चेत् ।
प्रेमाम्बुधौ विहरणे यदि चित्तवृत्ति र्मायापुराख्यनगरे वसतिं कुरुस्व ॥

यदि तुम्हारे हृदयमें संसार समुद्रको उत्तीर्ण होनेकी अभिलाषा है, यदि संकीर्त्तनामृत रसमाधुर्य्य आस्वादनकी लालसा है और यदि प्रेम-समुद्रमें विहार करनेकी तीव्र उत्कण्ठा है, तब श्रीमायापुर नामक नगरमें अवश्य निवास करें ।

कदा नवद्वीपवनान्तरेष्वहं परिभ्रमन् सैकतपूर्णचत्वरे ।
'हरीति रामेति हरीति कीर्त्तयन् विलोक्य गौरं प्रपतामि विह्वलः ॥

अहो ! मेरा ऐसा कब सौभाग्य उदित होगा, जब मैं श्रीनवद्वीप-काननके सुरम्य वनमें धवल सैकतोंसे पूर्ण पथमें 'हरि' 'कृष्ण' 'राम' इत्यादि नामोंका मधुर स्वरसे कीर्त्तन करते हुए इतस्ततः भ्रमण करता हुआ श्रीगौरचन्द्रका दर्शन कर प्रेमसे विह्वल होकर भूमिमें निपतित हो जाऊँगा ।

समाप्त

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति द्वारा प्रकाशित
शुद्ध भक्ति-ग्रन्थ

हिन्दी-संस्करण

१ जैव-धर्म(जीवका धर्म)
२ श्रीचैतन्य-शिक्षामृत
३ श्रीचैतन्यमहाप्रभुके स्वयं-भगवत्ता
४ प्रतिपादक कतिपय शास्त्रीय-प्रमाण
५ श्रीचैतन्यमहाप्रभुकी शिक्षा
६ अर्चन-दीपिका
७ भक्तितत्त्व-विवेक
८ श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छ
९ श्रीवैष्णव सिद्धान्तमा
१० श्रीउपदेशामृत
११ श्रीशिक्षाष्टक
१२ श्रीमनःशिक्षा
१३ श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा एवं श्रीगौड़मण्डलके प्रमुख गौड़ीय-वैष्णव-तीर्थ-समूह

बंगला एवं अंग्रेजी-संस्करण

१ जैवधर्म
२ श्रीमद्भगवद्गीता
३ श्रीदामोदराष्टकम्
४ मायावादेर जीवनी
५ सांख्य-वाणी
६ शरणागति
७ श्रीमन्महाप्रभुर शिक्षा
८ श्रीलभक्तिविनोद प्रवन्धावली
९ प्रेम-प्रदीप
१० श्रीनवद्वीप-धाम माहात्म्य
११ श्रीनवद्वीप-धाम परिक्रमा
१२ विजनग्राम ओ सन्यासी
१३ श्रीनवद्वीप-भावतरंग
१४ श्रीकृष्णप्रेम तरंगिणी
१५ सत्क्रियासार-दीपिका
१६ तत्त्व-मुक्तावली
१७ श्रीमनःशिक्षा
१८ सिद्धान-रत्नम्
१९ श्रीनवद्वीप शतकम्
२० श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ
२१ श्रीरूपानुग भजन-सम्पद
२२ अर्चन-दीपिका
२३ श्रीगौड़ीय पत्रिका (मासि
२४ श्रीहरिनाम-चिन्तामणि
२५ श्रीउपदेशामृतम्
26 Shri Chaitanya Mal His life and precept
27 The Vedanta (Its M &Ontology)
28 Vaishnavism (Real & Apparent)
29 Rai Ramananda
30 Nam Bhajan
31 The Bhagbat (Its P Its Ethics & Its